चन्द्रकान्ता
सन्तति ।
दूसरा हिस्सा ।
बाबू देवकीनन्दन खत्री
रचित ।
मूल्य ।।) आ.
डाक खर्च -) आ.

पुस्तक मिलने का पता

मैनेजर—लहरी प्रेस,

बनारस सिटी।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति ।

दूसरा हिस्सा ।

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित ।

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित ।
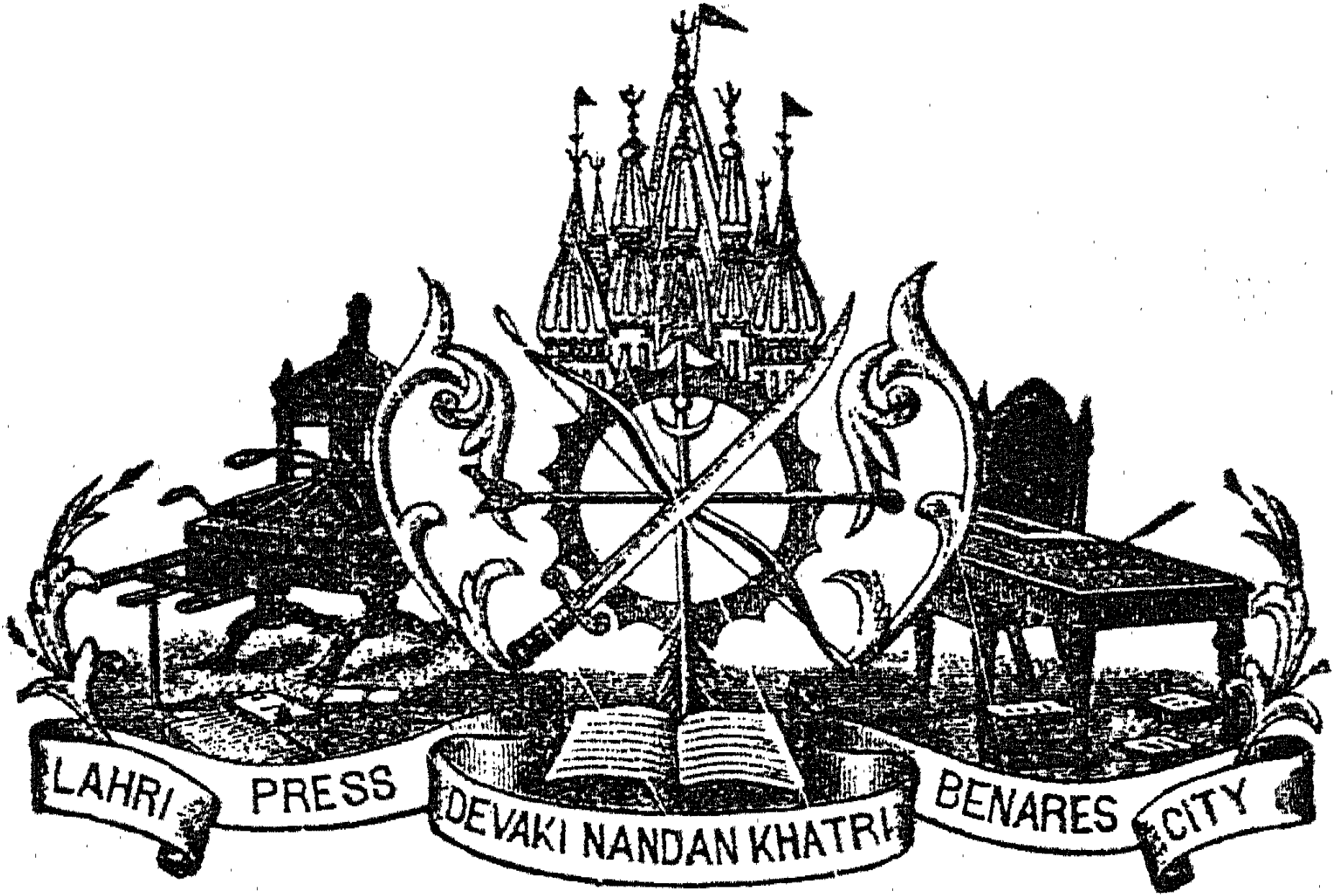
(Fifth Edition.)

PRINTED BY

PANNA LAL ROY,—*Manager.*

AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY.

पांचवीं बार १०००]   १९१६.   [मूल्य ॥) आ०

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर—लहरी प्रेस,

बनारस सिटी।
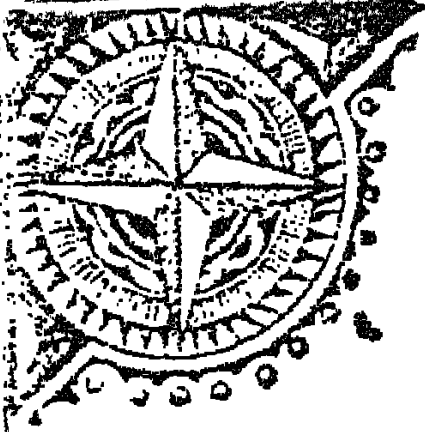
चन्द्रकान्ता सन्तति ।

दूसरा हिस्सा ।

पहिला बयान ।

घण्टा भर दिन बाकी था जब किशोरी अपने उसी बाग में जिसका कुछ हाल ऊपर लिख चुके हैं, कमरे की छत पर सात आठ सखियों के बीच में उदास तकिये के सहारे बैठी आसमान की तरफ देख रही है। सुगन्धित हवा के झोंके उसे खुश किया चाहते हैं मगर वह अपने धुन में ऐसी उलझी हुई है कि दीन दुनिया की खबर नहीं है। आसमान पर पश्चिम तरफ लालिमा छाई हुई है, श्याम रङ्ग के बादल ऊपर की तरफ उठ रहे हैं, जिसमें तरह तरह की सूरतें बात की बात में पैदा होतीं और देखते देखते बदल कर मिट जाती हैं, अभी यह बादल का टुकड़ा खण्ड पर्वत की तरह दिखाई देता

था, अभी उसके ऊपर शेर की सूरत नजर आती है, लीजिये शेर की गर्दन इतनी बढ़ी कि साफ ऊँट की शक्ल बन गया और लमहेभर में हाथी का रूप धर लांबी सूंड़ दिखाने लगा, उसीके पीछे हाथ में बन्दूक लिये एक सिपाही की शक्ल नजर आई लेकिन वह बन्दूक छोड़ने के पहिले खुद ही धूआं होकर फैल गया। ये बादलों की ऐयारी इस समय न मालूम कितने आदमी देख देख कर खुश होते होंगे मगर किशोरी के दिल की धड़कन इसे देख देख कर बढ़ती ही जाती है, कभी तो उसका सर पहाड़ सा भारी हो जाता है, कभी माधवी बाघिन की सूरत ध्यान में आती है,कभी बाकरअली शुतुर बेमोहार की बदमाशी याद आती है,कभी हाथ में बन्दूक लिये हरदम जान लेनेको तैयार बाप की याद तड़पा देती है ॥

कमला को गए कई दिन हुए आज तक वह लौट कर न आई ! इस सोच ने किशोरी को और भी दुःखी कर दिया, धीरे धीरे शाम हो गई सखियां सब पास बैठी ही रहीं मगर सिवाय ठंढी ठंढी सांस लेने के किशोरी ने किसीसे बातचीत न की और वे सब भी दम न मार सकीं ॥

कुछ रात जाते जाते बादल अच्छी तरह से घिर आया आंधी भी चलने लगी,किशोरी छत पर से नीचे उतर आई और कमरे के अन्दर मसहरी पर जा लेटी, थोड़ी ही देर के बाद कमरे के सदर दर्वाजे का पर्दा

हटा और कमला अपनी असली सूरत से आती हुई दिखाई पड़ी॥

कमला के न आने ही से किशोरी उदास हो रही थी, उसे देखतेही पलङ्ग पर से उठी और आगे बढ़ कमला को गले से लगा लिया और गद्दी पर अपने पास ला बैठाया, कुशल मङ्गल पूछने बाद बातचीत होने लगी:-

किशोरी०। कहो बहिन! तुमने इतने दिनों में क्या क्या काम किया? उनसे मुलाकात भी हुई या नहीं?

कमला०। मुलाकात क्यों न होती आखिर मैं गई ही थी किस लिये॥

किशोरी०। कुछ मेरा हाल चाल भी पूछते थे?

कमला०। तुम्हारे लिये तो जान देने को तैयार हैं क्या हाल चाल भी न पूछेंगे? बस अब दो ही एक दिन में तुमसे मुलाकात हुआ चाहती है॥

किशोरी०। (खुश होकर) हां तुम्हें मेरी ही कसम मुझसे झूठ न बोलना॥

कमला०। क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं तुमसे झूठ बोलूँगी॥

किशोरी०। नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं समझती हूं, इस खयाल से कहती हूं कि कहीं दिल्लगी न सूझी हो॥

कमला०। ऐसा कभी मत सोचना॥

किशोरी०। खैर यह कहो माधवी के कैद से उन्हें छुट्टी मिली या नहीं अगर मिली तो क्योंकर मिली?

कमला०। इन्द्रजीतसिंहको माधवीने उसी पहाड़ी

के बीच वाले मकान में रक्खा था जिसमें पारसाल मुझे और तुम्हें दोनों आंख में पट्टी बांध कर ले गई थी ॥

किशोरी० । बड़े बेढब ठिकाने छिपा रक्खा था !!

कमला० । मगर वहां भी उनके ऐयार लोग पहुंच ही गए ॥

किशोरी० । भला वे लोग क्यों न पहुंचेंगे, हां तब क्या हुआ ?

कमला० । (किशोरी की सखियों और लौंडियों की तरफ देख कर) तुम लोग जाओ अपना २ काम करो ॥

किशोरी० । हां अभी कोई काम नहीं है फिर बुलावेंगे तो आना ॥

सखियों और लौंडियों के चले जाने पर कमला ने देर तक बातचीत करने के बाद कहा :—

माधवी का और अग्निदत्त दीवान का हाल भी चालाकी से इन्द्रजीतसिंह ने जान लिया, आज कल उनके कई ऐयार वहां पहुंचे हुए हैं ताज्जुब नहीं कि दस पांच दिन में वे लोग उस राज्य ही को गारत कर डालें ॥

किशोरी० । तुम तो कहती हो इन्द्रजीतसिंह वहां से छूट गए ॥

कमला० । हां इन्द्रजीतसिंह तो वहां से छूट गए मगर उनके ऐयारों ने अभी माधवी का पीछा नहीं छोड़ा, इन्द्रजीतसिंह के छूटने का बन्दोबस्त तो उनके ऐयारों ही ने किया था मगर आखिर में मेरे ही हाथ से

उन्हें छुट्टी मिली, मैं उन्हें चुनार पहुंचा कर तब यहां आई हूं और जो कुछ मेरी जुबानी उन्होंने तुम्हें कहला भेजा है उसे कहना और उनकी बात मानना ही मुनासिब समझती हूं॥

किशोरी०। उन्होंने क्या कहा है?

कमला०। यों तो वे मेरे सामने बहुत कुछ बक गए मगर असल मतलब उनका यही है कि तुम चुपचाप चुनार उनके पास बहुत जल्द पहुंच जाओ॥

किशोरी०। (देर तक सोच कर) मैं तो अभी चुनार जाने को तैयार हूं मगर इसमें बड़ी हँसाई होगी॥

कमला०। अगर तुम हँसाई का खयाल करोगी तो बस हो चुका क्योंकि तुम्हारे मां बाप इन्द्रजीतसिंह के पूरे दुश्मन हो रहे हैं, जो तुम चाहती हो उसे वे खुशी से कभी मंजूर न करेंगे आखिर जब तुम अपने मन की करोगी तभी लोग हँसेंगे, ऐसा ही है तो इन्द्रजीतसिंह का ध्यान दिल से दूर करो या बदनामी कबूल करो॥

किशोरी०। तुम सच कहती हो एक दिन बदनामी होनी ही है क्योंकि इन्द्रजीतसिंह को मैं किसी तरह नहीं भूल सकती, आखिर तुम्हारी क्या राय है?

कमला०। सखी! मैं तो यही कहूंगी कि अगर तुम इन्द्रजीतसिंह को नहीं भूल सकतीं तो उनसे मिलने के लिये इससे बढ़ कर कोई दूसरा मौका तुम्हें न मिलेगा, चुनार में जाकर बैठ रहोगी तो कोई भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेगा, आज कौन ऐसा है जो महाराज

बीरेन्द्रसिंह से मुकाबला करने का साहस रखता हो ? तुम्हारे पिता अगर ऐसा करते हैं तो यह उनकी भूल है, आज सुरेन्द्रसिंह के खान्दान का सितारा बड़ी तेजी से आसमान पर चमक रहा है उनसे दुश्मनी का दावा करना अपने को मिट्टी में मिला देना है ॥

किशोरी० । ठीक है मगर मेरे इस तरह वहां चले जाने से इन्द्रजीतसिंह के बड़े लोग कब खुश होंगे ॥

कमला० । नहीं नहीं, ऐसा मत सोचो क्योंकि तुम्हारे और इन्द्रजीतसिंह के मुहब्बत का हाल वहां किसी से छिपा नहीं है सभी जानते हैं कि इन्द्रजीतसिंह तुम्हारे बिना जी नहीं सकते, फिर उन लोगों को इन्द्र-जीतसिंह की कितनी मुहब्बत है, यह तुम खुद जानती हो ऐसी दशा में वे लोग तुम्हारे जाने से कब नाखुश हो सकते हैं ? दूसरे दुश्मन की लड़की अपने घर में आ जाने से वे लोग अपनी जीत समझते हैं, मुझे महारानी चन्द्रकान्ता ने खुद कहा था कि जिस तरह बने तुम समझा बुझाकर किशोरी को ले आओ बल्कि उन्होंने अपने खास सवारी का रथ और कई लौंडी गुलाम मेरे साथ भेजे हैं ॥

किशोरी० । (चौंक कर) क्या तुम उन लोगों को अपने साथ लाई हो ?

कमला० । जी हां, जब चन्द्रकान्ता की इतनी मुहब्बत तुम पर देखी तभी तो मैं भी वहां चलने के लिये राय देती हूं ॥

किशोरी०। अगर ऐसा है तो मैं किसी तरह नहीं रुक सकती अभी तुम्हारे साथ चली चलूँगी, मगर देखो सखी तुम्हें बराबर मेरे साथ रहना पड़ेगा॥

कम०। भला मैं कभी तुम्हारा साथ छोड़ सकती हूं॥

किशोरी०। अच्छा तो यहां किसी से कुछ कहना सुनना तो है नहीं?

कमला०। किसी से कुछ कहने की जरूरत नहीं बल्कि तुम्हारी इन सखियों और लौंडियों को भी कुछ पता न लगना चाहिये जिनको मैंने इस समय यहां से हटा दिया है॥

किशोरी०। वह रथ कहां खड़ा है?

कमला०। इसी बगल वाली आम की बाड़ी में रथ और चुनार से आये हुए लौंडी गुलाम सब मौजूद हैं॥

किशोरी०। खैर चलो, जो होगा देखा जायगा राम मालिक है॥

किशोरी को साथ ले कमला चुपके से कमरे के बाहर निकली और पेड़ों में छिपी हुई बाग से निकल बहुत जल्द उस आम की बाड़ी में पहुंची जिसमें रथ और लौंडी गुलामों के मौजूद रहने का पता दिया था। वहां किशोरी ने कई लौंडी गुलामों को और उस रथ को भी मौजूद पाया जिसमें बहुत तेज चलने वाले ऊँचे काले रङ्ग के नागौरी बैलों की जोड़ी जुती हुई थी, किशोरी और कमला दोनों सवार हुईं और रथ तेजी के साथ रवाना हुआ॥

इधर घण्टे भर बीत जाने पर भी जब किशोरी ने अपनी सखियों और लौंडियों को आवाज न दी तब वे लाचार होकर बिना बुलाये उस कमरे में पहुंचीं जिसमें कमला और किशोरी को छोड़ गई थीं, मगर वहां दोनों में से किसी को भी मौजूद न पाया, घबड़ा कर इधर उधर ढूँढने लगीं, कहीं पता न पाया तमाम बाग छान डाला किसी की सूरत नजर न पड़ी, सभों में खलबली मच गई मगर क्या हो सकता था ?

आधी रात तक कोलाहल मचा रहा उसी समय कमला भी वहां आ मौजूद हुई, सभों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया और पूछा, "हमारी किशोरी कहां है ?"

कमला० । यह क्या मामला है जो तुम लोग इस तरह घबड़ा रही हो क्या किशोरी कहीं चली गई ?

एक०। चली नहीं गई तो कहां है ? तुम उसे कहां छोड़ आई ?

कमला० । क्या किशोरी को मैं अपने साथ ले गई थी जो मुझसे पूछती हो ? वह कब से गायब है ?

एक०। पहर भर से तो हमलोग ढूँढ रहे हैं, तुम दोनों इसी कमरे में बातें कर रही थीं हमलोगों को हट जाने के लिये कहा, फिर न मालूम क्या हुआ कहां चली गई ?

कमला० । बस अब मैं समझ गई, तुम लोगों ने धोखा खाया, मैं तो अभी चली ही आती हूं, हाय ! यह क्या हुआ ! बेशक दुश्मन अपना काम कर गए और हमलोगों को आफत में डाल गए, हाय अब मैं क्या

करूँ! कहां जाऊँ किससे पूछूँ कि प्यारी किशोरी को कौन ले गया !!

दूसरा बयान।

किशोरी खुशी खुशी रथ पर सवार हुई और रथ तेजी से जाने लगा। वह कमला भी उसी के साथ थी, इन्द्रजीतसिंह के विषय में तरह तरह की बातें कह कर उसका दिल बहलाती जाती थी, किशोरी भी बड़े प्रेम से उन बातों के सुनने में लीन हो रही थी, कभी सोचती कि जब इन्द्रजीतसिंह के सामने जाऊँगी तो किस तरह खड़ी होऊँगी, क्या कहूंगी? अगर वे पूछ बैठेंगे कि तुम्हें किसने बुलाया तो क्या जवाब दूँगी? नहीं नहीं, वह ऐसा कभी न पूछेंगे क्योंकि वह मुझपर प्रेम रखते हैं, मगर उनके घर की औरतें मुझे देख अपने दिल में क्या कहेंगी! वे जरूर समझेंगी कि किशोरी बड़ी ही बेहया औरत है, इसे अपनी इज्जत और प्रतिष्ठा का कुछ भी ध्यान नहीं है, हाय! उस समय तो मेरी बड़ी ही दुर्गती होगी, जिन्दगी जंजाल हो जायगी, किसी को मुँह न दिखा सकूँगी॥

ऐसी ऐसी बातों को सोचती, कभी खुश होती कभी इस तरह बेसमझे बूझे चल पड़ने पर अफसोस करती थी। कृष्ण पक्ष की सप्तमी थी अन्धेरे ही में रथ के बैल बराबर दौड़े जाते थे। चारों तरफ से घेर कर चलनेवाले

सवारों के घोड़ों के टापों की बढ़ती हुई आवाज दूर दूर तक फैल रही थी । किशोरी ने पूछा,क्यों कमला ! क्या लौंडियां भी घोड़ों ही पर सवार साथ साथ चल रही हैं ? इसके जवाब में कमला "जी हां" कह कर चुप हो रही ॥

अब रास्ता खराब और पथरीला आने लगा,पहिये के नीचे पत्थरके छोटे छोटे ढोंकों के पड़नेसे रथ उछलने लगा जिसकी धमक से किशोरी के नाजुक बदन में दर्द पैदा हुआ ॥

किशोरी० । आेफ आेह, अब तो बड़ी तकलीफ होने लगी ॥

कमला० । थोड़ी दूर तक रास्ता खराब है आगे हमलोग अच्छी सड़क पर जा पहुंचेंगे ॥

किशोरी० । मालूम होता है हमलोग सीधी और साफ सड़क छोड़ दूसरे ही तरफ से जा रहे हैं ॥

कमला० । जी नहीं ॥

किशोरी० । नहीं क्या जरूर ऐसा ही है ॥

कमला० । अगर ऐसा ही है तो क्या बुरा हुआ ? हमलोगों की खोज में जो निकलेंगे वे पा तो न सकेंगे ॥

किशोरी० । (कुछ सोच कर) खैर जो किया अच्छा किया, रथ का पर्दा तो उठादो जरा हवा लगे और इधर उधर की कैफियत देखने में आवे रात का तो समय है ॥

लाचार होकर कमला ने रथ का पर्दा उठा दिया

श्रौर किशोरी ताज्जुब भरी निगाहों से दोनों तरफ देखने लगी ॥

अभी तक तो रात अन्धेरी थी, मगर अब विधाता ने किशोरी को यह जताने के लिये कि देख तू किस बला में फँसी हुई है, तेरे रथ को चारों तरफ से घेर कर चलने वाले सवार कौन हैं, तू किस राह से जा रही है, यह पहाड़ी जगह भयानक है! आसमान पर माहताबी जलाई, चन्द्रमा निकल आया श्रौर धीरे धीरे ऊँचा होने लगा जिसकी रोशनी में किशोरी ने अपनी बदकिस्मती के कुल सामान देख लिये श्रौर एकदम चौंक उठी, चारों तरफ की भयानक पहाड़ी श्रौर जङ्गल ने उसका कलेजा दहला दिया, उसने उन सवारों की तरफ अच्छी तरह देखा जो रथ को घेरे हुए साथ जा रहे थे। वह बखूबी समझ गई कि इन सवारों में, जैसा कि कहा गया था, कोई भी श्रौरत नहीं है सब मर्द हैं। उसे निश्चय हो गया कि मैं आफत में फँस गई श्रौर घबड़ाहट में नीचे लिखे कई शब्द उसकी ज़ुबान से निकल पड़े:—

चुनार तो पूरब है मैं दक्खिन तरफ क्यों जा रही हूं! इन सवारों में तो एक भी लौंडी नजर नहीं आती! बेशक मुझे धोखा दिया गया! मैं निश्चय कह सकती हूं कि मेरी प्यारी कमला कोई दूसरी है! अफसोस!!

रथ में बैठी हुई कमला किशोरी के मुंह से इन बातों को सुन कर होशियार हो गई श्रौर झट रथ के नीचे कूद पड़ी, साथही बहलवान ने भी बैलों को रोका

श्रौर सवारों ने बहुत पास आ कर रथ को घेर लिया ॥

कमला ने चिल्ला कर कुछ कहा जिसे किशोरी बिल्-कुल न समझ सकी, हां एक सवार घोड़े से नीचे उतर पड़ा श्रौर कमला उसी घोड़े पर सवार हो तेजी के साथ पीछे की तरफ लौट गई ॥

अब किशोरी को अपने धोखा खाने श्रौर आफत में फँस जाने का पूरा विश्वास होगया श्रौर वह एकदम चिल्ला कर बेहोश होगई ॥

तीसरा बयान ।

सुबह का सुहावना समय भी बड़ाही मजेदार होता है,जबर्दस्त भी परले सिरे का है,क्या मजाल कि इसकी अमलदारी में कोई धूम तो मचावे। इसके आनेकी खबर दो घण्टे पहिले ही से हो जाती है, वह आसमान के जगमगाते हुए तारे कुछ बड़ी ही बेचैनी श्रौर उदासी के साथ हसरत भरी निगाहों से जमीन की तरफ देख रहे हैं, जिनकी सूरत श्रौर चलाचली की बेचैनी देख बागों की सुन्दर कलियों ने भी मुस्कुराना शुरू कर दिया, अगर यही हालत रही तो सुबह होते होते तक खिलखिला कर हँस पड़ेंगी ॥

लीजिये अब दूसरा ही रङ्ग बदला। प्रकृति की न मालूम किस ताकत ने आसमान की स्याही को धो डाला श्रौर उसकी हुकूमत की रात बीतते देख उदास

तारों को भी बिदा होने का हुक्म सुना दिया। इधर बेचैन तारों की घबड़ाहट देख, अपने हुस्न और जमाल पर भूली हुई खिलखिला कर हँसने वाली कलियों को सुबह की ठंढी ठंढी हवा ने खूब आड़े हाथों लिया और मारे थपेड़ों के उनके सब बनाव को बिगाड़ना शुरू कर दिया जो दो घण्टे पहिले प्रकृति की किसी लौंडी ने दुरुस्त कर दिया था॥

मोतियों से ज्यादे आबदार ओस की बूंदों को बिगड़ते और हँसती हुई कलियों का शृंगार मिटते देख, उन की तरफदार खुशबू से न रहा गया, झट फूलों से अलग हो सुबह की ठण्ढी हवा से उलझ पड़ी और इधर उधर फैल धूम मचाना शुरू कर दिया। अपनी फरियाद सुनाने के लिये उन नौजवानों के दिमागों में घुस घुस कर उठाने की फिक्र करने लगी जो रात भर जाग जगा कर इस समय खूबसूरत पलङ्गड़ियों पर सुस्त पड़ रहे थे। जब उन्होंने कुछ न सुना और करवट बदल कर रह गये तो मालियों को जा घेरा, वे झट उठ बैठे और कमर कस उस जगह पहुंचे जहां फूलों और उमङ्ग भरे हवा के झपेटों से कहा सुनी हो रही थी॥

कम्बख़्त छोटे लोगों को यह दिमाग कहां कि ऐसों का फैसला करें, फूलों को तोड़ २ चँगेर भरने लगे, चलो छुट्टी हुई, "रहे बांस न बाजे बांसुरी" क्या अच्छा झगड़ा मिटाया है। इसके बदले में वे बड़े २ दरख़्त खुश हो हवा की मदद से झुक झुककर मालियों को सलाम

करने लगे जिनकी टहनियों में एक फूल भी दिखाई नहीं देता था वे क्यों न ऐसा करें? उनमें क्या था जो दूसरों की महक लेते, अपनी सूरत सभी को भाती है और अपना सा होते देख सभी खुश होते हैं॥

लीजिये उन परीजमालों ने भी पलङ्ग का पीछा छोड़ा और उठतेही आईने के मुकाबिल हो बैठीं जिनके बनाव को चाहने वालों ने रात भर में बिथोर कर रख दिया था, झटपट अपनी सम्बुली जुल्फों को सुलझा, माहतावी चेहरे को गुलाबजल से साफ कर, अलबेली चाल से अठखेलियां करतीं, चम्पई दुपट्टा सँभालतीं रविशों पर घूमने और फूलों के मुकाबिल में रुक रुक कर पूछने लगी कि कहिये आप अच्छे या हम? जब जवाब न पाया हाथ बढ़ा तोड़ लिया और बालियों में झुमकों की जगह रख आगे बढ़ीं। गुलाब की पटरी तक पहुंची ही थीं कि कांटों ने आचल पकड़ा और इशारे से कहा, जरा ठहर जाइये आपके इस तरह लापरवाह जाने से उलझन होती है और नहीं तो चार आंखें ही करते और आंसू पोछते जाइये॥

जाने दीजिये ये सब घमण्डी हैं, हमें तो कुछ उन लोगों की कुलबुलाहट भली मालूम होती है जो सुबह होने के दो घण्टे पहिले ही उठ, हाथ मुंह धो जरूरी कामों से छुट्टी पा बगल में धोती दबा गङ्गाजी की तरफ लपके जाते हैं और वहां पहुंच स्नान कर भस्म या चन्दन लगा पटड़ों पर बैठ सन्ध्या करते करतेसुबह के

सोहावने समय का आनन्द पतितपावनी श्री गङ्गाजी की पाप नाशिनी तरङ्गों से ले रहे हैं, इधर गुप्ती में घुसी हुई उँगलियों ने प्रेमानन्द में मग्न मनराज की आज्ञा से गिर्जापति का नाम ले एक दाना पीछे हटाया और उधर तरनतारनी भगवती जान्हवी की लहरें तलवों ही से छू छू कर दसबीस जन्म का पाप बहाले गईं। सुगन्धित हवा के झपेटे कहते फिरते हैं, जरा ठहर जाइये अर्घा न उठाइये अभी भगवान सूर्यदेव के दर्शन देर में होंगे, तब तक आप कँवल के फूलों को खोल खोल इस तरह पर श्री गङ्गाजी को चढ़ाइये कि लड़ी टूटने न पावे फिर देखिये देवते उसे खुदबखुद मालाकार बना देते हैं या नहीं !!

ये सब तो सत्पुरुषों के काम हैं जो यहां भी आनन्द ले रहे हैं और वहां भी मजा लूटेंगे, आप जरा मेरे साथ चल कर उन दो दिलजलों की सूरत देखिये जो रात भर जागते और इधर उधर दौड़ते रहते हैं और सुबह के सुहावने समय में एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ चारों तरफ देखते और सोचते हैं कि किधर जायँ क्या करें ! चाहे वे कितने ही बेचैन क्यों न होां मगर पहाड़ों से टक्कर खाए हुए सुबह की ठंढी ठंढी हवा के झोंकों के डपटने और हिला कर जताने से उन छोटे छोटे जङ्गली फूलों के पैाधों की तरफ नजर डाल ही देते हैं जो दूर तक कतार बांधे मस्ती से झूम रहे हैं। उन निवारियों की तरफ ताक ही देते हैं जिन के फूल ओस के बोझ से

तङ्ग हो टहनियां छोड़ पत्थर के ढोकों का सहारा लेते हैं। उन साखू, शीशम के पत्तों की घनघनाहट सुन ही लेते हैं जो दक्खिन से आती हुई सुगन्धित हवा को रोक, रहे सहे जहर को चूस, गुनकारी बना उनतक आने का हुक्म देते हैं॥

इन दो आदमियों में से एक तो लगभग तीस वर्ष की उम्र का बहादुर सिपाही है जो ढाल तलवार के इलावे हाथ में तीर कमान लिये बड़ी मुस्तैदी से खड़ा है मगर दूसरे के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते कि वह कौन, किस दर्जे और इज्जत का आदमी है। इसकी उम्र चाहे पचास से ज्यादा क्यों न हो मगर अभी तक उसके चेहरे पर बल का नाम निशान नहीं है, जवानों की तरह खूबसूरत चेहरा दमक रहा है, बेशकीमती पोशाक और हर्बों की तरफ तो खयाल करने से यही कहने को जी चाहता है कि किसी फौज का सेनापति है, मगर नहीं उसका रोआबदार और गम्भीर चेहरा इशारा करता है कि यह कोई बहुत ही ऊँचे दर्जे का है जो कुछ देर से खड़ा एकटक वायु कोन की तरफ देख रहा है॥

सूर्य की किरणों के साथ ही साथ लाल वर्दी के बेशुमार फौजी आदमी उत्तर से दक्खिन की तरफ जाते हुए दिखाई पड़े जिससे इस बहादुर का चेहरा जोश में आ कर और भी दमक उठा और धीरे से बोला, "लो हमारी फौज भी आ पहुंची॥"

थोड़ी ही देर में वह फौज इस पहाड़ी के नीचे आकर रुक गई जिस पर ये दोनों खड़े थे और एक आदमी पहाड़ के ऊपर चढ़ता हुआ दिखाई दिया जो बहुत जल्द इन दोनों के पास पहुंच सलाम कर खड़ा हो गया॥

इस नये आए हुए आदमी की उम्र भी पचास से कम न होगी, इसके सर और मूछों के बाल चौथाई सुपेद हो चुके थे, कद के साथ ही खूबसूरत चेहरा भी कुछ लांबा था, इसका रङ्ग सिर्फ गोरा ही न था बल्कि अभी तक रगों में दौड़ती हुई खून की सुर्खी इसके गालों पर अच्छी तरह उभड़ रही थी, बड़ी बड़ी स्याह और जोश भरी आंखों में गुलाबी डोरियां बहुत भली मालूम होती थीं। इसकी पोशाक ज्यादे कीमत की या कामदार न थी, मगर कम दाम की भी न थी, उम्दे और मोटे स्याह मखमल की इतनी चुस्त थी कि उसके अङ्गों की सुडौली कपड़े के ऊपर से जाहिर हो रही थी। कमर में सिर्फ एक खंजर और लपेटा हुआ कमन्द दिखाई देता था, बगल में सुर्ख मखमल का एक बटुआ भी लटक रहा था॥

पाठकों को ज्यादे देर तक हैरानी में न डाल हम साफ कह देना ही पसन्द करते है कि यह तेजसिंह हैं, इनके पहिले पहुंचे हुए दोनों आदमियों में एक राजा बीरेन्द्रसिंह और दूसरे उनके छोटे लड़के कुंअर आनन्दसिंह हैं जिनके लिये हमें ऊपर बहुत कुछ फजूल बक जाना पड़ा॥

राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह कुछ देर तक सलाह

करते रहे, इसके बाद तीनों बहादुर पहाड़ी के नीचे उतर अपनी फौज में मिल गये और दिल खुश करने के सिवाय बहादुरों को जोश में भर देने वाले बाजे की आवाज के तालों पर एक साथ कदम रखती हुई वह फौज दक्खिन की तरफ रवाना हुई ॥

चौथा बयान ।

हम ऊपर लिख आये हैं कि माधवी के यहां तीन आदमी अर्थात् दीवान अग्निदत्त, कुबेरसिंह सेनापति और धर्मसिंह कोतवाल मुखिया थे और येही तीनों मिल कर माधवी के राज्य का आनन्द लेते थे ॥

इन तीनों में अग्निदत्त का दिन बहुत मजे में कटता था क्योंकि एक तो वह दीवानी के मर्तबे पर था, दूसरे माधवी ऐसी खूबसूरत औरत उसे मिली थी । कुबेरसिंह और धर्मसिंह इसके दिली दोस्त थे मगर कभी २ जब उन दोनों को माधवी का ध्यान आ जाता तो चित्त की वृत्ति बदल जाती और जी में कहते कि अफसोस! माधवी मुझे न मिली !!

पहिले इन दोनों को यह खबर न थी कि माधवी कैसी है, बहुत कहने सुनने से एक दिन दीवान साहब ने इन दोनों को माधवी के देखने का मौका दिया था, उसी दिन से इन दोनों ही के जी में माधवी की सूरत चुभ गई थी और उसके बारे में बहुत कुछ सोचा करते थे ॥

आज हम आधी रात के समय दीवान अग्निदत्त को अपने सुनसान कमरे में अकेले चारपाई पर लेटे कुछ सोच में डूबे हुए देखते हैं, न मालूम वह क्या सोच रहा है, किस फिक्र में पड़ा है, हां एक दफे उसके मुंह से यह आवाज जरूर निकली, "कुछ समझ में नहीं आता! इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसने अपना दिल खुश करने का सामान वहां पैदा कर लिया! तो मैं बेफिक्र क्यों बैठा रहूं? खैर पहिले अपने दोस्तों से तो सलाह कर लूं।" यह कहने के साथ ही वह चारपाई से उठ बैठा और कमरे में धीरे २ टहलने लगा, आखिर उसने खूँटी से लटकती हुई अपनी तलवार उतार ली और मकान के नीचे उतर आया॥

दर्वाजे पर बहुत से सिपाही पहरा दे रहे थे, दीवान साहब को कहीं जाने के लिये मुस्तैद देख वे लोग भी साथ चलने को तैयार हुए मगर दीवान साहब के मना करने से लाचार हो उसी जगह अपने काम पर उन लोगों को मुस्तैद रहना पड़ा॥

अकेले दीवान साहब वहां से रवाना हुए और बहुत जल्द कुबेरसिंह सेनापति के मकान पर पहुंचे जो इनके यहां से थोड़ीही दूर सुन्दर सजे हुए मकान में बड़े ठाठ के साथ रहता था॥

दीवान साहब को विश्वास था कि इस समय सेनापति अपने ऐश महल में आनन्द से सोता होगा उसे वहां से बुलवाना पड़ेगा, मगर नहीं दर्वाजे पर पहुंचते

ही पहरे वालों से पूछने पर मालूम हुआ कि सेनापति साहब अभी तक अपने कमरे में बैठे हैं बल्कि कोतवाल साहब भी इस समय उन्हीं के पास हैं ॥

अग्निदत्त यह सोचता हुआ ऊपर चढ़ गया कि आधी रात के समय कोतवाल यहां क्यों आया है और ये दोनों इस समय क्या सलाह विचार कर रहे हैं ! कमरे में पहुंचते ही देखा कि सिर्फ वे ही दोनों एक गद्दी पर तकिये के सहारे कुछ लेटे हुए बात कर रहे हैं जो यकायक दीवान साहब को अन्दर पैर रखते देख उठ खड़े हुए और सलाम करने बाद सेनापति साहब ने ताज्जुब में आ कर पूछा:—

"यह आधी रात के समय आप घर से क्यों निकले?"

दीवान०। ऐसाही मौका आ पड़ा, लाचार सलाह करने के लिये आप दोनों से मिलने की जरूरत हुई ॥

कोत०। आइये बैठिये कहिये कुशल तो है ?

दीवान०। हां कुशलही कुशल है मगर कई खुटकों ने जी बेचैन कर रक्खा है ॥

सेनापति०। सो क्या ! कुछ कहिये भी तो ?

दीवान०। हां कहता हूं इसी लिये तो आया हूं, पहिले (कोतवाल की तरफ देख कर) आप तो कहिये इस समय यहां कैसे पहुंचे ?

कोत०। मैं तो बहुत देर से यहां हूं, सेनापति साहब ने एक विचित्र कहानी में ऐसा उलझा रक्खा कि बस क्या कहूं, हां अपना हाल कहिये जी बेचैन हो रहा है ॥

दीवान०। मेरा कोई नया हाल नहीं है केवल माधवी के विषय में कुछ सोचने विचारने आया हूं॥

सेना०। माधवी के विषय में किस नये सोच ने आप को आ घेरा? कुछ तकरार की नौबत तो नहीं आई!!

दीवान०। तकरार की नौबत तो नहीं आई मगर आने चाहती है॥

सेनापति०। सो क्यों?

दीवान०। उसके रङ्गढंग आजकल बेढब नजर आते हैं, तभी तो देखिये इस समय यहां हूं, नहीं तो पहर रात के बाद क्या कोई मेरी सूरत देख सकता था॥

कोत०। इधर तो कई दिन आप अपने मकान ही पर रहे हैं॥

दीवान०। हां, इन दिनों वह अपने महल में कम आती है, उसी गुप्त पहाड़ी में रहती है। कभी कभी आधी रात के बाद आती है और मुझे उसका राह देखना पड़ता है॥

कोत०। वहां उसका जी कैसे लगता है?

दीवान०। यही तो ताज्जुब है! मैं सोचता हूं कोई मर्द वहां जरूर है क्योंकि वह भी अकेली रहने वाली नहीं॥

सेना०। अगर ऐसा है तो पता लगाना चाहिये॥

दीवान०। मैं पता लगाने के उद्योग में कई दिन से लगा हूं मगर न हो सका, जिस दर्वाजे को खोल कर वह आती जाती है उसकी ताली भी इसलिये बनवाई

कि धोखे में वहां तक जा पहुंचूँ मगर काम न चला क्योंकि जाती समय अन्दर से वह न मालूम ताले में क्या कर जाती है कि ताली नहीं लगती॥

कोत०। दर्वाजा तोड़ के वहां पहुंचना चाहिये॥

दीवान०। ऐसा करने से बड़ा फसाद मचेगा॥

कोत०। फसाद करके कोई क्या कर लेगा? राज्य तो हम तीनों की मुट्ठी में है॥

इतने ही में बाहर किसी आदमी के पैर की चाप मालूम हुई, तीनों उसी तरफ देर तक देखते रहे मगर कोई न आया। कोतवाल यह कहता हुआ कि कहीं कोई छिप के सुनता न हो उठा और कमरे के बाहर जा कर इधर उधर देखने लगा, मगर किसी का पता न लगा, लाचार फिर कमरे में चला आया और बोला, "कोई नहीं है खाली धोखा हुआ॥"

इस जगह विस्तार से यह लिखने की कोई जरूरत नहीं कि इन तीनों में क्या २ बातचीत होती रही, या इन लोगों ने कौनसी सलाह पक्की की, हां इतना कहना जरूर है कि बातों ही में इन तीनों ने रात बिता दी और सवेरा होतेही अपने अपने घर का रास्ता लिया॥

दूसरे दिन पहर रात जाते जाते कोतवाल साहब के घर में एक विचित्र घटना हुई, वे अपने कमरे में बैठे कुछ कचहरी के जरूरी कागजों को देख रहे थे, इतने ही में गुल शोर की आवाज उनके कानों में आई, गौर करने से मालूम हुआ कि बाहर दर्वाजे पर लड़ाई हो

रही है। कोतवाल साहबके सामने मोमी शमादान जल रहा था उसी के पास एक घण्टी पड़ी हुई थी जिसे उठा कर बजाते ही एक खिदमतगार दौड़ा हुआ कोतवाल साहब के सामने आया और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। कोतवाल साहब ने कहा, दरियाफ़ करो बाहर कैसा कोलाहल मचा हुआ है॥

खिदमतगार दौड़ा हुआ बाहर गया और तुरत लौट आकर बोला, "न मालूम कहां से दो आदमी आपुस में लड़ते हुए आए हैं, फरियाद करने के लिये बेधड़क भीतर घुसे आते थे, पहरे वालों ने रोका तो उन्हीं से लड़ाई करने लगे॥"

कोतवाल०। दोनों की सूरत शक्ल कैसी है?

खिद०। दोनों भले आदमी मालूम पड़ते हैं, अभी मूछें नहीं निकली हैं, बड़े ही खूबसूरत हैं मगर खून से तरातर हो रहे हैं॥

कोत०। अच्छा कहो उन दोनों को हमारे सामने हाजिर करें॥

हुक्म पाते ही खिदमतदार फिर बाहर गया और थोड़ी ही देर में कई सिपाही उन दोनों को लिये हुए कोतवालके सामने हाजिर हुए। नौकरकी बात बिल्कुल सच निकली, वे दोनों कम उम्र और बहुत ही खूबसूरत थे, बदन में लिबास भी बेशकीमती था, कोई हर्बा उनके पास न था मगर खून से उन दोनों का कपड़ा तर हो रहा था॥

कोत० । तुम लोग आपुस में क्यों लड़ते हो और हमारे आदमियों से फसाद करने पर क्यों उतारू हुए ?

एक० । (सलाम करके) हम दोनों भले आदमी हैं, सर्कारी सिपाहियों ने बदजुबानी की, लाचार गुस्सा तो चढ़ाही हुआ था बिगड़ गई ॥

कोत० । अच्छा इसका फैसला पीछे हो रहेगा, पहिले तुम यह कहो कि आपुस में क्यों खूनखराबा कर बैठे और तुम दोनों का मकान कहां है ?

दूसरा० । जी हम दोनों आपकी रैयत हैं गयाजी में रहते हैं, दोनों सगे भाई हैं, एक औरत के पीछे लड़ाई हो रही है जिसका फैसला आप से चाहते हैं, बाकी हाल इतने आदमियों के सामने कहना हमलोग पसन्द नहीं करते ॥

कोतवाल साहब ने सिर्फ उन दोनों को वहां रहने दिया बाकी सभों को वहां से हटा दिया । निराला होने पर फिर उन दोनों से लड़ाई का सबब पूछा ॥

एक० । हम दोनों भाई सर्कार से कोई मौजा ठीका लेने के लिये यहाँ आ रहे थे, यहां से तीन कोस पर एक पहाड़ी है, कुछ दिन रहते ही हम दोनों वहाँ पहुंचे और कुछ सुस्ताने की नीयत से घोड़े पर से उतर पड़े, घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया और पेड़ के नीचे एक पत्थर की चट्टान पर बैठ बातचीत करने लगे ॥

दूसरा० । (सर हिला कर) नहीं, कभी नहीं ॥

पहिला० । सर्कार इसे हुक्म दीजिये कि चुप रहे,

मैं कह लूँ तो जो कुछ इसके जी में आवे कहे ॥

कोत०। (दूसरे को डांट कर) बेशक ऐसा करना होगा ॥

दूसरा०। बहुत अच्छा ॥

पहिला०। थोड़ी ही देर तक बैठे थे कि पास ही से किसी औरत के रोने की बारीक आवाज आई जिसके सुनने से कलेजा पानी हो गया ॥

दूसरा०। ठीक बहुत ठीक ॥

कोत०। (लाल आंखें करके) क्यों फिर तुम बोलते हो ?

दूसरा०। अच्छा अब न बोलूँगा ॥

पहिला०। हम दोनों उठ कर उसके पास गए। अहा! ऐसी खूबसूरत औरत तो आज तक किसी ने न देखी होगी बल्कि जोर देकर कहता हूं कि दुनिया में ऐसी खूबसूरत कोई दूसरी न होगी। वह अपने सामने एक तस्वीर, जो चौकठे में जड़ी हुई थी, रक्खे बैठी थी और उसे देख फूट फूट कर रो रही थी ॥

कोत०। वह तस्वीर किसकी थी, तुम पहिचानते हो ?

पहिला०। जी हां पहिचानता हूं, वह मेरी ही तस्वीर थी ॥

दूसरा०। झूठ, झूठ, झूठ, कभी नहीं, बेशक वह तस्वीर आप की थी मैं इस समय बैठा बैठा उस तस्वीर से आप की सूरत मिलान कर गया बिल्कुल आप से

मिलती है इसमें कोई शक नहीं आप इसके हाथ में गङ्गाजल दे कर पूछिये किसकी तस्वीर थी॥

कोत०। (ताज्जुब में आकर) क्या मेरी तस्वीर थी?

दूसरा०। बेशक आपकी तस्वीर थी, आप इससे कसम देकर पूछिये तो सही॥

कोत०। (पहिले से) क्यों जी तुम्हारा भाई क्या कहता है?

पहिला०। जी ई ई..............

कोत०। (जोर से) कहो साफ साफ सोचते क्या हो?

पहिला०। जी बात तो यही ठीक है, आप ही की तस्वीर थी॥

कोत०। फिर झूठ क्यों बोले?

पहिला०। बस यही एक बात झूठ मुंह से निकल गई अब कोई बात झूठ न कहूंगा माफ कीजिये॥

कोतवाल बेचारा ताज्जुब में आकर सोचने लगा कि उस औरत को मुझसे क्योंकर मुहब्बत हो गई जिस की खूबसूरती की ये लोग बड़ी तारीफ कर रहे हैं! थोड़ी देर बाद फिर पूछा:—

कोत०। हां तो आगे क्या हुआ?

पहिला०। (अपने भाई की तरफ इशारा करके) बस यह उसपर आशिक हो गया और उसे तङ्ग करने लगा॥

दूसरा०। यह भी उसपर आशिक हो उसे छेड़ने लगा॥

पहिला० । जी नहीं, उसने मुझे कबूल किया और मुझसे शादी करने पर राजी हो गई बल्कि उसने यह भी कहा कि मैं दो दिन तक यहां रह कर तुम्हारा आसरा देखूँगी अगर तुम पालकी लेकर आओगे तो मैं तुम्हारे साथ चली चलूँगी ॥

दूसरा० । जी नहीं, यह बड़ा भारी झूठा है जब यह उसकी खुशामद करने लगा तब उसने कहा कि मैं उसीके लिये जान देने को तैयार हूं जिसकी तस्वीर मेरे सामने है । जब इसने उसकी बात न सुनी तो उसने अपनी तलवार से इसे जख्मी किया और मुझसे बोली, "तुम जाकर मेरे दोस्त को जहां हो ढूँढ निकालो और कह दो "मैं तुम्हारे लिये बर्बाद हो गई अब भी तो सुध लो !" बस मैंने इसे मना किया यह मुझी से लड़ पड़ा । असल में यही लड़ाई का सबब हुआ ॥

पहिला० । जी नहीं, यह सन्देसा उसने मुझे दिया क्योंकि यही उसे दुःख दे रहा था ॥

दूसरा० । नहीं यह झूठ बोलता है ॥

पहिला० । नहीं यह झूठा है मैं ठीक ठीक कहता हूं ॥

कोत० । अच्छा मुझे उस औरत के पास ले चलो मैं खुद उससे पूछ लूँगा कि कौन झूठा और कौन सच्चा है ॥

पहिला० । क्या अभी तक वह उसी जगह होगी ?

दूसरा० । जरूर वहां होगी, यह बहाना करता है क्योंकि वहां जाने से झूठा साबित हो जायगा ॥

पहिला० । (अपने भाई की तरफ देख कर) झूठा

तू साबित होगा, अफसोस तो इतना ही है कि अब मुझे वहां का रास्ता भी याद नहीं ॥

दूसरा० । (पहिले की तरफ देख कर) आप रास्ता भूल गए तो क्या हुआ मुझे तो याद है ! मैं जरूर आप को वहां ले चल कर भूठा करूँगा (कोतवाल साहब की तरफ देख कर) चलिये मैं ले चलता हूं ॥

कोत० । चलो ॥

कोतवाल साहब तो खुद बेचैन हो रहे थे और चाहते थे कि जहां तक हो वहां जल्द पहुंच कर देखना चाहिये कि वह औरत कैसी है जो मुझपर आशिक हो मेरी तस्वीर सामने रख याद किया करती है । एक पिस्तौल भरी भराई कमर में रख उन दोनों भाइयों को साथ ले मकान के नीचे उतरा । उसको बाहर जाने के लिये मुस्तैद देख कई सिपाही साथ चलने के लिये तैयार हुए । उसने अपनी सवारी का घोड़ा मँगवाया और उस पर सवार हो सिर्फ अर्दली के सिपाहियों को साथ ले उन दोनों भाइयों के पीछे पीछे रवाना हुआ । दो घंटे बराबर चले जाने बाद एक छोटी पहाड़ी के नीचे पहुंच ये दोनों भाई रुके और कोतवाल साहब को घोड़े के नीचे उतरने के लिये कहा ॥

कोत० । क्या घोड़ा आगे नहीं जा सकता ?

पहिला० । घोड़ा आगे जा सकता है मगर मैं दूसरी ही बात सोच कर आपको उतरने के लिये कहता हूं ॥

कोत० । वह क्या ?

पहिला० । जिस औरत के पास आप आये हैं वह इसी जगह है, दोही कदम आगे बढ़ने से आप उसे बखूबी देख सकते हैं, मैं चाहता हूं सिवाय आपके ये देनों प्यादे उसे देखने न पावें । इसके लिये मैं किसी तरह जोर नहीं दे सकता मगर इतना जरूर कहूंगा कि आप जरासा आगे बढ़ उसे झांक कर देखलें फिर अगर जी चाहे ते इन दोनों को अपने साथ लेजायँ क्योंकि वह अपने के "गया" की रानी बताती है ॥

कोत० । (ताज्जुब से) अपने को गया की रानी बताती है !!

दूसरा० । जी हां ॥

अब ते कोतवाल साहब के दिल में कोई दूसराही शक पैदा हुआ, वह तरह तरह की बातें सोचने लगा । "गया की रानी ते हमारी 'माधवी' है यह दूसरी कहां से पैदा हुई ! क्या वही माधवी ते नहीं है ! नहीं नहीं वह यहां क्यों आने लगी उसे मुझसे क्या सम्बन्ध वह ते दीवान साहब की हो रही है, अगर वह आई भी हो ते कोई ताज्जुब नहीं—क्योंकि एक दिन हम तीनों दोस्त एक साथ महल में बैठे थे और रानी माधवी वहां पहुंच गई थी, मुझे खूब याद है कि उस दिन उसने मेरी तरफ बेढब तरह से देखा था और दीवान साहब की आंख बचा घड़ी घड़ी देखती थी, शायद उसी दिन से मुझ पर आशिक होगई हो । हाय ! वह अनोखी चितवन मुझे कभी न भूलेगी । अहा ! अगर यहां वही

हो और मुझे विश्वास हो जाय कि मुझसे प्रेम रखती है तो क्या बात है। मैं ही राजा हो जाऊं और दीवान साहब को बात की बात में खपा डालूं मगर ऐसी किस्मत कहां, खैर जो हो इनकी बात मान जरा झांक के देखना तो जरूर चाहिये शायद ईश्वर ने दिन फेरा हो ।" ऐसी ऐसी बहुत सी बातें सोचते विचारते कोतवाल साहब घोड़े से उतर पड़े और उन दोनों भाइयों के कहे मुताबिक कुछ आगे बढ़े ॥

यहां से पहाड़ियों का सिलसिला बहुत दूर तक चला गया था। जिस जगह कोतवाल साहब खड़े थे वहां दो पहाड़ी इस तरह आपुस में मिली हुई थीं कि बीच में कोसों तक एक लांबी दरार मालूम पड़ती थी, बीच में बहता हुआ पानी का चश्मा और दोनों तरफ के छोटे छोटे दरख्त बड़े भले मालूम पड़ते थे, इधर उधर बहुत सी कन्दराओं पर निगाह पड़ने से विश्वास होता था कि ऋषियों और तपस्वियों के प्रेमी अगर यहां आवें तो अवश्य उनके दर्शनों से अपना जन्म कृतार्थ कर लें॥

दरार के कोने पर पहुंच कर दोनों भाइयों ने कोतवाल साहब को बाईं तरफ झांकने के लिये कहा। कोतवाल साहब ने झांक कर देखा, एकदम चैांक पड़े और मारे खुशी के भरे हुए गले से चिल्लाकर बोले,—"अहा! मेरी किस्मत जागी, बेशक यह रानी माधवी ही तो है !!"
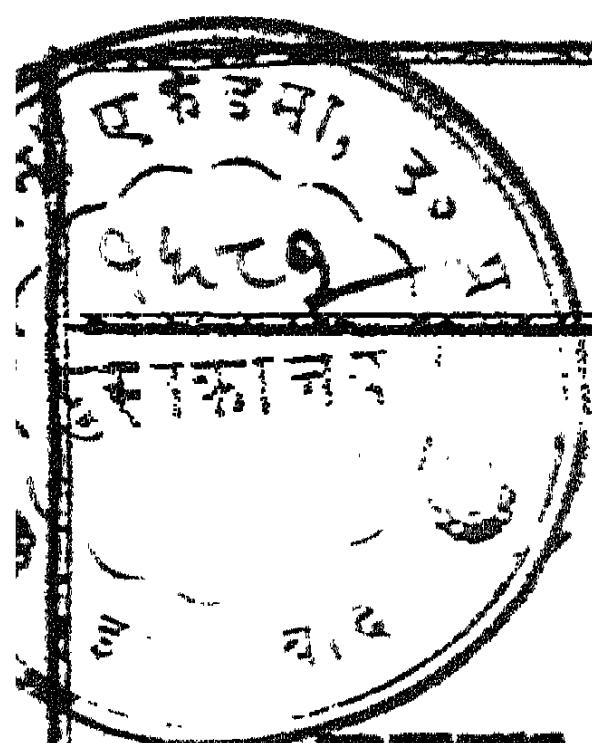
पांचवां बयान।

कमला को विश्वास हो गया कि किशोरी को कोई धोखा दे कर ले भागा। वह उस बाग में बहुत देर तक न ठहरी, ऐयारी के सामान से दुरुस्त ही थी, एक लालटैन हाथ में ले वहां से चल पड़ी और बाग के बाहर हो चारों तरफ घूम घूम कर किसी ऐसे निशान को ढूँढने लगी जिससे यह मालूम हो कि किशोरी किस सवारी पर यहां से गई है, मगर जब तक कमला उस आम की बारी में न पहुंची तब तक सिवाय पैरों के चिन्ह के और कोई किसी तरह का निशान जमीन पर दिखाई न पड़ा॥

बरसात का दिन था जमीन अच्छी तरह नर्म हो रही थी इसलिये आम की बारी में घूम घूम कर कमला ने मालूम कर लिया कि किशोरी यहां से रथ पर सवार होकर गई है और साथ में कई सवार भी हैं क्योंकि रथ के पहियों का दोहरा निशान और बैलों के खुर जमीन पर साफ मालूम पड़ते थे, इसी तरह घोड़ों के टापों के निशान भी अच्छी तरह दिखाई पड़ते थे॥

कमला कई कदम उस निशान पर उसी तरफ चली गई जिधर रथ गया था और मालूम कर लिया कि किशोरी को ले जाने वाले इसी तरफ गए हैं। इसके बाद वह पीछे लौटी और सीधे अस्तबल में जा एक तेज घोड़े पर बहुत जल्द चारजामा कसने का हुक्म दिया॥

कमला का हुक्म ऐसा न था कि कोई उससे इन्कार

करता, घोड़ा बहुत जल्द कसकर तैयार किया गया और कमला उसपर सवार हो तेजी के साथ उस तरफ रवाना हुई जिधर रथ पर सवार होकर किशोरी के जाने का उसे विश्वास हुआ था ॥

पांच कोस बराबर चले जाने बाद कमला एक चौराहे पर पहुंची जहां से बायें तरफ का रास्ता चुनार को गया था और दाहिने तरफ की सड़क रीवां होते हुए गयाजी तक पहुंची हुई थी और सामने का रास्ता एक भयानक जङ्गल में होता हुआ कई तरफ को फूट गया था ॥

इस चौमुहाने पर पहुंच कर कमला रुकी और सोचने लगी कि किधर जाऊँ, अगर चुनारवाले किशोरी को ले गए होंगे तो इसी बांई तरफ से गए होंगे, अगर किशोरी की दुश्मन माधवी ने उसे फँसाया होगा तो रथ दाहिनी तरफ से गयाजी गया होगा, सामने की सड़क से रथ ले जानेवाला तो कोई खयाल में नहीं आता क्योंकि यह जङ्गल का रास्ता बहुत खराब और पथरीला है ॥

चन्द्रमा निकल आया था रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी थी, कमला घोड़े से नीचे उतर बांई और दाहिनी तरफ जमीन पर रथ के पहियों का दाग ढूंढने लगी मगर कुछ मालूम न हुआ, लाचार घोड़े पर सवार हो फिर सोचने लगी कि किधर जाऊं और क्या करूं ?

हम पहिले लिख आए हैं कि रथ पर जाते जाते

जब किशोरी ने जान लिया कि वह धोखे में डाली गई, तब उसके मुंह से कई ऐसे शब्द निकले जिसे सुन नकली कमला होशियार होगई और रथ के नीचे कूद एक घोड़े पर सवार हो पीछे की तरफ लौट गई॥

लौटी हुई नकली कमला ठीक उसी समय घोड़ा दौड़ाती हुई उस चौराहे पर पहुंची जिस समय असली कमला वहां पहुंच कर सोच रही थी कि किधर जाऊं क्या करूं। असली कमला ने सामने से तेजी के साथ आते हुए एक सवार को देख घोड़ा रोकने के लिये ललकारा मगर वह क्यों रुकने लगी थी हां उसे असली कमला के दाहिनी तरफ वाली राह पर जाने के लिये घूमना था इसलिये घोड़े की तेजी कम करनी ही पड़ी॥

जब असली कमला ने देखा कि सामने से आया हुआ सवार उसके ललकारने से किसी तरह नहीं रुकता और दाहिनी सड़क से निकल जाया चाहता है तो झट कमर से दुनाली पिस्तौल निकाल उसके घोड़े पर वार किया। गोली लगते ही घोड़ा नकली कमला को लिये हुए जमीन पर गिरा, मगर वह गिरते ही बहुत जल्द सम्हल कर उठ खड़ी हुई और उसने भी अपनी कमर से दुनाली पिस्तौल निकाल असली कमला पर गोली चलाई॥

असली कमला तो पहिले ही से सम्हली हुई थी, गोली की मार बचा गई, फिर दूसरी गोली आई वह भी न लगी। लाचार नकली कमला ने फिर अपनी पिस्तौल

भरने का इरादा किया मगर असली कमला ने उसे यह मौका न दिया। दोनों गोली बेकार जाते देख वह समझ गई कि उसकी पिस्तौल खाली होगई, हाथ में पिस्तौल लिये हुए झट उसके कल्ले पर पहुंच गई और ललकार कर बोली, "खबरदार जो पिस्तौल भरने का इरादा किया है ! देख मेरे पिस्तौल में दूसरी गोली अभी मौजूद है।" नकली कमला भी यह सोच कर चुपचाप खड़ी रह गई कि अब वह अपने दुश्मन का कुछ नहीं कर सकती क्योंकि पिस्तौल की दोनों गोलियां बर्बाद जा चुकी थीं और घोड़ा उसका मर चुका था॥

पिस्तौल के इलावे दोनों की कमर में खंजर था मगर उसकी जरूरत न पड़ी। असली कमला ने ललकार कर पूछा, "सच बता तू कौन है?"

नकली कमला को जान दे देना कबूल था मगर अपने मुंह से यह बताना मंजूर न था कि कौन है। असली कमला ने अपने घोड़े का ऐसा झपेटा दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सकी जमीन पर गिर पड़ी, जब तक वह होशियार हो उठना चाहे तब तक असली कमला झट घोड़े से कूद उसकी छाती पर सवार दिखाई देने लगी॥

असली कमला ने जबर्दस्ती उसकी नाक में बेहोशी की दवा ठूँस दी और जब वह बेहोश हो गई उसकी छाती पर से उतर अलग खड़ी हो गई॥

असली कमला जब उसकी छाती पर सवार हुई

उसने उसे अपनी ही सूरत का पाया इसलिये समझ गई कि यह कोई ऐयार या ऐयारा है, सिवाय इसके किशोरी की सखियों की जुबानी उसने मालूम ही कर लिया था कि कोई उसी की सूरत बन किशोरी को ले गया, अब उसे विश्वास हो गया कि किशोरी को इसी ने धोखा दिया॥'

थोड़ी देर बाद कमला ने अपने बटुए में से पानी का भरा छोटा सा बोतल निकाला और नकली कमला का मुंह धो कर साफ किया, इसके बाद चकमाक से आग निकाल बत्ती जला कर पहिचानना चाहा कि यह कौन है मगर बिना ऐसा किये वह केवल चन्द्रमा ही की मदद से पहिचान ली गई कि यह माधवी की सखी ललिता है, क्योंकि वह उसे अच्छी तरह जानती थी और वर्षों साथ रहने के सिवाय बराबर ही मिला करती थी॥

कमला को यह तो विश्वास हो ही गया कि किशोरी को धोखा देके ले जाने वाली यही ललिता है, मगर इस बात का ताज्जुब बना ही रहा कि वह सामने से लौट कर आती हुई क्यों दिखाई पड़ी! कमला यह भी जानती थी कि चाहे जान चली जाय मगर ललिता असल भेद कभी न बतावेगी, इसलिये उसकी जुबानी पता लगाने का उद्योग करना उसने व्यर्थ समझा और अपने साथ ललिता को घोड़े पर लाद घर की तरफ पलट पड़ी॥

रात बिल्कुल बीत चुकी थी बल्कि कुछ दिन निकल आया था जब ललित को लादे हुए कमला घर पहुंची। यहां किशोरी के गायब होने से बड़ा ही हाहाकार मचा हुआ था, उसकी खोज में कई आदमी चारों तरफ जा चुके थे। किशोरी का नाना रणधीरसिंह भारी जिमींदार होने के सिवाय बड़ा ही दिमागदार और जबर्दस्त था, उसने यही समझ रक्खा था कि शिवदत्त के दुश्मन बीरेन्द्रसिंह की तरफ से यह कार्रवाई की गई है मगर जब ललिता को लिये हुए कमला पहुंची और उसकी जुबानी सब हाल मालूम हुआ तब माधवी की बदमाशी पर बहुत बिगड़ा, वह माधवी की चालचलन पर पहिले ही से रंज था मगर कुछ जोर न चलने से लाचार था। आज उसको गुस्से के मारे इस बात का बिल्कुल ध्यान न रहा कि माधवी एक भारी राज्य की मालिक है और जबर्दस्त फौज रखती है। उसने कमला के मुंह से सब हाल सुनते ही तलवार हाथ में ले कसम खा ली कि "जिस तरह हो सकेगा अपने हाथ से माधवी का सिर काट कलेजा ठण्ढा करूंगा !!"

ललिता एक अन्धेरी कोठड़ी में कैद की गई और रणधीरसिंह की आज्ञा ले कमला अपने बड़े भाई हरनामसिंह को साथ ले किशोरी की मदद को पैदल रवाना हुई॥

कमला आज भी उसी कब्र वाले रास्ते पर रवाने हुई और दोपहर होते होते उसी चौराहे पर पहुंची

जहां कल ललिता मिली थी, वे दोनों बेधड़क सामने वाली सड़क पर चले गए॥

चौराहे के आगे लगभग तीन कोस चले जाने बाद खराब और पथरीली राह मिली जिसे देख हरनामसिंह ने कहा, "इस राह से रथ ले जाने में जरूर तकलीफ हुई होगी॥"

कमला०। बेशक ऐसा ही हुआ होगा। मुझे अभी तक निश्चय नहीं हुआ कि किशोरी इसी राहसे गई है॥

हरनाम०। मैं तो यही समझता हूं कि रथ इसी राह से गया है और किशोरी का साथ छोड़ कोई दूसरी कार्रवाई करने के लिये ललिता लौटी थी॥

कमला०। शायद ऐसा ही हो॥

और थोड़ी दूर जाने बाद एक पैर की पाजेब जमीन पर पड़ी हुई दिखाई दी, हरनामसिंह ने उसे देखते ही उठा लिया और कहा, "बेशक किशोरी इसी राह से गई है, इस पाजेब को मैं खूब पहिचानता हूं॥"

कमला०। अब तो मुझे भी निश्चय हो गया कि किशोरी इधर ही से गई है॥

हरनाम०। हां, जब उसे मालूम हो गया कि वह धोखा खाकर दुश्मनों के फन्दे में पड़ गई तब उसने यह पाजेब चुपके से जमीन पर फेंक दी॥

कमला०। इसलिये कि वह जानती थी कि मेरी खोज में बहुत से आदमी निकलेंगे और इधर आकर इस पाजेब को देखेंगे तो जान जायँगे कि किशोरी इधर

ही गई हैं ॥

हरनाम०। मैं खयाल करता हूं कि आगे चल कर किशोरी की फेंकी हुई और भी कोई चीज हमलोग जरूर देखेंगे ॥

कमला०। बेशक ऐसा ही होगा ॥

कुछ आगे जाकर दूसरा पाजेब और उससे थोड़ी दूर पर किशोरी के कई गहने इन लोगों ने पाये। अब कमला को किशोरी के इसी राह से जाने का पूरा पूरा विश्वास हो गया और वे दोनों बेधड़क राजगृही की तरफ कदम बढ़ाते हुए रवाना हुए ॥

छठवां बयान।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह अभी तक उसी रमणीक स्थान में बिराज रहे हैं, चाहे जी कितना ही बेचैन क्यों न हो मगर लाचार माधवी के साथ दिन काटना ही पड़ता है, खैर जो होगा देखा जायगा इस समय तो पहर दिन बाकी रहने पर भी इन्द्रजीतसिंह कमरे के अन्दर सुनहले पावों की चारपाई पर आराम कर रहे हैं और एक लौंडी धीरे धीरे पंखा झल रही है। हम ठीक नहीं कह सकते कि उन्हें नींद ने दबाया हुआ है या जानबूझकर मटियाये पड़े हैं और अपनी बदकिस्मती के जाल को सुलझाने की तर्कीब सोच रहे हैं। इन्हें इसी तरह पड़े रहने दीजिये आप जरा तिलोत्तमा के कमरे में चलकर

देखिये कि वह माधवी के साथ किस तरह की बातचीत कर रही है। माधवी का हँसता हुआ चेहरा कहे देता है कि बनिस्बत और दिनों के आज वह बहुत ही खुश है, मगर तिलोत्तमा के चेहरे से किसी तरह की खुशी मालूम नहीं होती। माधवी ने तिलोत्तमा का हाथ पकड़ के कहा, "सखी! आज तुझे उतना खुश नहीं पाती हूं जितना मैं खुद हूं॥

तिलोत्तमा०। तुम्हारा खुश होना बहुत ठीक है॥

माधवी०। तो क्या तुम्हें इस बात की खुशी नहीं है कि किशोरी मेरे फन्दे में फँस गई और वह मेरे यहां एक कैदी की तरह तहखाने में बन्द है?

तिलोत्तमा०। इस बात की तो मुझे भी खुशी है॥

माधवी०। तो रंज किस बात का है? हां मैं समझ गई अभी तक ललिता के लौट कर न आने का बेशक तुम्हें दुःख होगा॥

तिलोत्तमा०। ठीक है। मैं ललिता के बारे में भी बहुत कुछ सोच रही हूं। मुझे तो विश्वास हो गया कि उसे कमला ने पकड़ लिया॥

माधवी०। तो उसे छुड़ाने की फिक्र करनी चाहिये॥

तिलोत्तमा०। मुझे इतनी फुरसत ही नहीं कि उसे छुड़ाने के लिए जाऊँ, क्योंकि मेरे हाथ पैर किसी दूसरे ही तरद्दुद ने बेकार कर दिये हैं जिसकी तुम्हें जरा भी खबर नहीं, अगर खबर होती तो आज तुम्हें भी अपनी तरह उदास पाती॥

तिलोत्तमा की इस बात ने माधवी को चौंका दिया और वह घबड़ा कर तिलोत्तमा का मुंह देखने लगी ॥

तिलोत्तमा० । मुंह क्या देखती है ? मैं झूठ नहीं कहती, तू तो अपने ऐश वो आराम में ऐसी मस्त हो रही है कि दीन दुनिया की खबर नहीं, तू जानती ही नहीं कि दो ही चार दिन में तुझपर कैसी आफत आने वाली है, क्या तुझे विश्वास हो गया कि किशोरी तेरे कैद में रह जायगी ? कुछ बाहर की भी खबर है कि क्या हो रहा है ? क्या बदनामी ही उठाने के लिये तू गया का राज्य कर रही है ? मैं पचास दफे तुझे समझा चुकी कि अपने चालचलन को दुरुस्त कर मगर तैने एक न सुनी, लाचार तुझे तेरी मर्जी पर छोड़ दिया और प्रेम के सबब तेरा हुक्म मानती आई मगर अब मेरे सम्हाले नहीं सम्हलता ॥

माधवी० । तिलोत्तमा ! तुझे क्या होगया जो इतना कूद रही है ? ऐसी कौन सी आफत आ गई है जिसने तुझे बदहवास कर दिया ? क्या तू नहीं जानती कि दीवान साहब इस राज्य का इन्तजाम कैसी अच्छी तरह कर रहे हैं ? सेनापति और कोतवाल अपने काम में कितने होशियार हैं ? क्या इन लोगों के रहते हमारे राज्य में कोई विघ्न डाल सकता है ?

तिलोत्तमा० । हां ठीक है, इन तीनों के रहते कोई इस राज्य में विघ्न नहीं डाल सकता, लेकिन तुझे तो इन्हीं तीनों की खबर नहीं, कोतवाल साहब जहन्नुम

में चले ही गए, दीवान साहब और सेनापति साहब आजकल में जाया ही चाहते हैं बल्कि चले भी गए हों तो ताज्जुब नहीं॥

माधवी०। यह तू क्या कह रही है?

तिलोत्तमा०। जी हां, मैं बहुत ठीक कहती हूं, बिना परिश्रम ही यह राज्य बीरेन्द्रसिंह का हुआ चाहता है। इसीलिये कहती थी कि इन्द्रजीतसिंह को अपने यहां मत फँसा, उनके एक एक ऐयार आफत के परकाले हैं,मैं कई दिनों से उन लोगों की कार्रवाई देख रही हूं उन लोगों को छेड़ना ऐसा है जैसा आतशबाजी की चर्खी में आग लगा देना॥

माधवी०। क्या बीरेन्द्रसिंह को पता लग गया कि उन का लड़का यहां कैद है?

तिलोत्तमा०। पता नहीं लगा तो इसी तरह उनके ऐयार सब यहां पहुंच कर धूम मचा रहे हैं॥

माधवी०। तो तूने मुझे खबर क्यों न की?

तिलोत्तमा०। क्या खबर करती? तुझे इस खबर के सुनने की छुट्टी भी है!!

माधवी०। तिलोत्तमा! ऐसी जली कटी बातों का कहना छोड़ दे और मुझे ठीक ठीक बता कि क्या हुआ और क्या हो रहा है, सच पूछे तो मैं तेरे ही भरोसे कूद रही हूं, मैं जानती हूं कि सिवाय तेरे मेरी रक्षा करने वाला कोई नहीं, मुझे विश्वास था कि इन चार पहाड़ियों के बीच में जब तक मैं हूं मुझपर किसी तरह की

आफत न आवेगी मगर अब तेरी बातों से यह उम्मीद बिल्कुल जाती रही ॥

तिलोत्तमा० । ठीक है ऐसा भरोसा न रखना चाहिये । इसमें कोई शक नहीं कि मैं तेरे लिये जान देने को तैयार हूं, मगर तू ही बता कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के सामने मैं क्या कर सकती हूं ? एक बेचारी ललिता मेरी मद्दगार थी सो वह भी किशोरी को फँसा यहां भेज आप पकड़ी गई, अब अकेली मैं क्या क्या करूँ ?

माधवी० । तू सब कुछ कर सकती है हिम्मत मत हार, हां यह तो बता कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयार यहां क्योंकर आये श्रोर अब क्या कर रहे हैं ?

तिलोत्तमा० । अच्छा सुन मैं सब कुछ कहती हूं । यह मैं नहीं जानती कि पहिले पहिल यहां कैान आया, हां जब से यहां चपला आई है तब से मैं थोड़ा बहुत हाल जानती हूं ॥

माधवी० । (चैांक कर) क्या चपला यहां पहुंच गई ?

तिलोत्तमा० । हां पहुंच गई । उसने यहां पहुंच कर उस सुरङ्ग की दूसरी ताली भी तैयार कर ली जिस राह से तू आती जाती है श्रोर जिसमें तैने किशोरी को कैद कर रक्खा है । एक दिन रात को जब तू इन्द्रजीतसिंह को सोता छोड़ दीवान साहब से मिलने के लिये गई तो चपला भी इन्द्रजीतसिंह को साथ ले अपनी ताली से सुरङ्ग का ताला खोल तेरे पीछे पीछे चली गई श्रोर छिप कर तेरी श्रोर दीवान साहब की कैफियत

इन दोनों ने देख ली, यह न समझ कि इन्द्रजीतसिंह बेचारे सूधे सादे हैं और तेरा हाल नहीं जानते, वह सब कुछ जान गए॥

माधवी०। (कुछ देर तक सोच में डूबी रहने बाद) तैंने चपला को कैसे देखा?

तिलोत्तमा०। मेरा बल्कि ललिता का भी कायदा है कि रात को तीन चार दफे उठकर इधर उधर घूमा करती हूं, उस समय मैं अपने दालान में खम्भे की आड़ में खड़ी इधर उधर देख रही थी जब चपला और इन्द्र-जीतसिंह तेरा हाल देख कर सुरङ्ग से लौटे थे, उसके बाद ये दोनों बहुत देर तक नहर के किनारे खड़े बात-चीत करते रहे, बस उसी समय से मैं होशियार होगई और अपनी कार्रवाई करने लगी॥

माधवी०। इसके बाद फिर भी कुछ हुआ?

तिलोत्तमा०। हां बहुत कुछ हुआ, सुनो मैं कहती हूं। दूसरे दिन मैं ललिता को साथ ले उस तालाब पर पहुंची, देखा कि बीरेन्द्रसिंह के कई ऐयार वहां बैठे बातचीत कर रहे हैं। मैंने छिप कर उनकी बातचीत भी सुनी, मालूम हुआ कि वे लोग दीवान साहब, सेना-पति और कोतवाल साहब को गिरफ़ार किया चाहते हैं। मुझे उस समय एक दिल्लगी सूझी। जब वे लोग राय पक्की करके वहां से जाने लगे मैंने वहां से कुछ दूर हट कर एक छींक मारी और झट भाग गई॥

माधवी०। (मुसकुरा कर) वे लोग घबड़ा गए होंगे॥

तिलोत्तमा० । बेशक घबड़ाये होंगे, उसी समय गाली गुफ़ा करने लगे मगर हम दोनों ने वहां ठहरना पसन्द न किया ॥

माधवी० । फिर क्या हुआ ?

तिलोत्तमा० । मैंने तो सोचा था कि वे लोग मेरी छींक से डर कर अपनी कार्रवाई रोकेंगे मगर ऐसा न हुआ दो ही दिन की मेहनत में उन लोगों ने कोतवाल साहब को गिरफ़ार कर लिया, भैरोसिंह और तारासिंह ने उन्हें बुरा धोखा दिया ॥

इसके बाद तिलोत्तमा ने कोतवाल साहब के गिरफ़ार होने का पूरा हाल जैसा हम ऊपर लिख आये हैं माधवी से कहा, साथ ही उसके यह भी कह दिया कि दीवान साहब को भी गुमान हो गया है कि तूने किसी मर्द को यहां लाकर रक्खा है और उसके साथ आनन्द करती है ॥

तिलोत्तमा की ज़ुबानी सब हाल सुन कर माधवी सोचसागर में गोते खाने लगी और आध घंटे तक उसे तनोबदन की सुध न रही, इसके बाद उसने अपने को सम्हाला और फिर तिलोत्तमा से बातचीत करना आरम्भ किया ॥

माधवी०। खैर जो हुआ सो हुआ यह बता कि अब क्या करना चाहिये ?

तिलो० । मुनासिब तो यही है कि इन्द्रजीतसिंह और किशोरी को छोड़ दो, बस फिर तुम्हारा कोई कुछ

न बिगाड़ेगा॥

माधवी०। (तिलोतमा के पैरों पर गिर कर और रो कर) ऐसा न करो, अगर मुझ पर तुम्हारा सच्चा प्रेम है तो ऐसा करने के लिये जिद्द न करो अगर मेरा सिर चाहो तो काट लो मगर इन्द्रजीतसिंह को छोड़ने के लिए मत कहो॥

तिलो०। अफसोस! इन बातों की खबर दीवान साहब को भी नहीं कर सकती बड़ी मुश्किल है। अच्छा मैं उद्योग करती हूं मगर निश्चय नहीं कह सकती कि क्या होगा॥

माधवी०। तुम चाहोगी तो सब काम हो जायगा॥

तिलो०। पहिले तो मुझे ललिता को छुड़ाना मुनासिब है॥

माधवी०। अवश्य॥

तिलो०। हां एक काम इसके भी पहिले करना चाहिए नहीं तो किशोरी दो ही एक दिन में यहां से गायब हो जायगी और ताज्जुब नहीं कि धड़धड़ाते हुए बीरेन्द्रसिंह के कई ऐयार यहां पहुंच जायँ और मनमानती लूट मचावें॥

माधवी०। शायद तुम्हारा मतलब उस पानी वाले सुरङ्ग को बन्द कर देने से हो॥

तिलोत्तमा०। हां॥

माधवी०। मैं भी यही मुनासिब समझती हूं, मैं सोचती हूं कि जरूर कोई ऐयार उस रोज उसी पानी

वाले सुरङ्ग की राहसे यहां आया था जिसकी देखादेखी इन्द्रजीतसिंह उस सुरङ्ग में घुसे थे, मगर बेचारे पानी में आगे न जा सके और लौट आये,जरूर उस सुरङ्ग को अच्छी तरह बन्द कर दो जिसमें कोई ऐयार उस राह से आने जाने न पावे, तुम लोगों के लिये यह रास्ता तो हई है जिधर से मैं आती जाती हूं । हां एक बात और है, तुम अपने पिता को मेरी मदद के लिये क्यों नहीं ले आतीं, उनसे और मेरे पिता से तो बड़ी दोस्ती थी मगर अफसोस ! आजकल वह मुझसे बहुत रंज हैं ॥

तिलो०। मैं कल उनके पास गई थी,वे किसी तरह नहीं मानते, तुमसे बहुत ही रंज हैं, मुझ पर भी बहुत बिगड़ते थे,अगर मैं तुरन्त न चली आती तो बेइज्जती के साथ निकलवा देते, अब मैं उनके पास कभी न जाऊँगी ॥

माधवी० । खैर जो कुछ किस्मत में है भोगूंगी । अच्छा अब तो सभों की आमदरफ़्त इसी सुरङ्ग से होगी तो किशोरी को वहां से निकाल किसी दूसरी जगह रखना चाहिये ॥

तिलो० । उस सुरङ्ग से बढ़ कर कौन ऐसी जगह है जहां उसे रक्खोगी ? दीवान साहब का भी तो डर है !!

थोड़ी देर तक इन दोनों में और बातचीत होती रही इसके बाद इन्द्रजीतसिंह के सो कर उठने की खबर आई, शाम भी हो ही चुकी थी,माधवी उठकर उनके पास गई और तिलोत्तमा पानी वाले सुरङ्ग को बन्द

करने की फिक्र में लगी ॥

पाठक! इस जगह मामला बड़ा ही गोलमाल हो गया, तिलोत्तमा ने चालाकी से बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों की कुल कार्रवाई देख ली, माधवी और तिलोत्तमा की बातचीत से आप यह भी जान ही गए होंगे कि बेचारी किशोरी उसी सुरङ्ग में कैद की गई है जिसकी ताली चपला ने बनाई थी, या जिस सुरङ्ग की राह चपला और कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने माधवी के पीछे पीछे जाकर यह मालूम कर लिया था कि वह कहां जाती या क्या करती है, उस सुरङ्ग की दूसरी ताली तो मौजूद ही थी, किशोरी का छुड़ाना चपला के लिये कोई बड़ी बात न थी अगर तिलोत्तमा होशियार हो कर उस आने जाने वाली राह अर्थात् जल वाले सुरङ्ग को जिसमें इन्द्रजीतसिंह गये थे और आगे जलासयी देखकर लौट आये थे, पत्थर के ढोकों से मजबूती के साथ बन्द न कर देती। कुंअर इन्द्रजीतसिंह को बखूबी मालूम हो गया था कि हमारे ऐयार लोग इसी राह से आया जाया करते हैं, अब उन्होंने अपनी आंखों से यह भी देख लिया कि वह सुरङ्ग बखूबी बन्द कर दिया गया। उनकी नाउम्मीदी हर तरह बढ़ने लगी, उन्होंने समझ लिया कि अब चपला से मुलाकात न होगी और बाहर हमारे छुड़ाने के लिये क्या क्या तर्कीबें हो रही हैं इसका पता बिल्कुल न लगेगा। सुरंग की नई ताली जो चपला ने बनाई थी वह उसी के पास थी तौभी इन्द्रजीतसिंह

ने हिम्मत न हारी उन्होंने जी में ठान लिया कि अब जबर्दस्ती से काम लिया जायगा, जितनी औरतें यहां मौजूद हैं सभों की मुश्कें बांध नहर के किनारे डाल देंगे और सुरंग की जो असली ताली माधवी के पास है लेकर सुरंग की राह माधवी के महल में पहुंच खून-खराबा मचावेंगे, आखिर क्षत्रियों को इससे बढ़ कर लड़ने भिड़ने और जान देने का कौनसा समय हाथ लगेगा मगर ऐसा करने के लिये सबसे पहिले सुरंग की ताली अपने कब्जे में कर लेना मुनासिब है, नहीं तो मुझे बिगड़ा हुआ देख, जब तक मैं दो चार औरतों की मुश्कें बांधूँगा सब की सब सुरंग की राह भाग जायँगी, फिर मेरा मतलब जैसा मैं चाहता हूं सिद्ध न होगा ॥

इन्द्रजीतसिंह ने सुरंग की ताली लेने के लिये बहुत कोशिश की मगर न ले सके क्योंकि अब वह ताली उस जगह से जहां पहिले रहती थी हटा कर दूसरी ही जगह रख दी गई ॥

सातवां बयान।

आपुस में लड़ने वाले देनों भाइयों के साथ जा कर सुबह की सुपेदी निकलने के साथ ही कोतवाल साहब ने माधवी की सूरत देखी और यह समझ कर कि दीवान साहब को छोड़ महारानी अब मुझसे प्रेम रक्खा चाहती हैं, बहुत खुश हुआ। कोतवाल साहब के गुमान में भी यह बात न थी कि वे ऐयारों के फेर में पड़े हैं, उनको इन्द्रजीतसिंह के कैद होने और बी-रेन्द्रसिंह के ऐयारों के यहां पहुंचने की खबर ही न थी, वह जिस तरह हमेशः रिआया लोगों के घर अकेले पहुंच कर तहकीकात किया करते थे उसी तरह आज भी सिर्फ दो अर्दली के सिपाहियों को साथ ले इन दोनों ऐयारों के फेर में आ घर से निकल पड़े॥

कोतवाल साहब ने जब माधवी को पहिचाना तो अपने सिपाहियों को उसके सामने ले जाना मुनासिब न समझा और अकेला ही माधवी के पास पहुंचा, देखा कि हकीकत में उसी की तस्वीर सामने रख माधवी उदास बैठी है॥

कोतवाल साहब को देखते ही माधवी उठ खड़ी हुई और मुहब्बत भरी निगाहों से उसकी तरफ देखकर बोली:—

"देखो मैं तुम्हारे लिये कितनी बेचैन हो रही हूं तुम्हें जरा भी खबर नहीं॥"

कोत०। अगर मुझे यकायक इस तरह अपनी किस्मत के जागने की खबर होती तो क्या मैं लापरवाह बैठा रहता ? कभी नहीं, मैं तो आप ही दिन रात तुम्हारे मिलने की उम्मीद में अपना खून सुखा रहा था ॥

माधवी०। (हाथ का इशारा करके) देखो ये दोनों आदमी बड़े ही बदमाश हैं इनको यहां से चले जाने के लिये कहो तो फिर हमसे तुमसे बातें होंगी ॥

इतना सुनते ही कोतवाल साहब ने उन दोनों भाइयों की तरफ जो हकीकत में भैरोसिंह और तारासिंह थे, कड़ी निगाह से देखा और कहा, "तुम दोनों अभी यहां से भाग जाओ नहीं तो बोटी बोटी काटकर रख दूंगा ॥"

इतना सुनते ही भैरोसिंह और तारासिंह वहां से चलते बने और चपला जो माधवी की सूरत बनी हुई थी कोतवाल को बातों में फँसाये हुए वहां से दूर एक गुफा के मुहाने पर ले गई और बैठकर बातचीत करने लगी ॥

चपला माधवी की सूरत तो बनी मगर उसकी और माधवी की उम्र में बहुत कुछ फर्क था, कोतवाल भी बड़ा ही धूर्त और चालाक था सूर्य्य की चमक में जब उसने माधवी की सूरत अच्छी तरह देखी और बातों में भी कुछ फर्क पाया फौरन उसे खुटका पैदा हुआ और बड़े गौर से उसे सिर से पैर तक देख अपनी निगाह की तराजू में तौलने और जांचने लगा ॥

चपला समझ गई कि अब कोतवाल के। शक पैदा हुआ, देर करना मुनासिब न जान उसने जफील (सीटी) बजाई। उसी समय गुफा के अन्दर से देवीसिंह निकल आए और कोतवाल साहब से तलवार रख देने के लिये कहा॥

कोतवाल ने भी जो सिपाही और शेरदिल आदमी था, बिना लड़े भिड़े अपने के। कैदी बना देना पसन्द न किया और म्यान से तलवार निकाल देवीसिंह पर हमला किया। थोड़ी ही देर में देवीसिंह ने उसे अपने खंजर से जख्मी किया और जमीन पर पटक उसकी मुश्कें बांध डालीं॥

कोतवाल साहब का हुक्म पा भैरोसिंह और तारासिंह उनके सामने से चले गए और वहां पहुंचे जहां कोतवाल के साथी दोनों सिपाही खड़े अपने मालिक के लैाट आने की राह देख रहे थे। इन दोनों ऐयारों ने उन दोनों सिपाहियों के। खुशी से अपनी मुश्कें बँधवाने के लिये कहा मगर उन्होंने इन दोनों के। साधारण समझ मंजूर न किया और लड़ने भिड़ने के। तैयार हो गए, उन दोनों की मैात आ चुकी थी आखिर भैरोसिंह और तारासिंह के हाथ से मारे गए। उसी समय बारीक आवाज में किसी ने इन दोनों ऐयारों के। पुकार कर कहा, "भला भैरोसिंह और तारासिंह! अगर मेरी जिन्दगी है तो इसका बदला लिये बिना न छोड़ूँगी॥"

भैरोसिंह ने उस तरफ देखा जिधर से आवाज आई थी, एक लड़का भागता हुआ दिखाई पड़ा, ये दोनों उसके पीछे दौड़े मगर पा न सके क्योंकि उसी पहाड़ी के छोटे छोटे कन्दराओं और खोहों में न मालूम उसने कहां छिप कर इन दोनों के हाथों से अपने को बचा लिया॥

पाठक समझ ही गए होंगे कि इन दोनों ऐयारों को ऐसे समय में पुकार कर चिताने वाली वही तिलोत्तमा है जिसने बात करते करते माधवी से इन दोनों ऐयारों के हाथ कोतवाल के फँस जाने का समाचार कहा था॥
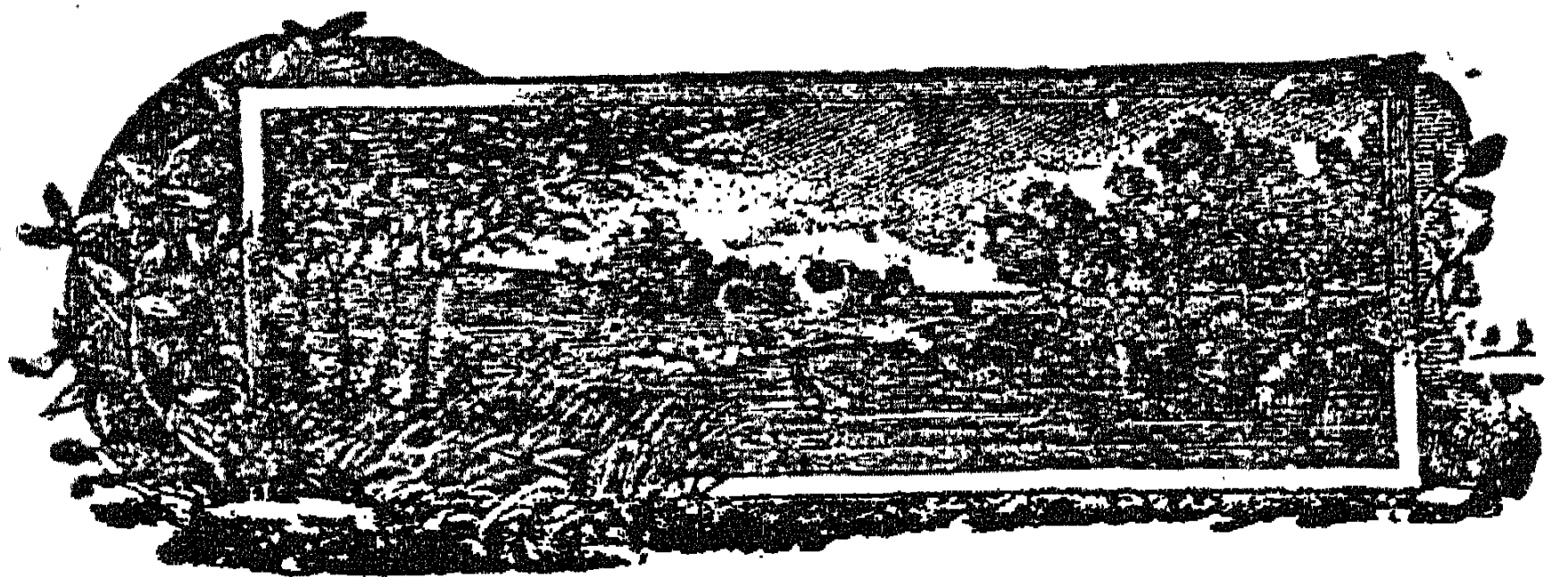
आठवां बयान।

इस जगह हम उस तालाब का हाल खोलते हैं जिसका जिक्र कई दफे ऊपर आ चुका है, जिसमें एक औरत को गिरफ्तार करने के लिये योगिनी और बनचरी कूदी थीं और जिसके किनारे बैठे हमारे ऐयारों ने माधवी के दीवान, कोतवाल और सेनापति को पकड़ने के लिये राय पक्की की थी॥

वह तालाब उस रमणीक स्थान में पहुंचने का रास्ता था जिसमें कुंअर इन्द्रजीतसिंह कैद हैं, इसका दूसरा मुहाना वही पानी वाला सुरङ्ग था जिसमें कुंअर इन्द्रजीतसिंह घुसे थे और कुछ दूर जाकर जलामयी देख लौट आये थे या जिसको तिलोत्तमा ने अब पत्थर के ढोंकों से बन्द कर दिया है॥

जिस पहाड़ी के नीचे यह तालाब था उसी पहाड़ी के दूसरी तरफ वह गुप्त स्थान था जिसमें इन्द्रजीतसिंह कैद थे, इस राह से हर एक आदमी का आना जाना मुश्किल था क्योंकि जल के अन्दर अन्दर लगभग दो सौ हाथ के जाना पड़ता था, हां ऐयार लोग अलबत्ते जा सकते थे जिनका दम खूब सधा हुआ था और तैरना बखूबी जानते थे। हां इस तालाब की राह से वहां तक पहुंचने के लिये कारीगरों ने एक सुबीता भी किया था, उस सुरङ्ग से इस तालाब की जाट (लाट) तक भीतर ही भीतर एक मजबूत जंजीर लगी हुई थी

जिसे थाम कर वहां तक पहुंचने में बड़ा ही सुबीता होता था ॥

कोतवाल साहब को गिरफ़ार करने बाद कई दफे चपला ने चाहा कि इसी तालाब की राह से इन्द्रजीत सिंह के पास पहुंच कर इधर के हालचाल की खबर करूं मगर ऐसा न कर सकी क्योंकि तिलोत्तमा ने सुरङ्ग का मुंह बन्द कर दिया था, अब हमारे ऐयारों को निश्चय हो गया कि दुश्मन सम्हल बैठा और उस को हमलोगों की खबर हो गई। इधर कोतवाल साहब के गिरफ़ार होने से और उनके सिपाहियों की लाश पाने से शहर में हलचली मच रही थी, दीवान साहब वगैरह इस खोज में परेशान हो रहे थे कि हमलोगों का दुश्मन ऐसा कौन पहुंचा जिसने कोतवाल साहब को गायब कर दिया !!

कई दिनों के बाद एक दिन आधी रात के समय भैरोसिंह, तारासिंह, पण्डित बद्रीनाथ, देवीसिंह और चपला इस तालाब पर बैठे आपुस में सलाह कर रहे थे और सोच रहे थे कि अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास किस तरह पहुंचना चाहिये और उनके छुड़ाने की क्या तर्कीब करनी चाहिये ॥

चपला०। अफसोस ! मैंने जो ताली तैयार की थी वह अपने साथ लेती आई नहीं तो इन्द्रजीतसिंह कुछ न कुछ उस तालीसे जरूर काम निकालते अब हमलोगों का वहां तक पहुंचना बहुत ही मुश्किल हो गया ॥

बद्री०। इस पहाड़ी के उस पार ही तो इन्द्रजीत सिंह हैं चाहे यह पहाड़ी कैसी ही बेढब क्यों न हो मगर हमलोग उस पार पहुंचने के लिये चढ़ने उतरने की जगह बना ही सकते हैं॥

भैरोसिंह०। यह काम कई दिनों का है॥

तारा०। सब से पहिले इस बात की निगरानी करनी चाहिये कि माधवी ने जहां इन्द्रजीतसिंह को कैद कर रक्खा है, कोई ऐसा मर्द न पहुंचने पावे जो उन्हें सता सके, औरतें यदि पांच सौ भी होंगी तो कुछ कर न सकेंगी॥

देवीसिंह०। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ऐसे बोदे नहीं हैं कि यकायक किसी के पंजे में आ जावें मगर हां हमलोगों को होशियार रहना चाहिये, आजकल में उन तक पहुंचने का मौका न मिलेगा तो हमलोग इस घर को उजाड़ कर डालेंगे और दीवान साहब वगैरह को जहन्नुम में मिला देंगे॥

भैरोसिंह०। अगर कुमार को यह मालूम हो गया होगा कि हमलोगों के आने जाने का रास्ता बन्द कर दिया गया तो चुप न बैठे रहेंगे कुछ न कुछ फसाद जरूर मचावेंगे॥

तारा०। बेशक!!

इसी तरह की बहुत सी बातें वे लोग कर रहे थे कि तालाब के उस पार जल में उतरता हुआ एक आदमी दिखाई पड़ा, वे लोग टकटकी बांध उसी तरफ देखने

लगे। वह आदमी जल में कूदा और जाट के पास पहुंच कर गोता मार गया, जिसे देख भैरोसिंह ने कहा, "बेशक यह कोई ऐयार है जो माधवी के पास जाया चाहता है॥

चपला०। मगर माधवी के तरफ का ऐयार नहीं है, अगर माधवी के तरफ का होता तो रास्ता बन्द होने का हाल उसे जरूर मालूम होता॥

भैरो०। ठीक है॥

तारा०। अगर माधवी के तरफ का नहीं है तो हमारे कुमार का पक्षपाती होगा॥

देवी०। वह लौटे तो अपने पास बुलाना चाहिये॥

थोड़ी ही देर बाद उस आदमी ने जाट के पास आकर सिर निकाला और जाट थाम कर सुस्ताने लगा, कुछ देर बाद किनारे पर चला आया और तालाब के ऊपर चौतरे पर बैठ कुछ सोचने लगा॥

भैरोसिंह अपने ठिकाने से उठे और धीरे धीरे उस आदमी की तरफ चले, जब उसने अपने पास किसी को आते देखा उठ खड़ा हुआ। साथ ही भैरोसिंह ने आवाज दिया, "डरो मत जहां तक मैं समझता हूं तुम भी उसी की मदद किया चाहते हो जिसके छुड़ाने की फिक्र में हमलोग हैं॥"

भैरोसिंह के इतना कहते ही उस आदमी ने खुशी भरी आवाज से कहा, "वाह वाह वाह! आप भी यहां पहुंच गए! सच पूछो तो यह सब फसाद तुम्हारा ही खड़ा किया हुआ है॥"

भैरो०। जिस तरह मेरी आवाज तुमने पहिचानली उसी तरह तुम्हारी मुहब्बत ने मुझे भी कह दिया कि तू कमला है॥

कमला०। बस बस, रहने दीजिये आपलोग बड़े मुहब्बती हैं इसे मैं खूब जानती हूं॥

भैरो०। जब जानती ही हो ते। मैं ज्यादे क्या कहूं॥

कमला०। कहने का मुंह भी ते। हो!!

भैरो०। कमला! मैं ते। यही चाहता हूं कि तुम्हारे पास बैठा बातें ही करता रहूं मगर इस समय मौका नहीं है क्योंकि (हाथ का इशारा करके) पण्डित बद्रीनाथ, देवीसिंह, तारासिंह और मेरी मां बैठी हुई हैं, तुमको तालाब में जाते और नाकाम लौटते हमलोगों ने देख लिया था इसीसे हमलोगों ने मालूम कर लिया कि तुम माधवी की तरफदार नहीं हो अगर होतीं तो सुरङ्ग बन्द किये जानेका हाल तुम्हें जरूर मालूम होता॥

कमला०। क्या तुम्हें सुरङ्ग बन्द करने का हाल मालूम है?

भैरो०। हां, हमलोग खूब जानते हैं॥

कमला०। फिर अब क्या करना चाहिये!

भैरो०। तुम वहां चली चलो जहां हमलोगों के सङ्गी साथी हैं, उसी जगह मिलजुल के सलाह करेंगे॥

कमला०। चलो मैं तैयार हूं॥

भैरोसिंह कमला को लिये हुए अपनी मां चपला के पास पहुंचे और पुकार कर कहा, "मां! यह कमला

है, इसका नाम तो तुमने सुना ही होगा ॥"

"हां हां, मैं बखूबी जानती हूं।" यह कह चपला ने उठकर कमला को गले लगा लिया और कहा, "बेटी! तू अच्छी तरह तो है, मैं तेरी बड़ाई बहुत दिनों से सुन रही हूं, भैरो ने भी तेरी बड़ी तारीफ की थी। मेरे पास बैठ और कह किशोरी कैसी है?"

कमला०। (बैठ कर) किशोरी का हाल क्या पूछती हो! वह बेचारी तो माधवी के कैद में पड़ी है, ललिता इन्द्रजीतसिंह के नाम का धोखा दे कर उसे ले आई॥

भैरो०। (चौंक कर) हैं! क्या यहां तक नौबत पहुंच गई!!

कमला०। जी हां, मैं वहां मौजूद न थी नहीं तो ऐसा न होने पाता॥

चपला०। खुलासा हाल कह क्या हुआ?

कमला ने सब खुलासा हाल किशोरी के धोखा खाने और ललिता के पकड़ लेने का सुनाकर कहा, "यह सब बखेड़ा (भैरोसिंह की तरफ इशारा करके) इन ही का मचाया हुआ है, न यह इन्द्रजीतसिंह बनकर शिवदत्तगढ़ जाते न बेचारी किशोरी की यह दशा होती॥"

चपला०। हां मैं सुन चुकी हूं। इसी कसूर पर बेचारी को शिवदत्त ने अपने यहां से निकाल दिया, खैर तूने यह बड़ा काम किया कि ललिता को पकड़ लिया, अब हमलोग अपना काम सिद्ध कर लेंगे॥

कमला०। आपलोगों ने क्या क्या किया और अब

यहां क्या करने का इरादा है ?

चपला ने भी अपना और इन्द्रजीतसिंह का सब हाल कह सुनाया। थोड़ी देर तक और बातचीत होती रही। सुबह की सुपेदी निकला ही चाहती थी कि ये लोग वहां से उठ खड़े हुए और एक पहाड़ी की तरफ चले गए॥
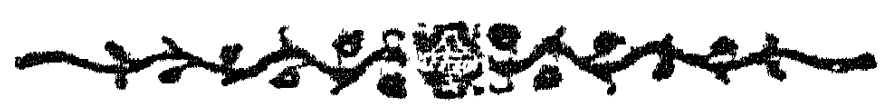
नौवां बयान।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह अब जबर्दस्ती करनेपर उतारू हुए और इस ताक में लगे कि माधवी सुरङ्ग का ताला खोल दीवान से मिलने के लिये महल में जाय तो मैं अपना रङ्ग दिखाऊं। तिलोत्तमा के होशियार कर देने से माधवी भी चेत गई थी और दीवान साहब के पास आना जाना उसने बिल्कुल बन्द कर दिया था मगर जब से पानी वाला सुरङ्ग बन्द किया गया तब से तिलोत्तमा इसी दूसरे सुरङ्ग की राह आने जाने लगी और इस सुरङ्ग की ताली जो माधवी के पास रहती थी अपने पास रखने लगी। पानी वाले सुरङ्ग के बन्द होते ही इन्द्रजीसिंह जान गए कि अब तो इन औरतों की आमदरफ़्त इसी सुरङ्ग से होगी मगर माधवी ही की ताक में लगे रहने से कई दिनों तक उनका मतलब सिद्ध न हुआ॥

अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह उस दालान में ज्यादे

टहलने लगे जिसमें सुरंग के दर्वाजे वाली कोठड़ी थी। एक दिन आधी रात के समय माधवी का पलंग खाली देख इन्द्रजीतसिंह ने जाना कि वह बेशक दीवान से मिलने गई है। वह भी पलंग पर से उठ खड़े हुए और खूँटी से लटकती हुई एक तलवार उतारने बाद बलते शमादान को बुझा उसी दालान में पहुंचे जो इस समय बिल्कुल अन्धेरा था और उसी सुरंगवाले दर्वाजे के बगल में छिप कर बैठ रहे। जब पहर रात बाकी रही उस सुरंग का दर्वाजा भीतर से खुला और एक औरत ने इस तरफ निकल कर फिर ताला बन्द करना चाहा, मगर इन्द्रजीतसिंह ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़ ताली छीन ली और कोठड़ी के अन्दर जा भीतर से ताला बन्द कर लिया॥

वह औरत माधवी थी जिसके हाथ से इन्द्रजीतसिंह ने ताली छीन ली, वह अन्धेरे में इन्द्रजीतसिंह को पहिचान न सकी, हां उसके चिल्लाने से कुमार जान गए कि यह माधवी है॥

इन्द्रजीतसिंह एक दफे उस सुरंग में जा ही चुके थे उसके रास्ते और सीढ़ियों को वह बखूबी जानते थे इस लिये अन्धेरे में उनको बहुत तकलीफ न हुई और वह अन्दाज से टटोलते हुए तहखाने की सीढ़ियां उतर गए। नीचे पहुंच के जब उन्होंने दूसरा दर्वाजा खोला तो उस सुरंग के अन्दर कुछ दूर पर रोशनी मालूम हुई जिसे देख उन्हें ताज्जुब हुआ और बहुत धीरे धीरे

आगे बढ़ने लगे, जब उस रोशनी के पास पहुंचे एक औरत नजर पड़ी जो हथकड़ी और बेड़ी के सबब उठने बैठने से बिल्कुल लाचार थी। चिराग की रोशनी में इन्द्रजीतसिंह ने उस औरत को और उसने इनको अच्छी तरह से देखा और दोनों चौंक पड़े॥

ऊपर जिक्र आ जाने से पाठक समझ ही गए होंगे कि यह किशोरी है जो तकलीफ के सबब बहुत ही कमजोर और सुस्त हो रही थी। इन्द्रजीतसिंह के दिल में उसकी तस्वीर मौजूद थी और इन्द्रजीतसिंह उसकी आंखों में पुतली की तरह डेरा जमाये हुए थे, एक ने दूसरे को बखूबी पहिचान लिया और ताज्जुब मिली हुई खुशी के सबब देर तक एक दूसरे की सूरत देखते रहे, इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने उसकी हथकड़ी और बेड़ी खोल डाली और बड़े प्रेम से हाथ पकड़कर कहा, "किशोरी! तू यहां कैसे आई?"

किशोरी०। (इन्द्रजीतसिंह के पैरों पर गिर कर) अभी तक तो मैं यही कहती थी कि मेरी बदकिस्मती मुझे यहां ले आई मगर नहीं, अब मुझे कहना पड़ा कि मेरी खुशकिस्मती ने मुझे यहां पहुंचाया और ललिता ने मेरे साथ बड़ी नेकी की जो मुझे कैद कर लाई नहीं तो न मालूम कब तक तुम्हारी सूरत.........

इससे ज्यादा बेचारी किशोरी कुछ न कह सकी और जार जार रोने लगी। इन्द्रजीतसिंह भी बराबर रो रहे थे, आखिर उन्होंने किशोरी को उठाया और

दोनों हाथों से उसकी कलाई पकड़े हुए बोले:—

हाय! मुझे कब उम्मीद थी कि मैं तुझे यहां देखूंगा, मेरी जिन्दगी में आज की खुशी याद रखने लायक होगी, अफसोस! दुश्मनों ने तुझे बड़ा ही कष्ट दिया॥

किशोरी०। बस अब मुझे किसी तरह की आरजू नहीं है, मैं ईश्वर से यही मांगती थी कि एक दिन तुम्हें अपने पास देख लूँ सो मुराद आज पूरी हो गई, अब चाहे माधवी मुझे मार भी डाले तो मैं खुशी से मरने को तैयार हूं॥

इन्द्र०। जब तक मेरे दम में दम है किसकी मजाल है जो तुझे दुःख दे अब तो किसी तरह इस सुरंग की ताली मेरे हाथ लग गई जिससे हम दोनों को निश्चय समझना चाहिये कि इस कैद से छुट्टी मिल गई, अगर जिन्दगी है तो मैं माधवी से समझ लूंगा वह जाती कहां है॥

इन दोनों को यकायक इस तरह के मिलाप से कितनी खुशी हुई यह वे ही जानते होंगे। दीन दुनिया की सुध भूल गए, यह याद ही नहीं रहा कि हम कहां जाने वाले थे, कहां हैं, क्या कर रहे हैं और क्या करना चाहिये। मगर यह खुशी बहुत ही थोड़ी देर के लिये थी क्योंकि इसी समय हाथ में मोमबत्ती लिये एक औरत उसी तरफ से आती हुई दिखाई दी जिधर इन्द्रजीतसिंह जानेवाले थे और जिसे देख ये दोनों चौंक पड़े॥

उस औरत ने इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंच और बदन का दाग दिखला अपने को जल्द जाहिर कर दिया कि वह चपला है ॥

चपला०। इन्द्रजीत! तुम यहां कैसे आये? (चारों तरफ देख कर) मालूम होता है बेचारी किशोरी को तुमने इसी जगह पाया है ॥

इन्द्र०। हां यह इसी जगह कैद थी मगर मैं नहीं जानता था। मैं तो माधवी के हाथ से जबर्दस्ती ताली छीन इस सुरङ्ग में चला आया और उसे चिल्लाती ही छोड़ आया ॥

चपला०। माधवी तो अभी इस सुरङ्ग की राह वहां गई थी!!

इन्द्र०। हां मैं दर्वाजे के पास छिपा खड़ा था, जैसे ही वह ताला खोल अन्दर पहुंची वैसे ही मैंने पकड़ लिया और ताली छीन इधर आ भीतर से ताला बन्द कर दिया ॥

चपला०। तुमने बहुत ही बुरा किया, इतनी जल्दी कर जाना मुनासिब न था, अब तुम दो रोज भी माधवी के पास गुजारा नहीं कर सकते क्योंकि वह बड़ी बद-कार और चाण्डालिन की तरह बेदर्द है अब तुम्हें पावे तो किसी न किसी तरह धोखा दे बिना जान लिये कभी न छोड़े ॥

इन्द्र०। मैं ऐसा न करता तो क्या करता? उधर जिस राह से तुम आती जाती थीं अर्थात् पानी वाले

सुरंग का मुहाना मेरे देखते देखते बिल्कुल बन्द कर दिया गया जिससे मुझे मालूम होगया कि तुम्हारे आनेजाने की खबर उस शैतान की बच्ची को लग गई और तुम्हारे मिलने या किसी तरह के मदद पहुंचने की उम्मीद बिल्कुल जाती रही, फिर नामर्दों की तरह मैं अपने को कब तक बनाये रहता ? और अब मुझे माधवी के पास लौट जाने की जरूरत ही क्या है ?

चपला० । बेशक हमलोगों की खबर माधवी को लग गई मगर तुम बिल्कुल नहीं जानते कि तिलोत्तमा ने कितना फसाद मचा रक्खा है और इधर महल की तरफ कितनी मजबूती कर रक्खी है । तुम किसी तरह इधर से नहीं निकल सकते । अफसोस ? अब हमलोग भारी खतरे में पड़ गए ॥

इन्द्र० । रात का तो समय है लड़भिड़ कर निकल जायँगे ॥

चपला० । तुम दिलावर हो, तुम्हारा ऐसा खयाल करना बहुत मुनासिब है, मगर (किशोरी की तरफ इशारा करके) इस बेचारी की क्या दशा होगी ? इसके सिवाय अब सवेरा भी हुआ ही चाहता है ॥

इन्द्र० । फिर क्या किया जाय ?

चपला० । (कुछ सोच कर) क्या तुम जानते हो इस समय तिलोत्तमा कहां है ?

इन्द्र० । जहां तक मैं खयाल करता हूं इस खोह के बाहर है ॥

चपला०। यह श्रीर भी मुश्किल है वह बड़ी ही चालाक है, इस समय जरूर किसी धुन में लगी होगी, वह हमलोगों का ध्यान दम भर के लिये भी नहीं भुलाती॥

इन्द्र०। इस समय हमारी मदद के लिये इस महल में श्रीर भी कोई मौजूद है या अकेली तुम ही हो?

चपला०। देवीसिंह, भैरोसिंह श्रीर पण्डित बद्रीनाथ तो महल के बाहर इधर उधर लुके छिपे मौजूद हैं मगर सूरत बदले हुए कमला इस सुरंग के मुहाने पर अर्थात् कमरे में खड़ी है मैं उसे अपनी हिफाजत के लिये छोड़ आई हूं॥

किशोरी०। (चौंक कर) कमला कौन?

चपला०। तुम्हारी सखी॥

किशोरी०। यहां कैसे आई?

चपला०। इसका हाल तो लम्बा चौड़ा है इस समय कहने का मौका नहीं, मुख़्तसर यह है कि तुमको धोखा देने वाली ललिता को उसने पकड़ लिया श्रीर खुद तुमको छुड़ाने के लिये आई है, यहां हमलोगों से भी मुलाकात हो गई। (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) बस अब यहां ठहर कर अपने को इस सुरंग के अन्दर ही फँसा कर मार डालना मुनासिब नहीं॥

इन्द्र०। बेशक यहां ठीक न होगा चले चलो जो होगा देखा जायगा॥

तीनों वहां से चल पड़े श्रीर सुरंग के दूसरे मुहाने

पर अर्थात् उस कमरे में पहुंचे जिसमें माधवी को दीवान साहब के साथ बैठे हुए इन्द्रजीतसिंह ने देखा था या जहां इस समय सूरत बदले हुए कमला मौजूद थी और रोशनी बखूबी हो रही थी। इन तीनों को देखते ही कमला चौंक पड़ी और किशोरी को गले लगा लिया मगर तुरत ही अलग होकर चपला से बोली, "सुबह की सुपेदी निकल आई यह बहुत ही बुरा हुआ॥"

चपला०। जो हो अब क्या कर सकते हैं!!

कमला०। खैर जो होगा देखा जायगा जल्द नीचे उतरो॥

इस खुशनुमा और आलीशान मकान के चारों तरफ बाग था, बाग के चारों तरफ ऊंची ऊंची चारदीवारियां बनी हुई थीं, बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ा फाटक था जहां बारी बारी से बीस आदमी हाथ में नङ्गी तलवार लिये घूम घूम कर पहरा देते थे। चपला और कमला कमन्द के सहारे बाग की पिछली दीवार नांघ कर पहुंचीं थीं और इस समय भी उसी तरफ से चारों निकल जाया चाहते थे॥

हम यह कहना भूल गए थे कि बाग के चारों कोनों में चार गुमटियां बनी हुई थीं जिनमें सौ सिपाहियों का डेरा था और आजकल वे लोग तिलोत्तमा के हुक्म से हरदम तैयार रहते थे। तिलोत्तमा ने उन लोगों को यह भी कह रक्खा था कि जिस समय मैं अपने बनाये हुए बम के गोले को जमीन पर पटकूं और उसकी भारी

आवाज तुम लोग सुनो, फौरन हाथ में नंगी तलवार लिये बाग के चारों तरफ फैल जाओ और जिस आदमी को आते या जाते देखो फौरन गिरफ्तार कर लो॥

चारों आदमी सुरंग का दर्वाजा खुला छोड़ नीचे उतरे और कमरे के बाहर हो बाग की पिछली दीवार की तरफ जैसे ही चले कि तिलोत्तमा की सूरत नजर पड़ी। चपला यह खयाल करके कि अब बहुत ही बुरा हुआ, तिलोत्तमा की तरफ लपकी और उसे पकड़ना चाहा, मगर वह शैतान लोमड़ी की तरह चक्कर मार निकल ही गई और एक किनारे पहुंच मसाले से भरा हुआ एक गेंद जमीन पर मारा जिसकी भारी आवाज चारों तरफ गूँज गई और उसके कहे मुताबिक सिपाहियों ने होशियार होकर चारों तरफ से बाग को घेर लिया॥

तिलोत्तमा के भाग कर निकल जाते ही ये चारों आदमी जिनके आगे आगे हाथ में नंगी तलवार लिये इन्द्रजीतसिंह थे बाग की पिछली दीवार की तरफ न जाकर सदर फाटक की तरफ लपके मगर वहां पहुंचते ही पहरे वाले सिपाहियों से रोके गए और मारकाट शुरू हो गई। इन्द्रजीतसिंह ने तलवार, चपला और कमला ने खंजर चलाने में अच्छी बहादुरी दिखलाई॥

हमारे ऐयार लोग जो बाग के बाहर चारों तरफ छुके छिपे खड़े थे, तिलोत्तमा के चलाये हुए गोले की आवाज सुन और किसी भारी फसाद का होना खयाल

कर फाटक पर आ जुटे और खंजर निकाल माधवी के सिपाहियों पर टूट पड़े। बात की बात में माधवी के बहुत से सिपाहियों की लाशें जमीन पर दिखाई देने लगीं और बड़ी बहादुरी के साथ लड़ते भिड़ते हमारे बहादुर लोग किशोरी को साथ ले निकल ही गए॥

ऐयार लोग तो दौड़ने और भागने में तेज होतेही हैं, इन लोगों का भाग जाना कोई आश्चर्य न था मगर गोद में किशोरी को उठाये हुए इन्द्रजीतसिंह उन लोगों के बराबर कब दौड़ सकते थे और ऐयार लोग भी ऐसी अवस्था में उनका साथ कैसे छोड़ सकते थे? लाचार जैसे बना उन दोनों को भी साथ लिये हुए मैदान का रास्ता लिया। इस समय पूरब की तरफ सूर्य्य की लालिमा अच्छी तरह फैल चुकी थी॥

माधवी के दीवान अग्निदत्त का मकान इस बाग से बहुत दूर न था और वह बड़े सवेरे उठा करता था, तिलोत्तमा के चलाये हुए गोले की आवाज उसके कान में पहुंच ही चुकी थी बाग के दर्वाजे पर लड़ाई होने की खबर भी उसे उसी समय मिल गई। वह शैतान का बच्चा बहुत ही दिलेर और लड़ाका था, फौरन ढाल तलवार ले मकान के नीचे उतर आया और अपने यहां रहने वाले कई सिपाहियों को साथ ले बाग के दर्वाजे पर पहुंच कर देखा कि बहुत से सिपाहियों की लाशें जमीन पर पड़ी हुई हैं और दुश्मन का पता नहीं॥

बाग के चारों तरफ फैले हुए सिपाही भी फाटक पर

आ जुटे थे जो गिनती में एक सौ से ज्यादे थे। अग्निदत्त ने सभों को ललकारा और साथ ले इन्द्रजीतसिंह का पीछा किया। थोड़ी ही दूर पर उन लोगों को पा लिया और चारों तरफ से घेर मार काट शुरू कर दी॥

अग्निदत्त की निगाह किशोरी पर पड़ी, अब क्या पूछना था सब तरफ का खयाल छोड़ इन्द्रजीतसिंह के ऊपर टूट पड़ा। बहुत से आदमियों से लड़ते हुए इन्द्र-जीतसिंह किशोरी को सँभाल न सके और उसे छोड़ तलवार चलाने लगे। अग्निदत्त को मौका मिला, इन्द्र-जीतसिंह के हाथ से जख्मी होने पर भी उसने दम न लिया और किशोरी को गोद में उठा ले भागा। यह देख इन्द्रजीतसिंह की आंखों में खून उतर आया, इतनी भीड़ को काट कर उसका पीछा तो न कर सके मगर अपने ऐयारों को ललकार कर इस तरह की लड़ाई की कि उन सौ में से आधे तो बेदम होकर जमीन पर गिर पड़े और बाकी अपने सर्दार को चले गए देख जान बचा भाग गए। इन्द्रजीतसिंह भी बहुत से जख्मों के लगने से बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। चपला, कमला और भैरोसिंह वगैरह भी बहुत ही बेदम हो रहे थे तौ भी वे लोग बेहोश इन्द्रजीतसिंह को उठा वहां से चले गए और फिर किसी की निगाह पर न चढ़े॥

दसवां बयान ।

जख्मी इन्द्रजीतसिंह को लिये हुए उनके ऐयार लोग वहां से दूर निकल गए। बेचारी किशोरी को दुष्ट अग्निदत्त उठा कर अपने घर ले गया। यह सब हाल देख तिलोत्तमा वहां से चलती बनी और बाग के अन्दर कमरे में पहुंच कर देखा कि सुरंग का दर्वाजा खुला हुआ है और ताली भी उसी जगह जमीन पर पड़ी है। उसने ताली उठा ली और सुरंग के अन्दर जा किवाड़ बन्द करती हुई माधवी के पास पहुंची। माधवी की अवस्था बहुत ही खराब हो रही थी, दीवान साहब पर बिल्कुल भेद खुल गया होगा, यह समझ मारे डर के वह घबड़ा गई थी और निश्चय होगया था कि अब किसी तरह कुशल नहीं है क्योंकि बहुत दिनों की लापरवाही में दीवान साहब ने तमाम रिआया और फौज को अपने कब्जे में कर लिया था। तिलोत्तमा ने वहां पहुंचते ही माधवी से कहा:—

तिलो०। अब क्या सोच रही है और क्यों रोती है? मैंने पहिले ही कहा था कि इन बखेड़ों में मत फँस, इसका नतीजा अच्छा न होगा, बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग बला की तरह जिसके पीछे पड़ते हैं उसको सत्यानाश कर डालते हैं, तूने मेरी बात न मानी अब यह दिन देखने की नौबत पहुंची॥

माधवी०। बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार यहां नहीं

आया, इन्द्रजीत जबर्दस्ती मेरे हाथ से ताली छीनकर चला गया मैं कुछ न कर सकी !!

तिलो०। आखिर तू उनका कर ही क्या सकती थी?

माधवी० । अब उन लोगों का क्या हाल है ?

तिलो० । वे लोग लड़ते भिड़ते तुम्हारे सैकड़ों आदमियों को यमलोक पहुंचाते निकल गए, किशोरी को आपके दीवान साहब उठा लाये, जब उनके हाथ किशोरी लग गई तब उन्हें लड़ने भिड़ने की जरूरत ही क्या थी ? किशोरी की सूरत देख तो आस्मान पर उड़ती हुई चिड़ियां भी नीचे उतर आती हैं दीवान साहब क्या चीज हैं,अब तो वह दुष्ट इस धुन में होगा कि तुम्हें मार पूरी तरह से राजा बन जाय और किशोरी को रानी बनावे, तुम उसका कर ही क्या सकती हो ॥

माधवी० । हाय ! मेरे बुरे कर्मों ने मुझे मिट्टी में मिला दिया, अब मेरी किस्मत में राज्य नहीं है, अब तो मालूम होता है कि मैं भिखमंगियों की तरह मारी मारी फिरूँगी ॥

तिलो०। हां अगर यहां से किसी तरह जान बचा कर निकल जाओगी तो भीख मांग कर भी जान बचा लोगी नहीं तो बस यह भी उम्मीद नहीं है ॥

माधवी०। क्या दीवान साहब मुझसे इस तरह की बेमुरौवती करेंगे ?

तिलो० । अगर तुझे उनपर भरोसा है तो रह और

देख कि क्या २ होता है, मैं तो अब एक दम भी टिकने वाली नहीं ॥

माधवी०। अगर किशोरी उसके हाथ न पड़ गई होती तो मुझे किसी तरह की उम्मीद होती और कोई बहाना कर सकती मगर अब तो............

इतना कह माधवी बेतरह रोने लगी, यहां तक कि हिचकी बँध गई और तिलोत्तमा के पैरों पर गिर कर बोली:—

"मैं कसम खाती हूं कि आज से तेरे हुक्म के खिलाफ कभी कोई काम न करूँगी ॥"

तिलो०। अगर ऐसा है तो मैं भी कसम खा कर कहती हूं कि तुझे फिर इसी दर्जे पर पहुंचाऊँगी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों और दीवान साहब से ऐसा बदला लूंगी कि वे भी याद करेंगे ॥

माधवी०। बेशक मैं तेरा हुक्म मानूंगी और जो कहेगी सो करूँगी ॥

तिलो०। अच्छा तो आज रात को यहां से निकल चलना और जहां तक जमा पूंजी अपने साथ ले चलते बने ले चलना चाहिये ॥

माधवी०। बहुत अच्छा मैं तैयार हूं जब चाहे चलो मगर यह तो कहो कि मेरी इन सखी सहेलियों की क्या दशा होगी?

तिलो०। बुरों का संग करने से जो फल लोग भोगते हैं सो ये सब भी भोगेंगी मैं इसका कहां तक खयाल

करूँगी ? जब अपने पर आ बनती है तो कोई किसी की खबर नहीं लेता ॥

दीवान अग्निदत्त किशोरी को लेकर भागे तो सीधे अपने घर में आ घुसे, वे किशोरी की सूरत पर ऐसे मोहित हुए कि तनोबदन की सुध जाती रही, इन्द्रजीतसिंह और उनके ऐयारों को लोगों ने गिरफ्तार किया या नहीं और उनकी बदौलत सभों की क्या दशा हुई, इसकी परवाह उसे जरा भी न रही, असल तो यह है कि इन्द्रजीतसिंह को वे पहिचानते भी न थे। बेचारी किशोरी की क्या दशा थी और वह किस तरह रो रो कर अपने सिर के बाल नोच रही थी, इसके बारे में इतना ही कहना बहुत है कि अगर दो दिन तक इस की यही दशा रही तो किसी तरह जीती न बचेगी और हा ! इन्द्रजीतसिंह, हा ! इन्द्रजीतसिंह, कहते कहते प्राण छोड़ देगी ॥

दीवान साहब के घर में उनकी जोरू और किशोरी ही के बराबर एक कुंआरी लड़की भी थी जिसका नाम कामिनी था और वह जितनीही खूबसूरत थी उतनीही स्वभाव की भी अच्छी थी। दीवान साहब की स्त्री का भी स्वभाव और चालचलन अच्छा था मगर वह बेचारी अपने पति के दुष्ट स्वभाव और बुरे व्यवहारों से बराबर दुःखी रहा करती थी और डर के मारे कभी किसी बात में कुछ रोक टोक न करती तिसपर भी आठ दस दिन पीछे वह अग्निदत्त के हाथ से जरूर मार खाया करती ॥

बेचारी किशोरी को अपनी जोरू और लड़की के हवाले कर हिफाजत करने के अतिरिक्त समझाने बुझाने की भी ताकीद कर दीवान साहब बाहर चले आये और अपने दीवानखाने में बैठ सोचने लगे कि किशोरी को किस तरह राजी करना चाहिये, यह औरत कौन और किसकी लड़की है, जिन लोगों के साथ यह थी वे लोग कौन हैं और यहां आकर धूम फसाद मचाने की उन्हें क्या जरूरत थी? चाल ढाल और पोशाक से वे लोग ऐयार मालूम पड़ते थे मगर यहां उन लोगों के आने का क्या सबब है! इसी सोच बिचार में अग्निदत्त को आज स्नान तक करने की नौबत न आई, दिनभर इधर उधर घूमते, लाशों को ठिकाने पहुंचाते और तहकीकात करते बीत गया मगर किसी तरह इस बखेड़े का ठीक पता न लगा, हां महल के पहरेवालों ने इतना कहा कि दो तीन दिन से तिलोत्तमा हमलोगों पर सख़्त ताकीद रखती थी और हुक्म दे गई थी कि जब मेरे चलाये बस्त्र के गोले की आवाज तुम लोग सुनो तो फौरन मुस्तैद हो जाओ और जिसको आते जाते देखो गिरफ्तार कर लो ॥

अब दीवान साहब का शक माधवी और तिलोत्तमा के ऊपर हुआ और देर तक सोचने बिचारने के बाद निश्चय कर लिया कि इस बखेड़े का हाल बेशक वे दोनों पहिले ही से जानती थीं मगर भेद मुझसे छिपाये रखने का कोई विशेष कारण अवश्य है ॥

चिराग जलने के बाद अग्निदत्त अपने घर पहुंचा और किशोरी के पास न जाकर निराले में अपनी स्त्री के बुलाकर पूछा कि "उस औरत की जुबानी उसका कुछ हालचाल तुम्हें मालूम हुआ या नहीं?"

अग्निदत्त की स्त्री ने कहा,—"हां उसका हाल मालूम हो गया, वह महाराज शिवदत्त की लड़की है और उसका नाम किशोरी है राजा बीरेन्द्रसिंह के लड़के इन्द्रजीतसिंह पर रानी माधवी मोहित हो गई थी और उनको अपने यहां किसी तरह फँसा लाई थी और खोह में रख छोड़ा था। इन्द्रजीतसिंह का प्रेम किशोरी पर था इसलिये उसने ललिता को भेज कर धोखा दे किशोरी को भी अपने फन्दे में फँसा लिया। वह भी कई दिनों से यहां कैद थी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग भी कई दिनों से इस शहर में टिके हुए थे, किसी तरह मौका मिलने पर इन्द्रजीतसिंह किशोरी को ले खोह से बाहर निकल आये और यहां तक नौबत पहुंची॥

राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों का नाम सुन मारे डर के अग्निदत्त कांप उठा, बदन के रोंगटे खड़े हो गए, घबड़ाया हुआ बाहर निकल आया और अपने दीवानखाने में मसनद के ऊपर जा लेटा और भूखा प्यासा आधी रात तक सोचता रह गया कि अब क्या करना चाहिये!!

अग्निदत्त समझ गया कि कोतवाल साहब को जरूर

बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ही ने पकड़ लिया है, अब कि-शोरी को अपने यहां रखने में किसी तरह जान न बचेगी, तिसपर भी वह किशोरी को छोड़ा नहीं चाहता था और सोचते बिचारते जब उसका जी ठिकाने आता तब यही कहता कि चाहे जो हो किशोरी को न छोडूँगा ॥

किशोरी को अपने यहां रख कर सलामत रहने के लिये उसे सिवाय इसके और कोई तर्कीब न सूझी कि वह माधवी को मार डाले और स्वयं राजा बन बैठे। आखिर इसी सलाह को उसने ठीक किया और अपने घर से निकल माधवी से मिलने के लिये महल की तरफ रवाना हुआ और वहां पहुंचकर बिल्कुल बातें मामूली के खिलाफ देख और भी ताज्जुब में हो गया। उसे उम्मीद थी कि खोह का दर्वाजा बन्द होगा मगर नहीं, खोह का दर्वाजा खुला हुआ था और माधवी की कुल सखियां जो खोह के अन्दर रहती थीं, महल में ऊपर नीचे चारों तरफ फैली हुई दिखाई पड़ीं जो रोती और इधर उधर माधवी को खोजती थीं ॥

आधी रात से ज्यादे तो जा ही चुकी थी, बाकी रात दीवान साहब ने माधवी की सखियों के इजहार लेने में बिता दी और दिन रात का पूरा अखण्ड ब्रत किये रहा, देखा चाहिये इसका फल क्या मिलता है ॥

शुरू से लेकर माधवी के भाग जाने तक का हाल उसकी सखियों ने दीवान साहब से कह सुनाया आखीर

में कहा कि सुरङ्ग की ताली माधवी अपने पास रखती थी इसलिये हमलोग लाचार थीं यह सब हाल आप से न कह सकीं ॥

अग्निदत्त दांत पीस कर रह गया, आखिर यही निश्चय किया कि परसों दसहरा(विजयदसमी)है गद्दी पर खुद बैठ राजा बन नजरें लूंगा फिर जो होगा देखा जायगा। सुबह जब वह अपने घर पहुंचा और पलङ्ग पर जाकर लेटना चाहा वैसे ही तकिये के पास एक तह किये हुए कागज पर उसकी नजर पड़ी, खोल कर देखा तो उसी की तस्वीर मालूम पड़ी, छाती पर चढ़ा हुआ एक भयानक सूरत का आदमी उसके गले पर खंजर फेर रहा था—इसे देखते ही वह चौंक पड़ा। डर और चिन्ता ने उसे ऐसा पटका कि बुखार चढ़ आया, मगर थोड़ी ही देर में खड़ा हो घर के बाहर निकल तहकी-कात करने लगा ॥
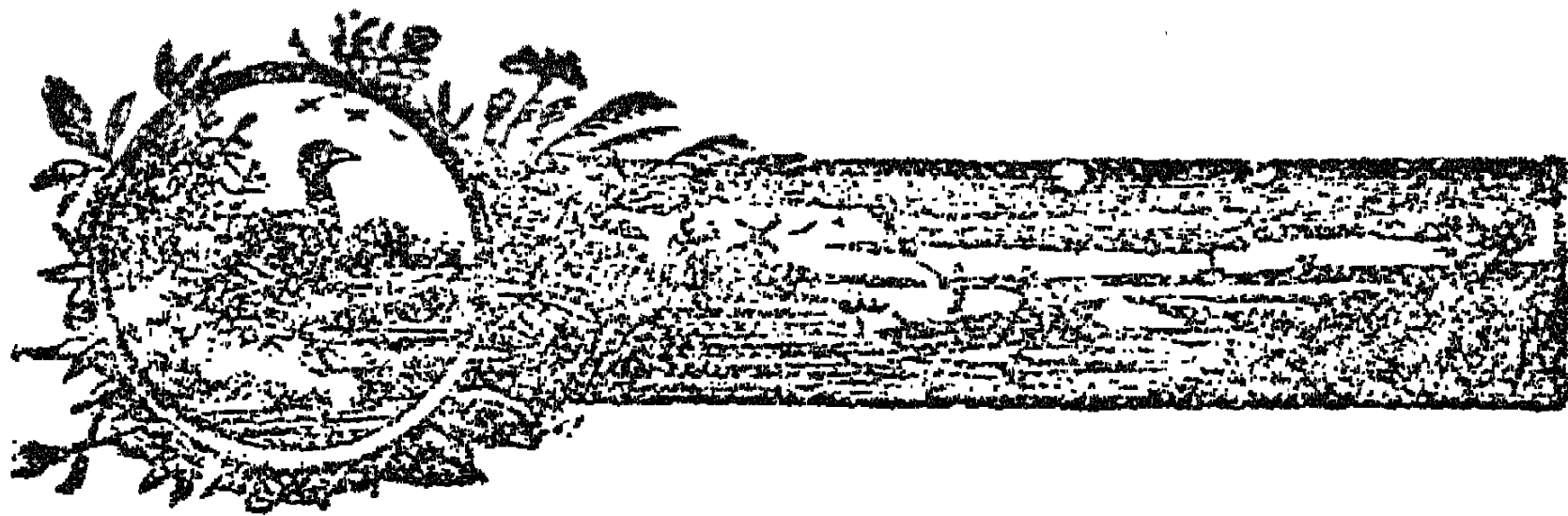
ग्यारहवां बयान ।

हम ऊपर के बयान में सुबह की सीनरी लिख कर कह आये हैं कि राजा बीरेन्द्रसिंह, कुंअर आनन्दसिंह और तेजसिंह सेना सहित किसी तरफ जा रहे हैं। पाठक तो समझ ही गए होंगे कि इन्होंने जरूर किसी तरफ चढ़ाई की है। बेशक ऐसा ही है, राजा बीरेन्द्र-सिंह ने यकायक माधवी की राजधानी गयाजी पर धावा कर दिया जिसका लेना इस समय उन्होंने बहुत ही सहज समझ रक्खा था, क्योंकि माधवी के चाल-चलन की खबर उन्हें बखूबी लग गई थी, वह जानते ही थे कि राज्य काज पर ध्यान न दे दिन रात ऐश में डूबे रहने वाले राजा का राज्य कितना कमजोर हो जाता है, रैयतों को ऐसे राजा से नफरत हो जाती है और दूसरे नेक और धर्मात्मा राजा के पहुंचने के लिये वे लोग कितनी मन्नतें मानते हैं॥

बीरेन्द्रसिंह का खयाल बहुत ही ठीक था, गया दखल करने में इनको जरा भी तकलीफ न हुई, किसी ने उनका मुकाबला न किया। एक तो उनका बढ़ा चढ़ा प्रताप ही ऐसा था कि कोई मुकाबला करने का साहस भी नहीं कर सकता था, दूसरे बेदिल रिआया और फौज तो चाहती ही थी कि बीरेन्द्रसिंह के ऐसा कोई यहां का भी राजा हो। चाहे दिन रात ऐश में डूबे और शराब के नशे में चूर रहने वाले मालिकों को कुछ भी

खबर न हो मगर बड़े बड़े जमींदारों और राजकर्मचारियों को माधवी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह के खिंचाखिंची की खबर लग चुकी थी और उन्हें मालूम हो चुका था कि आजकल बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग राजगृही में बिराज रहे हैं॥

राजा बीरेन्द्रसिंह ने बेरोकटोक शहर में पहुंच कर अपना दखल जमा लिया और अपने नाम की मुनादी करवा दी। यहां के दो एक राजकर्मचारी जो दीवान अग्निदत्त के दोस्त और खैरखाह थे, रङ्ग कुरङ्ग देख कर भाग गए, बाकी फौजी अफसरों और रैयतों ने उनकी अमलदारी खुशी से कबूल कर ली जिसका हाल राजा बीरेन्द्रसिंह को इसीसे मालूम हो गया कि उन लोगों ने बेखौफ और हँसते हुए दर्बार में पहुंच कर मुबारकबादी के साथ नजरें गुजरानीं॥

बिजयदसमी के एक दिन पहिले यह गया का राज्य राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे में आ गया और बिजयदसमी को अर्थात् दूसरे दिन प्रातःकाल उनके लड़के आनन्दसिंह को यहां की गद्दी पर बैठे हुए लोगों ने देखा और नजरें दीं। अपने छोटे लड़के कुंअर आनन्दसिंह को गया की गद्दी दे दूसरे ही दिन राजा बीरेन्द्रसिंह चुनार लौट जाने वाले थे मगर उनके रवाना होने के पहिले ही ऐयार लोग जख्मी और बेहोश कुंअर इन्द्रजीतसिंह को लिये हुए गयाजी में पहुंच गए जिसे देख राजा बीरेन्द्रसिंह को अपना इरादा तोड़ देना पड़ा और

बहुत दिन से बिछुड़े हुए प्यारे लड़के को आज इस अवस्था में पाकर अपने तनोबदन की सुध भुला देनी पड़ी ॥

राजा बीरेन्द्रसिंह के मौजूद होने पर भी गयाजी का बड़ा भारी राजभवन सूना हो रहा था क्योंकि उसमें रहने वाले रानी माधवी और दीवान अग्निदत्त के रिश्तेदार लोग भाग गए थे और हुक्म के मुताबिक कि-सीने भी उनको भागते समय नहीं रोका था। इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों लड़के और ऐयारों के सिवाय थोड़े से फौजी अफसरों का डेरा इस महल में पड़ा हुआ है, ऐयारों में भी सिर्फ भैरोसिंह, तारासिंह यहां मौजूद हैं बाकी कुल ऐयार चुनार लौटा दिये गए। शहर के इन्तजाम में पहिले यह किया गया कि चीठी या अर्जी डालने के लिये एक तरफ छेद करके दो बड़े बड़े सन्दूक राजभवन के फाटक के दोनों बगल लटका दिये गए और मुनादी करवा दीगई कि जिसको अपना सुख दुःख अर्ज करना हो दर्बार में हाजिर होकर अर्ज किया करें और जो किसी कारण से हाजिर न हो सकें वह अर्जी लिख कर इन्हीं सन्दूकों में डाल दिया करें। हुक्म था कि बारी बारी से ये सन्दूक दिन रात में छः मर्तबे कुंअर आनन्दसिंह के सामने खोले जाया करें। इस इन्तजाम से गयाजी की रिआया बहुत ही प्रसन्न थी ॥

पहर भर से रात ज्यादे जा चुकी है, एक सजे हुए

कमरे में जिसमें रोशनी अच्छी तरह हो रही है, छोटी सी खूबसूरत मसहरी .पर जख्मी कुंअर इन्द्रजीतसिंह लेटे हुए एक हलकी दुलाई गर्दन तक ओढ़े हैं, आज कई दिनों पर इन्हें होश आई है इससे अचंभे में आकर इस नये कमरे के चारों तरफ निगाह दौड़ा कर अच्छी तरह देख रहे हैं। बगल में बायें हाथ का ढासना पलंगड़ी पर दिये हुए उनके पिता राजा बीरेन्द्रसिंह बैठे उनका मुंह देख रहे हैं और कुछ पायताने की तरफ हट कर पाटी पकड़े कुंअर आनन्दसिंह बैठे बड़े भाई की तरफ देख रहे हैं। पायताने की तरफ पलँगड़ी के नीचे बैठे भैरोसिंह और तारासिंह धीरे धीरे तलवा भस रहे हैं, कुंअर आनन्दसिंह के बगल में देवीसिंह बैठे हैं। इनके इलावे वैद्य, जर्राह और बहुत से मुसाहब वगैरह चारों तरफ बैठे हैं, कमरे के बाहर बहुत से सिपाही नंगी तलवार लिये पहरा दे रहे हैं। थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा रहा, इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने अपने पिता की तरफ देखकर पूछा :—

इन्द्रजीत०। यह कौन सी जगह है? यह मकान किसका है?

बीरेन्द्र०। यह चन्द्रदत्त की राजधानी गयाजी है, ईश्वर की कृपा से आज यह हमारे कब्जे में आगई है, यह मकान भी चन्द्रदत्त ही के रहने का है, हमलोग इस शहर में अपना दखल जमा चुके थे जब तुम यहां पहुंचाये गये॥

यह सुनकर इन्द्रजीतसिंह चुप हो रहे और बहुत कुछ सोचने लगे, साथ ही इसके राजगृही में दीवान अग्निदत्त के साथ लड़ाई का समां उनकी आंखों के आगे घूम गया और किशोरी को याद कर अफसोस करने लगे। इनके बेहोश होने बाद क्या क्या हुआ और किशोरी पर क्या बीती, इसके जानने के लिये जी बेचैन था मगर पिता का लेहाज कर भैरोसिंह से कुछ पूछ न सके ऊंची सांस लेकर रह गए। देवीसिंह उनके जी का भाव समझ गए और बिना पूछेही कुछ कहने का मौका समझ कर बोले, "राजगृही में लड़ाई के समय जितने आदमी आप के साथ थे ईश्वर की कृपा से सब बच गए और अपने अपने ठिकाने पर हैं, केवल आप ही को इतना कष्ट भोगना पड़ा॥"

देवीसिंह के इतना कहने से इन्द्रजीतसिंह की बेचैनी बिल्कुल जाती तो नहीं रही मगर कुछ कम हो गई। इतने में दिल बहलाने का ठिकाना समझकर देवीसिंह फिर बोल उठे :—

देवी०। अर्जियों वाला सन्दूक हाजिर है उसके देखने का समय भी हो गया॥

इन्द्र०। कैसा सन्दूक?

आनन्द०। यहां महल के फाटक पर दो सन्दूक इसलिये रख दिये गए हैं कि जो लोग दर्बार में हाजिर होकर अपना दुःख सुख न कह सकें वे लोग अर्जी लिख कर इस सन्दूक में डाल दिया करें॥

इन्द्र०। बहुत मुनासिब, इससे रैयतों के दिल का हाल अच्छी तरह मालूम हो सकता है, इस तरह के कई सन्दूक शहर में इधर उधर रखवा देना चाहिये क्योंकि बहुत से आदमी खौफ से फाटक तक आते भी हिचकेंगे॥

आनन्दसिंह०। बहुत खूब, कल इसका इन्तजाम हो जायगा॥

बीरेन्द्र०। हमने यहां की गद्दी पर आनन्दसिंह को बैठा दिया॥

इन्द्र०। बड़ी खुशी की बात है, यहां का इन्तजाम यह बहुत अच्छी तरह कर सकेंगे क्योंकि यह तीर्थ का मुकाम है और इनको पौराणों से बड़ाही प्रेम है और उसे अच्छी तरह समझते भी हैं (देवीसिंह की तरफ देख कर) हां साहब वह सन्दूक मँगवाइये जरा दिल बहले॥

हाथ भर का चौखूटा सन्दूक हाजिर किया गया और उसे खोलकर बिल्कुल अर्जियां जिनसे वह सन्दूक भर रहा था बाहर निकाली गईं, पढ़ने से मालूम हुआ कि यहां की रिआया नये राजा की अमलदारी से बहुत प्रसन्न है और मुबारकबाद दे रही है, हां एक अर्जी उसमें ऐसी निकली जिसके पढ़ने से सभों को तरद्दुद ने आ घेरा और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये? पाठकों की दिलचस्पी के लिये हम उस अर्जी की नकल नीचे लिख देते हैं॥

"हमलोग मुद्दत से मनाते थे कि यहां की गद्दी पर हुजूर को या हुजूर के खानदान में से किसी को बैठे देखें,

ईश्वर ने आज हमलोगों की आर्जू पूरी की और कम्बख्त माधवी और अग्निदत्त का बुरा साया हमलोगों के सर से हटाया, चाहे उन दोनों दुष्टों का खौफ अभी तक हम लोगों को बना हो, मगर फिर भी हुजूर के भरोसे पर हमलोग बिना मुबारकबाद दिये और खुशी मनाये नहीं रह सकते। वह डर इस बात का नहीं है कि यहां फिर उन दुष्टों की अमलदारी होगी तो कष्ट भोगना पड़ेगा, राम राम ऐसा तो कभी होही नहीं सकता, हम लोगों को यह गुमान स्वप्न में भी नहीं हो सकता, वह डर दूसराही है जो हमलोग नीचे अर्ज करते हैं। आशा है कि बहुत जल्द उससे हमलोगों की रिहाई होगी नहीं तो महीनेही भर में यहां की चौथाई रिआया यमलोक में पहुंच जायगी, मगर नहीं हुजूर के नामी और अपने आप नजीर रखने वाले ऐयारों के हाथ से वे बेईमान हरामजादे कब बच सकते हैं जिनके डर से हम लोगों को पूरी नींद सोना कभी नसीब नहीं होता॥

कुछ दिन से दीवान अग्निदत्त की तरफ से थोड़े बदमाश इस काम के लिये मुकर्रर कर दिये गए हैं कि अगर कोई आदमी अग्निदत्त के खिलाफ नजर आवे तो बेधड़क उसका सर चोरी से रात के समय काट डालें या दीवान साहब को जब रुपये की जरूरत हो तो जिस अमीर या जमींदार के घर में चाहें डाका दें या चोरी करके उन्हें कंगाल बना दें। इसकी फरियाद कहीं सुनी नहीं जाती, इसी वजह से और बाहरी चोरों को भी

अपना घर भरने और हम लोगों के सताने का मौका मिलता है। हम लोगों ने कभी उन दुष्टों की सूरत नहीं देखी और नहीं जानते कि वे लोग कौन हैं और कहां रहते हैं जिन के खौफ से दिन रात हम लोग कांपा करते हैं॥"

इस अर्जी के नीचे कई मशहूर और नामी रईसों और जमींदारों के दस्तखत थे। वह अर्जी उसी समय देवीसिंह के हवाले कर दी गई और देवीसिंह ने वादा किया कि एक महीने के अन्दर इन दुष्टों को जिन्दः या मरे हुए हुजूर में हाजिर करेंगे॥

इसके बाद जर्राहों ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह के जख्मों को खोला और दूसरी पट्टी बदली, कविराज ने दवा खिलाई और हुक्म पाकर सब अपने ठिकाने चले गए। देवीसिंह भी उसी समय बिदा हो न मालूम कहां चले गए और राजा बीरेन्द्रसिंह भी वहां से उठ कर अपने कमरे में चले गए॥

इस कमरे के दोनों तरफ छोटी छोटी दो कोठड़ियां थीं, एक में सन्ध्यापूजा का सामान दुरुस्त था और दूसरे में खाली फर्श पर एक मसहरी बिछी हुई थी जो उस मसहरी से कुछ छोटी थी जिसपर कुंअर इन्द्रजीतसिंह आराम करते थे, कोठड़ी में से वह मसहरी बाहर निकाली गई और कुंअर आनन्दसिंह के सोने के लिए कुंअर इन्द्रजीतसिंह की मसहरी के पास बिछाई गई, भैरोसिंह और तारासिंह ने भी दोनों मसहरियों के नीचे

अपना बिस्तरा जमाया, सिवाय इन चारों के उस कमरे में और कोई भी न रहा, इन लोगों ने रात भर आराम से काटी और सवेरा होने पर आंख खुलते ही एक विचित्र तमाशा देखा ॥

सुबह के पहिले दोनों ऐयारों की आंख खुली और हैरतभरी निगाहों से चारों तरफ देखने लगे, इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी जागे और फूलों की खुशबू जो इस कमरे में बहुत देर पहिले ही से भर रही थी लेने और दोनों ऐयारों की तरह ताज्जुब से चारों तरफ देखने लगे ॥

आनन्द० । ये खुशबूदार फूलों के गजरे और गुलदस्ते इस कमरे में किसने सजाये हैं ?

इन्द्र० । ताज्जुब है ! हमारे आदमी बिना हुक्म पाये ऐसा कब कर सकते हैं ॥

भैरो० । हम दोनों आदमी घंटे भर पहिले से उठ कर इसपर गौर कर रहे हैं, मगर कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या मामला है ॥

आनन्द० । गुलदस्ते भी बहुत खूबसूरत और बेशकीमती मालूम पड़ते हैं ॥

तारासिंह० । (एक गुलदस्ता उठा कर और पास ला कर) देखिए इस सोने के गुलदस्ते पर क्या उम्दः मीने का काम किया हुआ है ! बेशक बड़े शौकीन का बनवाया हुआ है, इसी ढंग के सब गुलदस्ते हैं ॥

भैरो० । हां एक बात ताज्जुब की और है जो अभी

आप से नहीं कही ॥

इन्द्र० । वह क्या ?

भैरो० । (हाथ का इशारा करके) ये दोनों दर्वाजे सिर्फ घुमाकर मैंने खुले छोड़ दिये थे मगर सुबह को और दर्वाजों की तरह इसे भी बन्द पाया ॥

तारा० । (आनन्दसिंह की तरफ देख कर) शायद रात को आप उठे हों ॥

आनन्द० । नहीं ॥

इस तरह देर तक ये लोग ताज्जुब भरी बातें करते रहे मगर अक्ल ने कुछ गवाही न दी कि यह क्या मामला है। राजा बीरेन्द्रसिंह भी आ पहुंचे, उनके साथ और भी कई मुसाहब लोग आ जमे और इस आश्चर्य की बात को सुनकर सोचने और गौर करने लगे। कई बुजदिलों को भूत प्रेत और पिशाच का ध्यान आया मगर महाराज और दोनों कुमारों के खौफ से कुछ बोल न सके क्योंकि ये लोग ऐसे डरपोक और इस खयाल के आदमी न थे और न ऐसे आदमियों को अपने साथ रखना पसन्द करते थे ॥

उन फूलों के गजरों और गुलदस्तों को किसीने न छेड़ा, वे ज्यों के त्यों जहां के तहां लगे रह गए, रईसों की हाजरी, शहर के इन्तजाम में दिन बीत गया और रात को फिर कल की तरह दोनों भाई मसहरी पर सो रहे, दोनों ऐयार भी मसहरी के बगल में जमीन पर लेट गए मगर आपुस में मिलजुल कर बारी बारी से

जागते रहने का विचार दोनों ने कर लिया था और बीच में एक लम्बी छड़ी इसलिये रख ली थी कि अगर रात को किसी समय कोई ऐयार कुछ देखे तो बिना मुंह से बोले लकड़ी के इशारे से दूसरे को उठा दे। इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने भी कह रक्खा था कि अगर घर में किसी को देखना तो चुपके से हमें जगा देना जिसमें हमलोग भी देख लें कि कौन है और कहां से आता है ॥

आधी रात से कुछ ज्यादे जा चुकी है, कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह गहरी नींद में बेसुध पड़े हैं, पहरे के मुताबिक लेटे लेटे तारासिंह दर्वाजे की तरफ देख रहे हैं, यकायक पूरब तरफ वाली कोठड़ी में कुछ खटका हुआ, तारासिंह जरा घूम गए और पड़े पड़े उस कोठड़ी की तरफ देखने लगे। बारीक चादर पहिले ही से दोनों ऐयारों के मुँह पर पड़ी हुई थी और रोशनी अच्छी तरह हो रही थी ॥

कोठड़ी का दर्वाजा धीरे धीरे खुलने लगा, तारासिंह ने लकड़ी के इशारे से भैरोसिंह को उठा दिया और बड़ी होशियारी से घूमकर कोठड़ी की तरफ देखने लगे। कोठड़ी के दर्वाजे का एक पल्ला अच्छी तरह खुल गया और एक निहायत हसीन और कमसिन औरत किवाड़ पर हाथ रक्खे खड़ी दोनों मसहरियों की तरफ देखती दिखाई पड़ी। भैरोसिंह और तारासिंह ने मसहरी के नीचे पैर का इशारा दे कर दोनों भाइयों

को भी उठा दिया॥

इन्द्रजीतसिंह का रुख तो पहिलेही से उस कोठड़ी की तरफ था मगर आनन्दसिंह उस तरफ पीठ किये सो रहे थे, जब उनकी आंख खुली तो अपने सामने की तरफ जहां तक देख सकते थे कुछ भी न देखा, लाचार धीरे से उनको करवट बदलनी पड़ी, तब मालूम हुआ कि इस कमरे में क्या आश्चर्य्य की बात दिखाई दे रही है॥

अब कोठड़ी का दोनों पल्ला खुल गया और वह हसीन औरत सिर से पैर तक अच्छी तरह इन चारों को दिखाई देने लगी क्योंकि उसके तमाम बदन पर बखूबी रोशनी पड़ रही थी। यह औरत कमसिन खूबसूरत और नखसिख से ऐसी दुरुस्त थी कि उसकी तरफ चारों की टकटकी बँध गई। बेशकीमती सुपेद साड़ी और जड़ाऊ जेवरों से वह बहुत ही भली मालूम होती थी, जेवरों में सिर्फ खुशरङ्ग मानिक जड़ा हुआ था, जिसकी सुर्खी उसके गोरे रङ्ग पर पड़ कर उसके हुस्न को हद्द से ज्यादे रौनक दे रही थी, उसकी पेशानी (माथे) पर एक दाग था जिसके देखने से विश्वास होता था कि बेशक इसने तलवार या किसी हर्बे की चोट खाई है, यह दो अंगुल का दाग भी उसकी खूबसूरती बढ़ाने के लिये जेवर ही हो रहा था। उसे देख चारों आदमी यही सोचते होंगे कि इससे बढ़ कर खूबसूरत रंभा और उर्वशी अप्सरा भी न होंगी। कुंअर इन्द्रजीतसिंह तो

किशोरी पर मोहित हो रहे थे, उसकी तस्वीर उनके दिल में खिंच रही थी, उनपर चाहे इसके हुस्न ने ज्यादे असर न किया हो मगर आनन्दसिंह की क्या हालत हो गई थी यह वही जानते होंगे, बहुत बचाये रहने पर भी ठण्डी सांसें उनसे न रुक सकीं, इससे तो हम भी कहेंगे कि उनके दिल ने उनकी ठण्डी सांसों के साथ ही बाहर निकल कर कह दिया कि अब हम तुम्हारे कब्जे में नहीं हैं ॥

कुंअर आनन्दसिंह अपने को सम्हाल न सके, उठ बैठे और उधर ही देखने लगे जिधर वह औरत किवाड़ का पल्ला थामे खड़ी थी। इनकी यह हालत देख तीनों आदमियों को विश्वास हो गया कि वह भाग जायगी मगर नहीं वह इनको उठ कर बैठते देख जरा भी न हिचकी ज्यों की त्यों खड़ी रही बल्कि इनकी तरफ देख उसने हँस दिया जिससे यह और भी बेचैन होगए॥

कुंअर आनन्दसिंह यह सोच कर कि उस कोठड़ी में किसी दूसरी तरफ निकल जाने के लिये दूसरा दर्वाजा नहीं है, मसहरी पर से उठ खड़े हुए और उस औरत की तरफ चले। इनको अपनी तरफ आते देख वह औरत कोठड़ी में चली गई और फुर्ती से उसका दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया ॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तबीयत चाहे दुरुस्त हो गई मगर कमजोरी अभी तक मौजूद है बल्कि जख्म सब भी अभी तक कुछ गीले हैं इसलिये अभी घूमने

फिरने लायक नहीं हुए। उस परीजमाल को भीतर से किवाड़ बन्द कर लेते देख सब उठ खड़े हुए, कुंअर इन्द्रजीतसिंह भी तकिये का सहारा लेकर बैठ गए और बोले, "इस कोठड़ी में किसी तरफ से निकल जाने का तो रास्ता नहीं है॥"

भैरो०। जी नहीं॥

आनन्द०। (किवाड़ में धक्का देकर) इसे खोलना चाहिये॥

तारा०। दर्वाजे में कुलाबा जड़ा है॥

आनन्द०। कुलाबा काटना क्या मुश्किल है?

तारा०। मुश्किल तो कुछ भी नहीं (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) क्या हुक्म होता है?

इन्द्र०। जब उस कोठड़ी में दूसरी तरफ निकल जाने का रास्ता ही नहीं है तो जल्दी क्यों करते हो?

इन्द्रजीतसिंह के इतना कहते ही आनन्दसिंह वहां से हटे और अपने भाई के पास आकर बैठ गए। भैरोसिंह और तारासिंह भी उनके पास आकर बैठ गए और यों बातचीत होने लगी:—

इन्द्रजीत०। (भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देख कर) तुममें से कोई जागता भी रहा या दोनों सो गए थे?

भैरो०। नहीं सो क्या जायँगे! हमलोग बारी बारी से बराबर जागते रहे और महीन चादर से मुंह ढांपे दर्वाजों की तरफ देखते रहे॥

इन्द्र० । तो क्या इन दर्वाजों में से इस औरत को आते देखा था ?

आनन्द० । बेशक इसी तरफ से आई होगी ॥

तारा० । जी नहीं, यही तो ताज्जुब है कि कमरे के दर्वाजे ज्यों के त्यों भिड़े रह गए यकायक कोठड़ी का दर्वाजा खुला और वह नजर आई ॥

इन्द्र० । यह तो अच्छी तरह मालूम है न कि उस कोठड़ी में और कोई दर्वाजा नहीं है ?

भैरो० । जी हां, अच्छी तरह जानते हैं और कोई दर्वाजा नहीं है ॥

तारा० । क्या कहें ! कोई सुने तो यही कहे कि चुड़ैल थी ॥

आनन्द० । राम राम, यह भी कोई बात है ॥

इन्द्र० । खैर जो हो, मेरी राय तो यही है कि पिता जी के आने तक कोठड़ी का दर्वाजा न खोला जाय ॥

आनन्द० । जो हुक्म मगर मैं तो यही चाहता था कि पिताजी के आने तक दर्वाजा खोल कर सब कुछ दरियाफ़ कर लिया जाता ॥

इन्द्र० । खैर खोलो ॥

हुक्म पातेही कुंअर आनन्दसिंह उठ खड़े हुए और खूँटी से लटकती हुई एक भुजाली उतार उस दर्वाजे के पास गए और एक एक हाथ दोनों कुलाबों पर मारा जिससे कुलाबे कट गए, तारासिंह ने दोनों पल्ले उतार अलग रख दिये, भैरोसिंह ने एक बलता हुआ शमादान

उठा लिया और तीनों आदमी उस कोठड़ी के अन्दर गए, मगर वहां एक चूहे का बच्चा भी नजर न आया !!

इस कोठड़ी में तीन तरफ मजबूत दीवार थी एक तरफ वही दर्वाजा था जिसका कुलाबा काट ये लोग अन्दर गए थे, हां सामने तरफ वाली अर्थात बिचली दीवार में काठ की एक अलामारी जड़ी हुई थी, इन लोगों का ध्यान उस अलामारी पर गया और सोचने लगे कि शायद यह अलामारी ही इस ढब की हो जो दूसरे दर्वाजे का काम देती हो और इसी राह से वह औरत आई हो मगर उन लोगों का यह खयाल तुरत ही जाता रहा और विश्वास होगया कि यह अलामारी किसी तरह दर्वाजा नहीं हो सकती और न इस राह से वह औरत आई थी क्योंकि उस अलामारी में भैरो-सिंह ने अपने हाथ से कुछ जरूरी असबाब रखकर ताला लगा दिया था जो ताला अभी तक ज्यों का त्यों बन्द था। यह कब हो सकता है कि कोई ताला खोल कर इस अलामारी के अन्दर घुस गया हो और बाहर का ताला फिर जैसा का तैसा दुरुस्त कर दिया हो। फिर क्या हुआ ? वह औरत क्योंकर आई थी और किस राह से चली गई ? उन लोगों ने लाख सर धुना और गौर किया मगर कुछ समझ में न आया॥

ताज्जुब भरी बातों ही में रात बीत गई सुबह को जब राजा बीरेन्द्रसिंह अपने लड़के को देखने के लिए उस कमरे में आये तो जर्राह, बैद्य और कई मुसाहब

लोग भी उनके साथ थे। बीरेन्द्रसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से तबीयत का हाल पूछा, उन्होंने कहा, "अब तबीयत अच्छी है मगर एक जरूरी बात अर्ज किया चाहता हूं जिसके लिए तखलिया (एकान्त) हो जाना बेहतर होगा॥"

बीरेन्द्रसिंह ने भैरोसिंह की तरफ देखा, उसने तखलिया हो जाने में महाराज की रजामन्दी जान कर सभों को हट जाने का इशारा किया, बात की बात में सन्नाटा हो गया और सिर्फ वे ही पांच आदमी उस कमरे में रह गए॥

बीरेन्द्र०। कहो क्या बात है?

इन्द्र०। रात एक अजीब बात देखने में आई!!

बीरेन्द्र०। वह क्या?

इन्द्र०। (तारासिंह की तरफ देख कर) तारासिंह! तुम ही सब हाल कह जाओ क्योंकि उस समय तुमही जागते थे हमलोग तो पीछे जगाए गए हैं॥

तारा०। बहुत खूब॥

तारासिंह ने रात का हाल पूरा पूरा राजा बीरेन्द्रसिंह से कह सुनाया जिसे सुनकर उन्होंने बहुत ताज्जुब किया और घंटों तक गौर में डूबे रहने बाद बोले,—"खैर अब यह बात किसी और को न मालूम हो नहीं तो मुसाहबों और अफसरों में खलबली पैदा हो जायगी और सैकड़ों तरह की गप्पें उड़ने लगेंगी, देखो तो क्या होता है और कब तक पता नहीं लगता, आज हम भी

इसी कमरे में सोयेंगे ॥"

एक दिन क्या कई दिनों तक राजा बीरेन्द्रसिंह उस कमरे में सोये मगर कुछ मालूम न हुआ और न फिर कोई बात देखने में आई, आखिर उन्होंने हुक्म दिया कि उस कोठड़ी का दर्वाजा नया कुलाबा लगा कर उसी तरह दुरुस्त कर दिया जाय ॥

बारहवां बयान ।

आज पांच दिन के बाद देवीसिंह लौट कर आये हैं, जिस कमरे का हाल हम ऊपर लिख आये हैं उसी में राजा बीरेन्द्रसिंह उनके दोनों लड़के, भैरोसिंह, तारासिंह और कई सर्दार लोग बैठे हैं, इन्द्रजीतसिंह की तबीयत अब बहुत अच्छी है, वह चलने फिरने लायक होगए हैं, देवीसिंह को बहुत जल्द लौट आते देख कर विश्वास होगया कि वह जिस काम पर मुस्तैद किये गए थे उसे कर चुके मगर ताज्जुब इस बात का था कि वह अकेले क्यों आये ॥

बीरेन्द्र० । कहो देवीसिंह खुश तो हो ?

देवी० । खुशी तो मेरी खरीदी हुई है (और लोगों की तरफ देख कर) अच्छा अब आप लोग जाइये बहुत विलम्ब होगया ॥

दर्बारियों और खुशामदियों के चले जाने बाद बीरेन्द्रसिंह ने पूछाः—

बीरेन्द्र०। कहो उस अर्जी में जो कुछ लिखा था सच था या झूठ?

देवी०। उसमें जो कुछ लिखा था बहुत ठीक था, ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही उन दुष्टों का पता लग गया मगर क्या कहूं ऐसी ऐसी ताज्जुब की बातें देखने में आईं कि अभी तक बुद्धि चकरा रही है॥

बीरेन्द्र०। (हँस कर) उधर तुम ताज्जुब की बातें देखो इधर हमलोग अद्भुत बातें देखें!!

देवी०। सो क्या?

बीरेन्द्र०। पहिले तुम अपना हाल कह लो तो यहां का सुनना॥

देवी०। बहुत अच्छा सुनिये। रामशिला की पहाड़ी के नीचे मैंने एक कागज अपने हाथ से लिख कर चपका दिया, उसमें यह लिखा था:—

हम खूब जानते हैं कि जो अग्निदत्त के विरुद्ध होता है उस का तुम लोग सिर काट लेते हो और जिसका घर चाहते हो लूट लेते हो, मैं डङ्के की चोट कहता हूं कि अग्निदत्त का दुश्मन मुझ से बढ़ के कोई न होगा और गयाजी में मुझसे बढ़ कर मालदार भी कोई नहीं है, तिसपर मजा यह है कि मैं अकेला हूं, अब देखा चाहिये तुम लोग मेरा क्या करते हो॥

आनन्द०। अच्छा, तब क्या हुआ?

देवी०। उन दुष्टों के पता लगाने के उपाय तो मैंने और भी कई किये थे मगर काम इसी से चला। उस

राह से आने जाने वाले सभी उस कागज को पढ़ते थे और चले जाते थे। मैं उस पहाड़ी के कुछ ऊपर जाकर एक पत्थर की चट्टान की आड़ में छिपा हुआ हरदम उसी तरफ देखा करता था। एक दफे दो आदमी एक साथ वहां आए और उसे पढ़ मूछों पर ताव देते शहर की तरफ चले गए, शाम को वे दोनों लौटे और फिर उस कागज को पढ़ सर हिलाते बराबर की पहाड़ी की ओर चले गये। मैंने सोचा कि इनका पीछा एक दफे जरूर करना चाहिये क्योंकि इस कागज के पढ़ने का असर सब से ज्यादे इन्हीं दोनों पर हुआ। आखिर मैंने उनका पीछा किया और जो सोचा था वही ठीक हुआ। वे लोग बारह आदमी हैं और सभी हट्टे कट्टे और मुसंडे हैं, उसी झुण्ड में मैंने एक औरत को भी देखा। अहा! ऐसी खूबसूरत औरत तो मैंने आज तक नहीं देखी, पहिले तो मैंने सोचा कि वह इन लोगों में से किसी की लड़की होगी क्योंकि उसकी अवस्था बहुत कम थी मगर नहीं उसके हाव भाव और उसकी हुकूमत भरी बातचीत से मालूम हुआ कि वह उन सभों की मालिक है, सच तो यह है कि मेरा जी इस बात पर भी नहीं जमता। उसकी चाल ढाल, उसकी बढ़ियां पोशाक और उसके जड़ाऊ कीमती गहनों पर जिसमें सिर्फ खुशरंग मानिक ही जड़े हुए थे ध्यान देने से दिल की कुछ विचित्र हालत होती है॥

मानिक के जड़ाऊ जेवरों का नाम सुनतेही कुंअर

आनन्दसिंह चौंक पड़े, इन्द्रजीतसिंह, भैरोसिंह और तारासिंह का भी चेहरा बदल गया और उस औरत का विशेष हाल जानने के लिये घबड़ाने लगे क्योंकि उस रात को इन चारों ने इस कमरे में या यों कहिये कि कोठड़ी में जिस औरत की झलक देखी थी वह भी मानिकही के जड़ाऊ जेवरों से अपने को सजाए हुए थी। आखिर आनन्दसिंह से न रहा गया देवीसिंह को बात कहते कहते रोक कर पूछाः—

आनन्द०। उस औरत का नखसिख जरा अच्छी तरह कह जाइये॥

देवी०। सो क्या?

बीरेन्द्र०। (लड़कों की तरफ देखकर) तुम लोगों को ताज्जुब किस बात का है? तुम लोगों के चेहरे पर हैरानी क्यों छाई है?

भैरो०। जी वह औरत भी जिसे हमलोगों ने देखा है ऐसेही गहने पहिरे हुए थी जैसा चाचाजी*कह रहे हैं॥

बीरेन्द्र०। हां!!

भैरो०। जी हां॥

देवी०। तुम लोगों ने कैसी औरत देखी थी!

बीरेन्द्र०। सो पीछे सुनना पहिले जो ये पूछते हैं उसका जवाब देलो॥

देवी०। नखसिख सुन के क्या कीजियेगा! सबसे

* भैरोसिंह और देवीसिंह का रिश्ता तो मामा भांजे का था मगर भैरोसिंह उन्हें चाचाजी कहा करते थे॥

ज्यादे पक्का निशान तो यह है कि उसके ललाट में दो ढाई अंगुल का एक आड़ा दाग है मालूम होता है शायद उसने कभी तलवार की चोट खाई है॥

आनन्द०। बस बस बस॥

इन्द्रजीत०। बेशक वही औरत है॥

तारा०। इसमें कोई शक नहीं कि वही है॥

भैरो०। अवश्य वही है॥

बीरेन्द्र०। आश्चर्य है! कहां उन दुष्टों का सङ्ग और कहां हम लोगों के साथ आपुस का बर्ताव॥

भैरो०। हमलोग तो उसे दुश्मन नहीं समझते॥

देवी०। अब हम न बोलेंगे जबतक यहां का खुलासा हाल न सुन लेंगे न मालूम आप लोग क्या कह रहे हैं॥

बीरेन्द्र०। खैर यही सही अपने लड़के से पूछिये यहां क्या हुआ॥

तारा०। जी हां सुनिये मैं अर्ज करता हूं॥

तारासिंह ने यहां का बिल्कुल हाल अच्छी तरह कहा, फूल तो फेंक दिये गए थे मगर गुलदस्ते अभी तक मौजूद थे, वे भी दिखाये। देवीसिंह हैरान थे कि यह क्या मामला है! देर तक सोचने के बाद बोले, "मुझे विश्वास नहीं कि यहां वही औरत आई हो जिसे मैंने वहां देखा है॥"

बीरेन्द्र०। यह शक भी मिटाही डालना चाहिये॥

देवी०। उन लोगों का जमाव वहां रोजही होता है जहां मैं देख आया हूं, आज तारा या भैरो को अपने

साथ ले चलूंगा ये देख लें कि वही औरत है या दूसरी ॥

बीरेन्द्र० । ठीक है आज ऐसाही करना । हां अब तुम अपना हाल और आगे कहो ॥

देवी० । मुझे यह भी मालूम हुआ कि उन दुष्टों ने हमेशे के लिये अपना डेरा उस पहाड़ी में कायम किया है और बातचीत से यह भी जाना जाता है कि लूट और चोरी का माल भी वेलोग उसी ठिकाने कहीं रखते हैं । मैंने अभी बहुत खोज उन लोगों की नहीं की, जो कुछ मालूम हुआ था आपको कहने केलिये चला आया, अब उन लोगों का गिरफ़ार करना कुछ मुश्किल नहीं है हुक्म हो तो थोड़ेसे आदमी अपने साथ ले जाऊं और आजही उन लोगों को उस औरत के सहित गिरफ़ार कर लाऊँ ॥

बीरेन्द्र० । आज तो तुम भैरो या तारा को अपने साथ ले जाओ फिर कल उन लोगों की गिरफ़ारी की फिक्र की जायगी ॥

आज भैरोसिंह को अपने साथ लेकर देवीसिंह बराबर के पहाड़ परगये जो गयाजी से तीन चार कोस की दूरी पर होगा। घूम घुमौवे और पेचीली पगडण्डियों को तै करते हुए पहर रात जाते जाते उस खोह के पास पहुंचे जिसमें वे बदमाश डाकू लोग रहते थे। उस खोह के पासही एक और छोटी सी गुफा थी जिसमें मुश्किल से दो आदमी बैठ सकते थे। इस गुफा में एक बारीक दरार ऐसी पड़ी हुई थी जिससे वे दोनों ऐयार उस

लम्बी चैाड़ी गुफा का हाल बखूबी देख सकते थे जिसमें वे डाकू लोग रहते थे श्रैार इस समय वे सबके सब वहां मैाजूद थे बल्कि वह श्रैारत भी सर्दारी के तैार पर छोटीसी गद्दी लगाये वहां मैाजूद थी। ये दोनों ऐयार उस दरार से उन लोगों की बातचीत ते नहीं सुन सकते थे मगर शक्ल, सूरत, हाव, भाव श्रैार इशारे अच्छी तरह देख सकते थे॥

भैरोसिंह ने इस समय वहां पन्द्रह डाकुश्रों को बैठे हुए पाया श्रैार उस श्रैारत को भी देख कर पहिचान लिया कि यह वही है जो कुंश्रर इन्द्रजीतसिंह के कमरे में श्राई थी, श्राज वह वैसी साड़ी या उन जेवरों को पहिरे हुए न थी, तैा भी सूरत शक्ल में किसी तरह का फर्क न था॥

इन दोनों ऐयारों के पहुंचने बाद दो घण्टे तक वे डाकू लोग श्रापुस में बातचीत करते रहे, इस बीच में कई डाकुश्रों ने दो तीन दफे हाथ जोड़ कर उस श्रैारत से कुछ कहा जिसके जवाब में उसने सिर हिला दिया जिससे मालूम हुश्रा कि उसने मंजूर नहीं किया। इतनेही में एक दूसरी हसीन, कमसिन श्रैार फुरतीली श्रैारत लपकती हुई वहां श्रा मैाजूद हुई। उसके हांफने श्रैार दम फूलने से मालूम होता था कि वह बहुत दूर से दैाड़ती हुई श्रा रही है॥

इस नई श्राई हुई श्रैारत ने न मालूम उस सर्दार श्रैारत के कान में झुक कर क्या कहा जिसके सुनतेही

उसकी हालत बदल गई, बड़ी बड़ी आंखें सुर्ख होगईं, खूबसूरत चेहरा तमतमा उठा और गुस्से से बदन कांपने लगा। उसने अपने सामने पड़ी हुई तलवार उठा ली और तुरत उस नई आई हुई औरत को साथ ले उस खोह के बाहर चली गई। वे डाकू सब दोनों औरतों का मुंह देखतेही रह गए मगर कुछ कहने या पूछने की हिम्मत न पड़ी॥

जब दो घण्टे तक दोनों औरतों में से कोई न लौटी तो वे डाकू लोग भी उठ खड़े हुए और खोह के बाहर निकल गये, उन लोगों के इशारे और आकृति से मालूम होता था कि वे दोनों औरतों के यकायक इस तरह पर चले जाने से ताज्जुब कर रहे हैं। यह हालत देख देवीसिंह और भैरोसिंह भी वहां से चल पड़े और सुबह होते होते राजमहल में पहुंचे॥
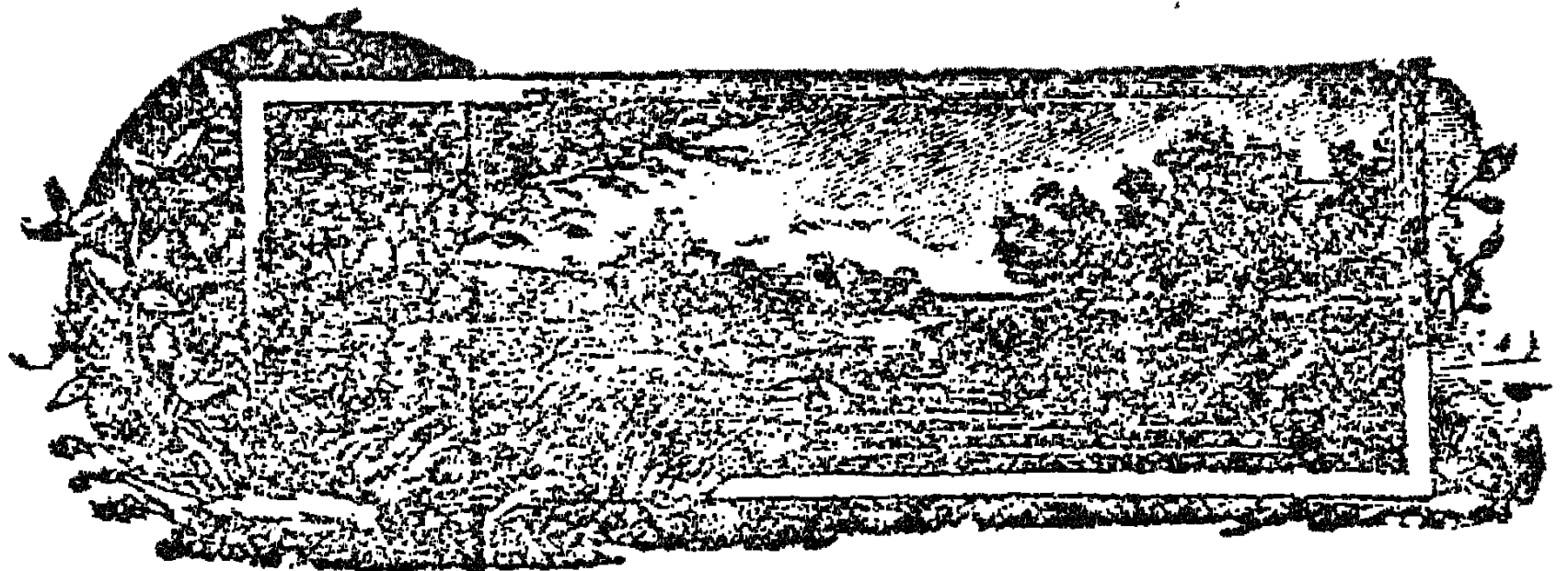
तेरहवां बयान ।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह तो किशोरी पर जी जान से आशिक होही चुके थे इस बीमारी की हालत में भी उसकी याद इन्हें सता रही थी और यह जानने के लिये बेचैन हो रहे थे कि अब उस पर क्या बीती! वह किस अवस्था में कहां है और उसकी सूरत कब किस तरह देखनी नसीब होगी। जबतक वे अच्छी तरह तन्दुरुस्त नहीं होजाते, न तो खुद कहीं जाने के लिये हुक्म ले सकते थे और न किसी बहाने से अपने प्रेमी साथी ऐयार भैरोसिंह को कहीं भेज सकते थे। इसी बीमारी की हालत में समय पाकर उन्होंने भैरोसिंह से सब हाल मालूम कर लिया था। यह सुन कर कि किशोरी को दीवान अग्निदत्त उठा लेगया, बहुत ही परेशान थे मगर यह खबर कुछ कुछ उन्हें ढाढ़स देती थी कि कमला, चम्पा और पण्डित बद्रीनाथ उसके छुड़ाने की फिक्र में लगे हुए हैं और राजा बीरेन्द्रसिंह को भी यह धुन जी से लगी हुई है कि जिस तरह बने शिवदत्त की लड़की किशोरी की शादी अपने लड़के के साथ करके शिवदत्त को नीचा दिखावें और शर्मिन्दा करें॥

कुंअर आनन्दसिंह ने भी इश्क के मैदान में पैर रक्खा, मगर इनकी हालत अजब गोमगो में पड़ी है, जब उस औरत का ध्यान आजाता था जी बेचैन हो जाता था और जब देवीसिंह की बात की याद करते

थे कि यह औरत डाकुओं के एक गरोह की सर्दार है तो कलेजे में अजीब तरह का दर्द पैदा होता था और थोड़ी देर के लिये चित्त का भाव बदल जाता था, मगर साथही इसके सोचने लगते थे कि नहीं, अगर वह हमलोगों की दुश्मन होती तो मेरी तरफ देखकर प्रेम भाव से कभी न हँसती और फूलों के गुलदस्ते और गजरे सजाने के लिये जब उस कमरे में आई थी तो हमलोगों को नींद में गाफिल पाकर जरूर मार डालती फिर हमलोगों की दुश्मन नहीं है तो उन डाकुओं का साथ कैसा !!

ऐसे ऐसे सोच विचार ने उनकी अवस्था खराब कर रक्खी थी। कुंअर इन्द्रजीतसिंह, भैरोसिंह और तारासिंह को कुछ कुछ उनके जी का पता लग चुका था मगर जबतक उसकी इज्जत आबरू और जात पात की खबर के साथ ही साथ यह न मालूम हो जाय कि वह दोस्त है या दुश्मन, तब तक कुछ कहना सुनना या समझना मुनासिब नहीं समझते थे॥

राजा बीरेन्द्रसिंह को यह चिन्ता पैदा हुई कि जिस तरह वह औरत इस घर में आ पहुंची, कहीं डाकू लोग भी आकर लड़कों को दुःख न दें और फसाद न मचावें, उन्होंने पहरे वगैरह का अच्छी तरह इन्तजाम किया और यह सोच कर कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह अभी तन्दुरुस्त नहीं हुए हैं कमजोरी बनी हुई है और किसी तरह लड़भिड़ नहीं सकते इनको अकेले छोड़ना मुनासिब नहीं, अपने सोने का इन्तजाम भी उसी कमरे में किया

और खुद भी एक नया और विचित्र तमाशा देखा ॥

हम ऊपर लिख आए हैं कि इस कमरे के दोनों तरफ दो कोठड़ियां हैं एक में सन्ध्या पूजा का सामान है और एक वही विचित्र कोठड़ी है जिसमें से वह औरत पैदा हुई थी। सन्ध्या पूजा वाली कोठड़ी में बाहर से ताला बन्द कर दिया और उस दूसरी कोठड़ी का कुलाबा वगैरह दुरुस्त करके बिना बाहर ताला लगाये उसी तरह छोड़ दिया जैसे पहिले था और उसी के दर्वाजे पर अपना पलङ्ग बिछवाया और सारी रात जागते रह गए ॥

आधी रात बीत गई मगर कुछ देखने में न आया तब बीरेन्द्रसिंह अपने बिस्तरे पर से उठे और कमरे में इधर उधर टहलने लगे, घंटे भर के बाद उस कोठड़ी में खटके की आवाज हुई, बीरेन्द्रसिंह ने फौरन तल-वार उठा ली और तारासिंह को उठाने के लिये चले मगर खटके की आवाज पा तारासिंह पहिलेही से सचेत होगए थे अब हाथ में खँजर ले बीरेन्द्रसिंह के साथ टहलने लगे ॥

आधी घड़ी के बाद जंजीर खटकने की आवाज इस तरह पर हुई जिससे साफ मालूम हो गया कि किसी ने इस कोठड़ी का दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया। थोड़ी ही देर बाद पैर के धमाधमी की आवाज भीतर से आने लगी मानो चार पांच आदमी भीतर उछल कूद रहे हैं। बीरेन्द्रसिंह कोठड़ी के दर्वाजे के पास गए

और हाथ का धक्का देकर किवाड़ खोलना चाहा मगर भीतर से बन्द रहने के कारण दर्वाजा न खुला, लाचार उसी जगह खड़े हो भीतर की आहट पर गैार करने लगे ॥

अब पैर के धमाधमी की आवाज बढ़ने लगी और धीरे धीरे इतनी ज्यादे हुई कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी उठे और कोठड़ी के पास जाकर खड़े हो गए। फिर दर्वाजा खोलने की कोशिश की मगर न खुला, भीतर जल्द जल्द पैर उठने और पटकने की आवाज से सभों को निश्चय हो गया कि अन्दर लड़ाई होती है । थोड़ी ही देर बाद तलवारों की झनझनाहट भी सुनाई देने लगी, अब भीतर लड़ाई होने में किसी तरह का शक न रहा। आनन्दसिंह ने चाहा कि दर्वाजे का कुलाबा तोड़ा जाय मगर बीरेन्द्र सिंह की मर्जी न पाकर सब चुपचाप खड़े आहट सुनते रहे ॥

यकायक धमधमाहट की आवाज बढ़ी और सन्नाटा हो गया घड़ी भर तक ये लोग बाहर खड़े रहे मगर कुछ मालूम न हुआ और न किसी तरह की आहट या आवाज सुनाई दी। रात भी सिर्फ दे। घंटे बल्कि इससे भी कम बाकी रह गई थी। पहरे वाले टहल टहल कर अच्छी तरह से पहरा दे रहे हैं या नहीं यह देखने के लिये तारासिंह बाहर गए और सभों को अपने काम पर मुस्तैद पा कर लैाट आये, इतने ही में कमरे का दर्वाजा

खुला और भैरोसिंह को साथ लिये देवीसिंह आते हुए दिखाई पड़े॥

ये दोनों ऐयार सलाम करने बाद बीरेन्द्रसिंह के पास बैठ गए और यह देख कर कि यहां अभी तक ये लोग जाग रहे हैं ताज्जुब करने लगे॥

देवी०। आप लोग इस समय जाग रहे हैं!!

बीरेन्द्र०। हां,यहां कुछ ऐसा ही मामला हुआ कि जिससे निश्चिन्त हो सो न सके॥

देवी०। सो क्या?

बीरेन्द्र०। खैर तुम्हें यह भी मालूम हो जायगा कि यहां क्या हुआ पहिले अपना हाल तो कहो (भैरोसिंह की तरफ देख कर) तुमने उस औरत को पहिचाना?

भैरो०। जी हां,बेशक वही औरत है जो यहां आई थी, बल्कि वहां एक और औरत भी दिखाई दी॥

बीरेन्द्र०। यहां से जाकर तुमने क्या किया और क्या क्या देखा सो खुलासा कह जाओ?

भैरोसिंह ने जो कुछ देखा था कहने बाद यहां का हाल पूछा, बीरेन्द्रसिंह ने भी यहां की कुल कैफियत कह सुनाई और बोले कि हम यही राह देख रहे थे कि सवेरा हो जाय और तुम लोग भी आ जाओ तो इस कोठड़ी को खोलें और देखें कि क्या है, कहीं से किसी के आने जाने का पता लगता है या नहीं॥

कोठड़ी खोली गई। एक हाथ में रोशनी दूसरे हाथ में नङ्गी तलवार लेकर पहिले देवीसिंह कोठड़ी के अन्दर

घुसे और तुरत बोल उठे, "वाह वाह! यहां तो खूनखराबा मच चुका है।" राजा बीरेन्द्रसिंह, दोनों कुमार और उनके दोनों ऐयार भी कोठड़ी के अन्दर गए और ताज्जुब भरी निगाहों से चारों तरफ देखने लगे॥

इस कोठड़ी में जो फर्श बिछा हुआ था वह इस तरह से सिमट गया था जैसे कई आदमियों के बेअख्तियार उछल कूद करने या लड़ने से इकट्ठा होगया हो, वह भी खून से तर हो रहा था, चारों तरफ दीवारों पर भी खून के छींटे और लड़ती समय हाथ बहक कर बैठ जाने वाली तलवारों के निशान दिखाई दे रहे थे, बीच में एक लाश पड़ी हुई थी मगर बे सिर के कुछ समझ में नहीं आता था कि यह लाश किसकी है, कपड़ों में सिर्फ एक लँगोटा उसकी कमर में था, तमाम बदन नङ्गा जिसमें अन्दाज से ज्यादे तेल मला हुआ था, दाहिने हाथ में तलवार थी मगर वह हाथ भी कटा हुआ सिर्फ जरा सा चमड़ा लगा हुआ था, वह भी इतना कम कि अगर कोई खैंचे तो अलग हो जाय। सब से ज्यादे परेशान और बेचैन करने वाली एक चीज और दिखाई दी॥

दाहिने हाथ की कटी हुई कलाई जिसमें फौलादी कटार अभी तक मौजूद थी दिखाई पड़ी। आनन्दसिंह ने फौरन उस हाथ को उठा लिया और सभों की निगाह गौर के साथ उसपर पड़ने लगी, यह कलाई किसी नाजुक हसीन और कमसिन औरत की थी। हाथ में हीरे का जड़ाऊ कड़ा और मानिक की जड़ाऊ दो तीन

बारीक चूड़ियां भी मौजूद थीं, शायद कलाई कट कर गिरती समय ये चूड़ियां हाथ से अलग हो जमीन पर फैल गई हों॥

इस कलाई के देखने से सभों को रंज हुआ और झट उस औरत की तरफ खयाल दौड़ गया जिसे इस कोठड़ी में से निकलते सभों ने देखा था, चाहे उस औरत के सबब ये लोग कैसे ही हैरान क्यों न हों मगर उसकी सूरत ने सभों को अपने ऊपर मेहरबान बना लिया था, खास करके कुंअर आनन्दसिंह के दिल में तो वह उनके जान और माल की मालिक ही होकर बैठ गई थी इस लिये सब से ज्यादे दुःख छोटे कुंअर साहब को हुआ॥

यह सोच कर कि बेशक यह उसी औरत की कलाई है कुंअर आनन्दसिंह की आंखों में जल भर आया और कलेजे में एक अजीब किस्म का दर्द पैदा हुआ, इस समय कुछ कहने या अपने दिल का हाल जाहिर करने का मौका न समझ उन्होंने बड़ी कोशिश से अपने को सम्हाला और चुपचाप सभों का मुंह देखने लगे॥

पाठक! अभी इस औरत के बारे में बहुत कुछ लिखना है इसलिये जब तक यह न मालूम हो जाय कि यह औरत कौन है तब तक अपने और आपके सुबीते के लिये हम इसका नाम "किन्नरी" रख देते हैं॥

राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों ने इन सब अद्भुत बातों को जो इधर कई दिनों में हो चुकी थीं छिपाने के लिये बहुत कोशिश की मगर न हो सका,

कई तरह पर रङ्ग बदल कर यह बात तमाम शहर में फैल गई। कोई कहता था महाराज के मकान में देव और परियों ने डेरा डाला है, कोई कहता था गयाजी के भूत प्रेत इन्हें सता रहे हैं, कोई कहता था दीवान अग्निदत्त के तरफदार बदमाश और डाकुओं ने यह फसाद मचाया है, इत्यादि बहुत तरह की बातें शहर वाले आपुस में कहने लगे, मगर उस समय उन बातों का ढंग बिल्कुल ही बदल गया जब राजा बीरेन्द्रसिंह के हुक्म से देवीसिंह ने उस सिर कटी लाश को जो कोठड़ी में से निकली थी उठवाकर सदर चौक में रखवा दिया और उसके पास एक मुनादी वाले को यह कहकर पुकारने के लिये बैठवा दिया कि "अग्निदत्त के तरफदार डाकू लोग जो शहर के रईसों और अमीरों को सताया करते थे ऐयारों के हाथ गिरफ्तार होकर मारे जाने लगे, आज एक डाकू मारा गया है जिसकी लाश यह है ॥"

चौदहवां बयान।
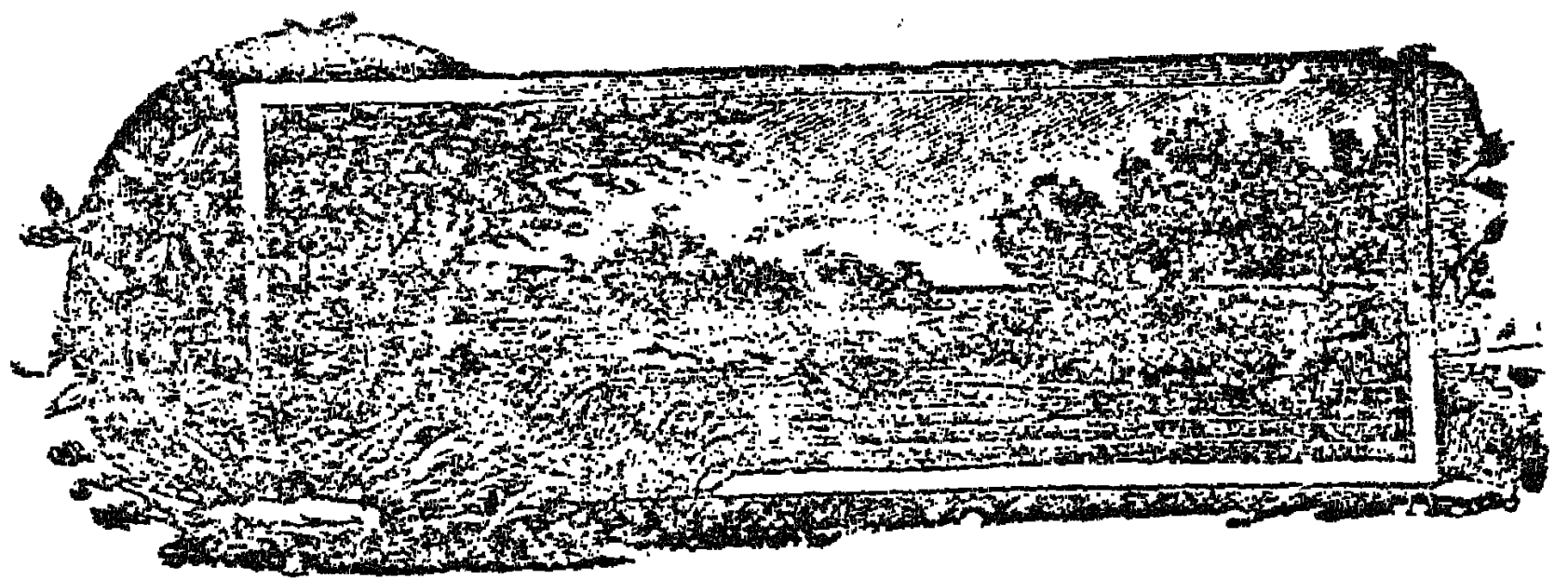
सूर्य्य भगवान के अस्त होने में अभी घंटे भर की देर है तौ भी मौसिम के मुताबिक बाग में टहलनेवाले हमारे कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को ठंढी हवा सिहरावन मालूम होती है, रङ्गबिरङ्ग के खुशबूदार फूल खिले हुए हैं जिनके देखने से हर एक की तबीयत उमङ्ग पर आ सकती है मगर इन दोनों के दिल की कली किसी तरह खिलने में नहीं आती। बाग में जितनी चीजें दिल खुश करने वाली हैं वे सब इस समय इन दोनों को बुरी मालूम होती हैं, बहुत देर से दोनों भाई बाग में टहल रहे हैं मगर ऐसी नौबत न आई कि एक दूसरे से बात करे या हँसे क्योंकि दोनों ही के दिल चुटीले हो रहे हैं, दोनों ही अपने अपने धुन में डूबे हुए हैं दोनों ही को अपने अपने माशूक की खोज है, दोनों ही सोच रहे हैं कि हाय! क्या ही आनन्द होता अगर इस समय वह मौजूद होती जिसे जी प्यार करता है या जिसके बिना दुनिया की सम्पति तुच्छ मालूम होती है। दिल बहलाने का बहुत कुछ उद्योग किया मगर न हो सका, लाचार दोनों भाई उस बारहदरी में पहुंचे जो बाग के दक्खिन तरफ महल के साथ सटी हुई थी और जहां इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह अपने मुसाहबों के साथ जी बहलाने की बातें कर रहे थे, देवीसिंह भी उनके पास बैठे हुए थे जो कभी कभी

लड़कपन की बातें याद दिलाने के साथ ही साथ गुप्त दिल्लगी भी करते जाते थे श्रौर जवाब भी पाते थे ये दोनों लड़के भी वहां जा पहुंचे मगर इनके बैठते ही मजलिस का रङ्ग बदल गया श्रौर बातों ने पलटा खाकर दूसरा ही ढंग पकड़ा जैसा कि श्रवसर हँसी दिल्लगी करते हुए बड़ों के बीच में समझदार लड़कों के श्रा बैठने से हो जाता है ॥

बीरेन्द्र० । श्रब तो चुनार जाने को जी चाहता है मगर...............

देवी० । यहां श्रापकी जरूरत ही क्या है ?

बीरेन्द्र० । ठीक है, यहां मेरी कोई जरूरत नहीं लेकिन यहां की श्रद्भुत बातें देख कर बिचार होता है कि मेरे चले जाने से कोई बखेड़ा न मचे श्रौर लड़कों को तकलीफ न हो ॥

इन्द्र० । (हाथ जोड़ कर) इसकी चिन्ता श्राप न करें, हमलोग जब इतनी छोटी छोटी बातों से श्रपने को सम्हाल न सकेंगे तो श्रागे क्या करेंगे ॥

बीरेन्द्र० । तो क्या तुम्हारा इरादा भी यहां रहने का है ?

इन्द्र० । जी यदि श्राज्ञा हो ॥

बीरेन्द्र० । (कुछ सोच कर) क्यों देवीसिंह ?

देवी० । क्या हर्ज है रहने दीजिये ॥

बीरेन्द्र० । श्रौर तुम ?

देवी० । मैं श्रापके साथ चलूंगा यहां भैरो श्रौर

तारा रहेंगे वे दोनों होशियार हैं कुछ हर्ज नहीं है॥

भैरो०। (हाथ जोड़ कर) यहां की अद्भुत बातें हमलोगों का कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं॥

तारा०। (हाथ जोड़ कर) सर्कार की मर्जी नहीं पाई नहीं तो ऐसी ऐसी लीलाओं का तो मैं एक ही दिन में कायापलट कर देने की हिम्मत रखता हूं॥

भैरो०। (हाथ जोड़ कर) अगर मर्जी हो तो अद्भुत बातों का आज ही निबटेरा कर दिया जाय॥

बीरेन्द्र०।(मुसकुराकर)नहीं ऐसी कोई जरूरत नहीं हमें तुम लोगों के हौसलों पर पूरा भरोसा है(देवीसिंह की तरफ देख कर) खैर तो आज दिन भी अच्छा है॥

देवी०। बहुत खूब (एक मुसाहब की तरफ देखकर) आप जरा तकलीफ करें॥

मुसाहब०। बहुत अच्छा मैं जाता हूं॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह यही चाहते थे कि किसी तरह बीरेन्द्रसिंह चुनार जायँ, क्योंकि उनके रहते ये दोनों अपने मतलब की कार्रवाई नहीं कर सकते थे, इस बात को बीरेन्द्रसिंह भी समझते थे मगर इसके सिवाय न मालूम क्या सोच कर वे इस समय चुनार जाते हैं या गयाजी की सरहद छोड़ कर क्या मतलब निकाला चाहते हैं॥

राजा बीरेन्द्रसिंह का विचार कोई जान नहीं सकता था वे किसीसे यह नहीं कहते थे कि हम दो घंटे बाद क्या करेंगे कोई यह नहीं कह सकता था कि

महाराज आज यहां तो हैं मगर कल कहां रहेंगे, या महाराज फलाना काम क्यों और किस इरादे पर करते हैं। पहिले दिल ही दिल में अपना इरादा मजबूत कर लेते थे जिसे कोई बदल नहीं सकता था, हां अपने बाप की इज्जत बहुत करते थे और उनके मुकाबले में अपने दृढ़ विचार को हुक्म के मुताबिक बदल देने में बुरा नहीं समझते थे बल्कि उसे कर्तव्य और धर्म मानते थे॥

दो घड़ी रात जाते जाते बीरेन्द्रसिंह ने चुनार की तरफ कूच कर दिया और देवीसिंह को साथ लेते गए। अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह खुदमुख़्तार हो गए मगर साथ ही इसके राजा हो गए तो क्या, अपने खुद मुख़्तारी के सामने आनन्दसिंह अपने बड़े भाई के हुक्म की नाकदरी नहीं कर सकते थे, यहां तो दोनों ही के इरादे दूसरे हैं जिसमें एक दूसरे का बाधक नहीं हो सकता था॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह बीमार थे इसलिये दोनों भाई एक ही कमरे में रहा करते थे मगर अब दोनों ने अपने लिये अलग अलग दो कमरे मुकर्रर किये। जिस कमरे में वह विचित्र कोठड़ी थी जिसका हाल ऊपर बराबर लिखा गया है आनन्दसिंह ने अपने कब्जे में रक्खी, उससे कुछ दूर पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह का दूसरा कमरा था॥
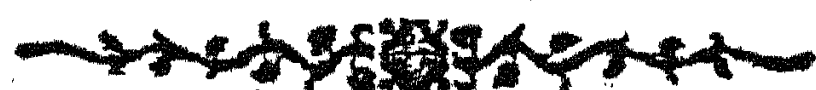
पन्द्रहवां बयान ।

आधी रात से ज्यादे जा चुकी है गयाजी में हर मुहल्ले के चौकीदार "जागते रहियो, होशियार रहियो" कह कह कर इधर से उधर उधर से इधर घूम रहे हैं। रात अन्धेरी है, चारों तरफ अन्धेरा छाया हुआ है, यहां मुख्य स्थान "विष्णु पादुका" है उसके चारों तरफ की आबादी बहुत घनी है मगर इस समय हम इस गुंजान आबादी में न जाकर उस मुख्तसर आबादी की तरफ चलते हैं जो शहर के उत्तर रामशिला पहाड़ के नीचे आबाद है और जहां के कुल मकान कच्चे और खपड़े की छावनी के हैं। इसी आबादी में से दो आदमी स्याह कम्बल ओढ़े बाहर निकले और फलगू की तरफ रवाना हुए॥

रामशिला पहाड़ के पूरब फलगू नदी के बीचोबीच में एक बड़ा भयानक ऊँचा टीला है उस टीले पर किसी महात्मा की समाधि है और उसी जगह पत्थर की मजबूत बनी हुई कुटी में एक साधू भी रहते हैं। उस समाधि और कुटी के चारों तरफ बैर, मकोइचे, धौ इत्यादि जङ्गली पेड़ों से बड़ा ही गुँजान हो रहा है और वहां जमीन पर पड़ी हुई हड्डियों की यह कैफियत है कि बिना उसपर पैर रक्खे कोई आदमी समाधि या उस कुंटी तक जा ही नहीं सकता, छोटी बड़ी साबूत और टूटी सैकड़ों तरह की खोपड़ियां इधर से उधर

लुड़क रही हैं। न मालूम कब और क्योंकर इतनी हड्डियां चारों तरफ जमा हो गईं। उस आबादी से निकले हुए दोनों आदमी इसी टीले की तरफ जा रहे हैं॥

कोई साधारण आदमी ऐसी अन्धेरी रात में उस टीले की तरफ जा रहे हैं॥

कोई साधारण आदमी ऐसी अन्धेरी रात में उस टीले की तरफ जाने का साहस कभी नहीं कर सकता, मगर ये दोनों बिना किसी तरह की रोशनी साथ लिये अन्धेरे में हड्डियों पर पैर रखते और कँटीली झाड़ियों में से घुसते जा रहे हैं आखिर ये दोनों कुटी के पास जा पहुंचे और दर्वाजे पर खड़े होकर एक ने ताली बजाई॥

भीतर से०। कौन है?

एक०। किवाड़ खोलो॥

भीतर से०। क्यों किवाड़ खोलें?

एक०। काम है॥

भीतर से०। तुम लोग हमें व्यर्थ तंग करते हो॥

साधू ने उठकर किवाड़ खोला और वे दोनों अन्दर जाकर एक तरफ बैठ गए, भीतर धूनी के जगने से कुटी अच्छी तरह गर्म हो रही थी इसलिये उन दोनों ने कम्बल उतार कर रख दिया अब मालूम हुआ कि ये दोनों औरत हैं और साथ ही उसके यह भी देखने में आ गया कि एक औरत की दाहिनी कलाई कटी हुई है जिसपर वह कपड़ा लपेटे हुए है। एक औरत तो

चुपचाप बैठी रही मगर बाबाजी से दूसरी औरत जिस की कलाई कटी हुई थी यों बातचीत करने लगी:—

औरत०। कहिये आपने कुछ सोचा?

बाबाजी०। जो काम मेरे किये हो ही नहीं सकता उसके लिये मैं क्या सोचूँ?

औरत०। बेशक आपके किये वह काम हो सकता है क्योंकि वह आपको गुरू के समान मानती है॥

साधू०। गुरू के समान मानती है तो क्या मेरे कहने से वह अपनी जान दे देगी? तुम लोग भी क्या अन्धेर करती हो!!

औरत०। इसमें जान देने की क्या जरूरत है?

साधू०। तो तुम क्या चाहती हो?

औरत०। बस इतना ही कि वह उस मकान को छोड़ दे॥

साधू०। उस बेचारी ने किसी को दुःख तो दिया नहीं, फिर उसके पीछे क्यों पड़ी हो?

औरत०। क्या उसने मुझे और मेरे आदमियों को धोखा नहीं दिया?

साधू०। तुम अपना राज्य दूसरे को देकर आप भाग गईं अब तो वह मालिक है इसलिये वे लोग उसीके नौकर गिने जायँगे॥

औरत०। मैं अपना राज्य फिर अपने कब्जे में किया चाहती हूं॥

साधू०। जो तुमसे हो सके करो मैं किसी तरह की

मदद नहीं दे सकता । तुम लड़कपन से मुझे जानती है। तुम्हारे पिता तुमको गोद में लेकर यहां आया करते थे कभी मैं किसी के भले बुरे का साथी नहीं हुआ॥

औरत० । जो हो मगर अब आपको वह करना पड़ैगा जो मैं कहती हूं और याद रखिये अगर आप इन्कार करेंगे तो इसका नतीजा अच्छा न होगा, मैं साधू और महात्मा समझ कर छोड़ न दूंगी॥

साधू० ।(कुछ देर तक सोचने के बाद) अच्छा आज-भर तुम मुझे और मोहलत दो कल इसी समय यहां आना॥

औरत० । खैर एक दिन और सही॥

ये दोनों औरतें वहां से उठ कर रवाना हुईं । न मालूम कब से एक आदमी कुटी के पीछे छिपा हुआ था जो इस समय नजर बचाकर उन दोनों के पीछे पीछे तब तक चला ही गया जब तक वे दोनों आबादी में पहुंच कर अपने मकान के अन्दर न घुस गईं । जब उन दोनों औरतों ने मकान के अन्दर जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया जो खुला छोड़ गई थीं, तब वह आदमी वहां से लौटा और फिर उसी कुटी में पहुंचा जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं । कुटी का दर्वाजा खुला हुआ था और साधू बेचारे उसी तरह बैठे कुछ सोच रहे थे। वह आदमी कुटी के अन्दर बेधड़क चला गया और दण्डवत करके एक किनारे बैठ गया॥

साधू० । कहिये देवीसिंह जी आप आ गए?

देवी०। (हाथ जोड़ कर) जी महाराज, मैं तभी से यहां हूं जब वे दोनों यहां आई भी न थीं, अब उन दोनें को उनके घर पहुंचा कर लौटा आता हूं॥

साधू०। हां!!

देवी०। जी हां, आपने बड़ी कृपा की जो उसका हाल मुझे बता दिया कई दिनों से हमलोग हैरान हो रहे थे, क्या कहूं आपकी आज्ञा न हुई नहीं तो इसी जगह मैं उन दोनों को अपने कब्जे में कर लेता॥

साधू०। नहीं भैया! ऐसा करने से यह हमारे गुरू की कुटिया बदनाम होती, अब तुमने उसका घर देख ही लिया है सब काम बना लोगे। बीरेन्द्रसिंह बड़े प्रतापी और धर्मात्मा राजा हैं ऐसे को कभी कोई सता नहीं सकता। देखो इस दुष्टा माधवी ने अपनी चालचलन को कैसा खराब किया और प्रजा को कितना दुःख दिया, आखिर उसी की सजा भोग भी रही है। अच्छा अब जाओ ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे, बीरेन्द्रसिंह से हमारा आशीर्वाद कहना, अहा! कैसा भक्त, धर्मात्मा और नीति पर चलने वाला राजा है॥

देवी०। अच्छा तो अब मुझे आज्ञा है न?

साधू०। हां जाओ मगर देखो मैं तुम्हें पहिले भी कह चुका हूं और अब भी कहता हूं कि माधवी को जान से मत मारना और बेचारी कामिनी पर दया रखना, मैं उसे अपनी ही पुत्री जानता हूं। बीरेन्द्रसिंह से कह देना कि वह कामिनी को अपनी लड़की समझें

और आनन्दसिंह के साथ उसका सम्बन्ध करने में कुछ सोच विचार न करें क्या हुआ अगर उसका बाप आप के सामने खड़ा होने लायक नहीं है॥

देवी०। (हाथ जोड़ कर) बहुत अच्छा मैं कह दूँगा, राजा बीरेन्द्रसिंह कदापि आपकी आज्ञा न टालेंगे। एक दफे मैं फिर आपकी सेवा में आऊँगा॥

साधू०। नहीं अब मुझसे मुलाकात न होगी, मैं आज ही इस कुटी को छोड़ दूंगा, हां ईश्वर चाहेगा तो मैं एक दिन स्वयं तुम लोगों से मिलूंगा॥

देवी०। जैसी आज्ञा॥

साधू०। हां बस अब तुम जाओ यहां मत अटको॥

पाठक सोचते होंगे कि देवीसिंह तो बीरेन्द्रसिंह के साथ चुनार चले गए थे यहां कैसे पहुंचे! मगर नहीं लोगों के जानने में बीरेन्द्रसिंह देवीसिंह को अपने साथ ले गए थे परन्तु ऐसा न था, बीरेन्द्रसिंह की गुप्त नीति साधारण नहीं है॥
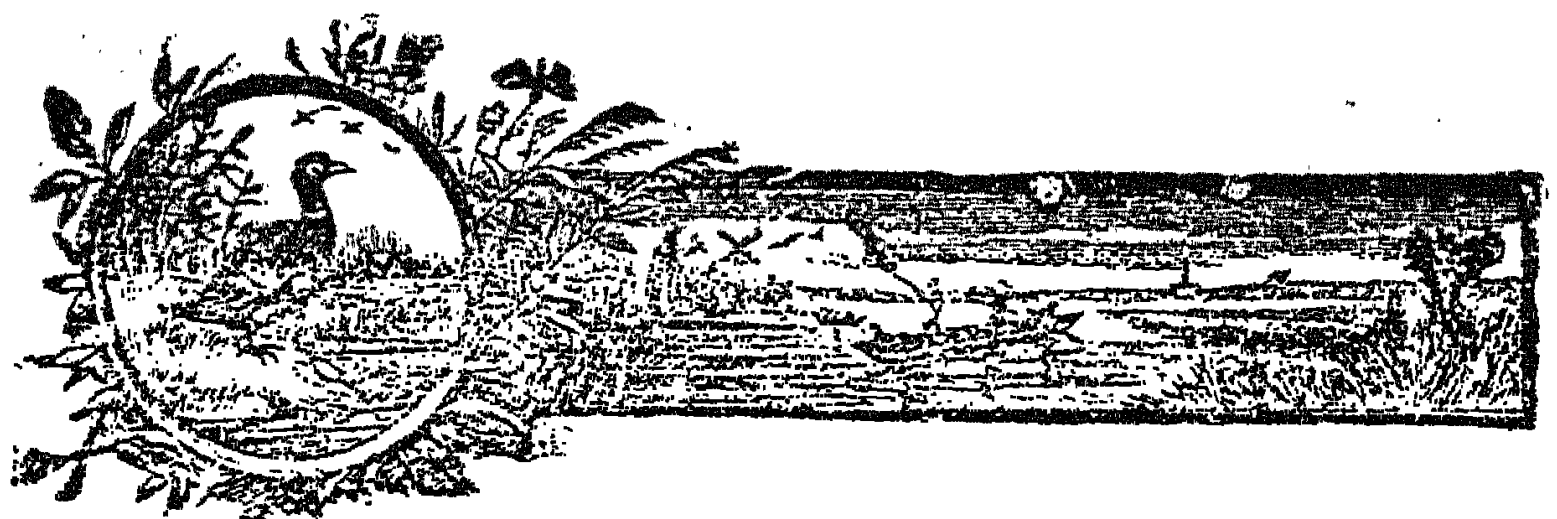
सोलहवां बयान।

राजा बीरेन्द्रसिंह के चुनार चले जाने के बाद दोनों भाइयों को अपनी अपनी फिक्र पैदा हुई। कुंअर आनन्दसिंह किन्नरी की फिक्र में पड़े और कुंअर इन्द्रजीत सिंह को राजगृही की फिक्र पैदा हुई। राजगृही का फतह कर लेना उनके लिये एक अदना काम था मगर इस विचार से कि किशोरी वहां फँसी हुई है हमें सताने के लिये अग्निदत्त उसे तकलीफ न दे, धावा करने का जल्दी साहस नहीं कर सकते थे। जिस समय से यह आजाद हुए अर्थात् बीरेन्द्रसिंह के मौजूद रहने का खयाल जाता रहा उसी समय से किशोरी की मुहब्बत ने जोर बांधा और तरद्दुद के साथ मिली हुई बेचैनी बढ़ने लगी आखिर अपने मित्र भैरोसिंह से बोले कि अब मैं बिना राजगृही गए नहीं रह सकता, जिस जगह हमारे देखते देखते बेचारी किशोरी हमलोगों से छीन ली गई उस जगह अर्थात् उस अमलदारी को बिना तहस नहस किये और किशोरी को पाये मेरा जी ठिकाने नहीं होगा और न मुझे दुनिया की कोई चीज़ भली मालूम होगी॥

भैरो०। आपका कहना ठीक है मगर आप अकेले वहां क्या करेंगे?

इन्द्र०। दुष्ट अग्निदत्त के लिए मैं अकेला ही बहुत हूं॥

भैरो० । अग्निदत्त के लिए आप अकेले बहुत हैं मगर शहर के लिए नहीं ॥

इन्द्र० । शहर भर से मुझे कोई मतलब नहीं ॥

भैरो० । आखिर शहर वाले उसकी तरफदारी करेंगे या नहीं ॥

इन्द्र० । इसका अन्दाज तो गयाजी पर कब्जा करने ही से तुम्हें मालूम हो गया होगा ॥

भैरो० । ठीक है मगर अपनी तरफ से मजबूती रखना मुनासिब है ॥

इन्द्र० । अच्छा तो मैं आनन्द को समझा दूंगा कि फलाने दिन एक सर्दार को थोड़ी फौज देकर हमारी मदद के लिए भेज देना ॥

भैरो० । हां यह हो सकता है मगर उत्तम तो यही था कि दो चार दिन और ठहर जाते तब तक मैं राजगृही से घूम आता ॥

इन्द्र० । नहीं अब इस किस्म की नसीहत सुनने लायक मैं नहीं रहा ॥

भैरो० । (कुछ देर सोच कर) खैर जैसी आप की मर्जी ॥

शाम के वक्त दोनों भाई घोड़ों पर सवार हो अपने दोनों ऐयारों और बहुत से मुसाहबों और सर्दारों को साथ ले शहर में घूमने और हवा खाने के लिये बाहर निकले । कायदे के मुताबिक सर्दार और मुसाहब लोग अपने घोड़े उन दोनों भाइयों के घोड़ों से लगभग पचास

कदम के पीछे लिये जाते थे, जब इन्द्रजीतसिंह या आनन्दसिंह घूमकर उनकी तरफ देखते तब वे लोग झट आगे बढ़ जाते और बात सुनकर फिर पीछे हट जाते। हां दोनों ऐयार घोड़ों की रकाब थामे पैदल साथ साथ जा रहे थे। जब वे दोनों भाई घूमने के लिये बाहर निकलते तब शहर के मर्द औरत बल्कि छोटे छोटे बच्चे भी इनको देखकर खुश होते थे, जिसके मुंह से सुनिये यही आवाज निकलती थी कि ईश्वर ने हमलोगों की सुन ली जो ऐसे राजकुमारों का चरण यहां आया और उस खुदगरज नमकहराम बेईमान का साया हमारे सर से हटा॥

जब घूमते हुए ये दोनों भाई शहर के बाहर हुए तब इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "मैं किसी काम के लिये भैरोसिंह को साथ लेकर राजगृही जाता हूं आज के ठीक आठवें दिन अर्थात् रविवार को किसी सर्दार के साथ थोड़ी फौज हमारी मदद को भेज देना॥"

आनन्द०। (थोड़ी देर चुप रहने बाद) जो हुक्म मगर............

इन्द्र०। तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो मैं अपने को हर तरह से सम्हाले रहूंगा॥

आनन्द०। ठीक है, लेकिन............

इन्द्र०। गयाजी में पहुंचने ही से तुम्हें मालूम हो गया होगा कि माधवी की रिआया हमारे खिलाफ न होगी॥

आनन्द० । ईश्वर करे ऐसा ही हो परन्तु........

इन्द्रजीत० । अबतक तुम्हारी फौज वहां न पहुंच जायगी, हम लोगों को जोकुछ करना होगा छिप कर करेंगे ॥

आनन्द० । ऐसा करने पर भी...........

इन्द्र० । खैर जोकुछ तुम्हें कहना हो साफ २ कहो ॥

आनन्द० । आपका अकेले जाना मुनासिब नहीं, दुश्मन के घर में जाकर अपने को सम्हाले रहना भी कठिन है, राजा की मौजूदगी में रिआया को हर तरह उसका डर बना ही रहता है, आप दुश्मन के घर में किसी तरह निश्चिन्त नहीं रह सकते और आपके इस तरह चले जाने बाद मेरा जी यहां कभी नहीं लग सकता ॥

राजगृही जाने पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह कैसे ही मुस्तैद क्यों न हों लेकिन छोटे भाई की आखिरी बात ने उन्हें हर तरह मजबूर कर दिया, कुंअर इन्द्रजीतसिंह बड़े ही समझदार और बुद्धिमान थे मगर मुहब्बत का भूत जब किसी के सर पर सवार होता है तो वह पहिले उसकी बुद्धि ही को बिगाड़ता है, इसके पीछे धन, सम्पत्ति, मर्यादा, लोकलाज और धर्म की मिट्टी पलीद करता है ॥

छोटे भाई की बात सुन इन्द्रजीतसिंह ने भैरोसिंह की तरफ देखा ॥

भैरो० । मैं भी यही चाहता था कि आप दो चार

रोज यहां और सब्र करें और तब तक मुझे राजगृही से घूम आने दें ॥

आनन्द० । (भैरोसिंह की तरफ देखकर) वादा कर जाओ कि तुम कब लौटोगे ?

भैरोसिंह० । मैं चार दिन के अन्दर ही यहां पहुंच जाऊंगा ॥

आनन्द० । (बड़े भाई की तरफ देखकर) यदि आज्ञा होजाय तो ये इधरही से चले जायँ, घर जाने की जरूरत ही क्या है ?

भैरो० । मैं तैयार हूं ॥

इन्द्र० । घर जाकर अपना सामान तो इन्हें दुरुस्त करना ही होगा, हां मुझसे चाहें इसी समय बिदा हो जायँ ॥
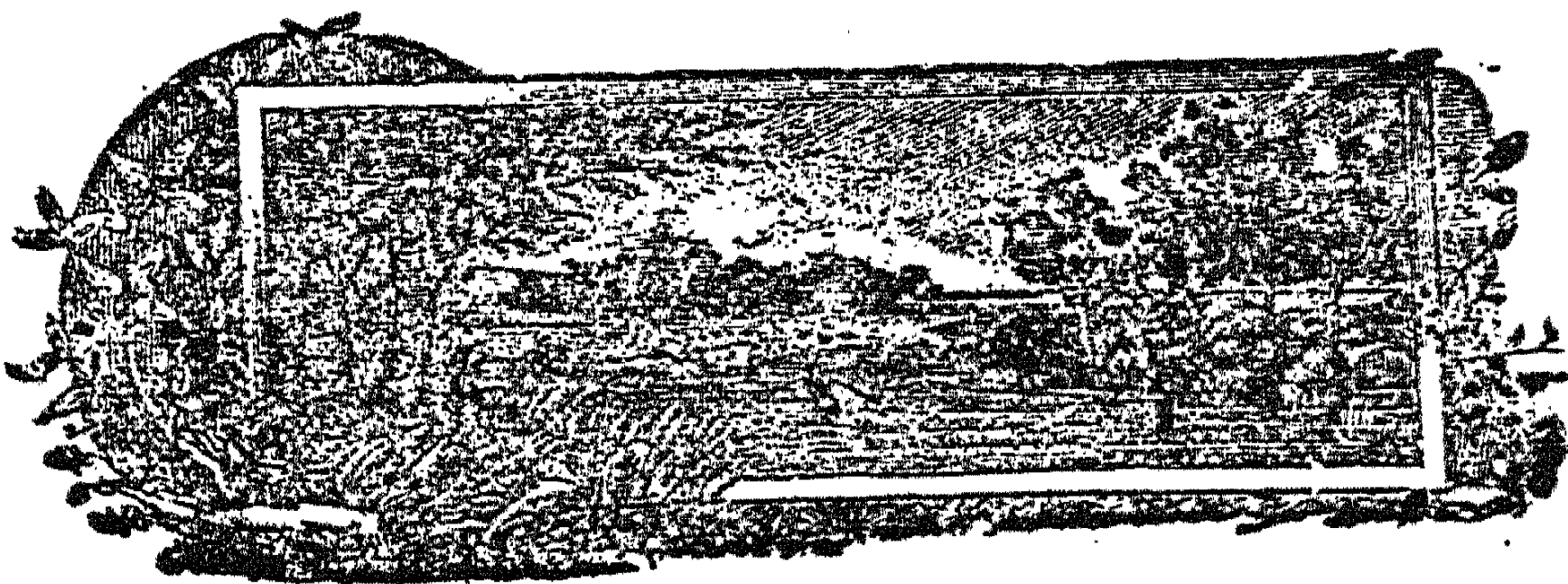
सत्रहवां बयान ।

भैरोसिंह को राजगृही गए आज तीसरा दिन है वहां का हालचाल अभी तक कुछ भी मालूम नहीं हुआ इसी सोच में आधी रात के समय अपने कमरे में पलङ्ग पर लेटे हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह को नींद नहीं आती, किशोरी की खयाली तस्वीर उनकी आंखों के सामने आ आ कर गायब हो जाती है जिससे उन्हें और भी दु:ख होता है, घबड़ा कर लम्बी सांस लेकर उठ बैठते हैं । कभी कभी जब बेचैनी बढ़ जाती है तो पलङ्ग को छोड़ कमरे में टहलने लगते हैं ॥

इसी हालत में इन्द्रजीतसिंह कमरे के अन्दर टहल रहे थे, इतने में एक पहरे के सिपाही ने अन्दर की तरफ झांककर देखा और इनको टहलते देख हट गया, थोड़ी देर बाद वह दर्वाजे के पास इस उम्मीद में आकर खड़ा हो गया कि कुमार उसकी तरफ देख कर पूछें तो वह कुछ कहे मगर कुमार तो अपने ध्यान में डूबे हुए हैं उन्हें खबर ही क्या है कि कोई उनकी तरफ झांक रहा है या इस उम्मीद में खड़ा है कि वे उसकी तरफ देखें और कुछ पूछें । आखिर उस सिपाही ने जान बूझ कर किवाड़ का एक पल्ला इस ढब से खोला कि कुछ आवाज हुई, साथही कुमार ने घूमकर उसकी तरफ देखा और इशारे से पूछा कि क्या है ?

राजा सुरेन्द्रसिंह, बीरेन्द्रसिंह, इन्द्रजीतसिंह और

आनन्दसिंह का बराबर के लिये हुक्म था कि मौका न होने पर चाहे किसी की इत्तला न की जाय मगर जब कोई ऐयार आवे और कहे कि मैं ऐयार हूं और इसी समय मिलना चाहता हूं तो चाहे कैसाही बेमौका क्यों न हो हम तक उसकी इत्तला जरूर पहुंचानी चाहिये। अपने घर के ऐयारों के लिये तो कोई रोक टोक थीही नहीं चाहे वे कुसमय महल में घुस जायँ, जहां चाहें वहां पहुंचें, महल में उनकी खातिर और उनका लिहाज ठीक उतना ही किया जाता था जितना पन्द्रह वर्ष के लड़के का किया जाता और इसी का ठीक नमूना ऐयार लोग भी दिखलाते थे॥

सिपाही ने हाथ जोड़ के कहा कि एक ऐयार हाजिर हुआ है और इसी वक्त कुछ अर्ज किया चाहता है। कुमार ने कहा, रोशनी तेज करदो और उसे अभी यहां लाओ। थोड़ी ही देर में चुस्त स्याह मखमल की पोशाक पहिरे कमर में खंजर लगाए हाथ में कमन्द लिये एक खूबसूरत लड़का कमरे में आ मौजूद हुआ॥

इन्द्रजीतसिंह ने गौर से उसकी तरफ देखा, साथ ही उनके चेहरे की रङ्गत बदल गई। जो अभी उदास मालूम होता था खुशी से दमकता हुआ दिखाई देने लगा॥

इन्द्र०। मैं तुम्हें पहिचान गया॥

लड़का०। क्यों न पहिचानेंगे जबकि आपके यहां एक से एक बढ़कर ऐयार हैं और दिन रात उनका सङ्ग

है मगर इस समय मैंने भी अपनी सूरत अच्छी तरह नहीं बदली है ॥

इन्द्रजीत० । कमला ! पहिले यह कहो कि किशोरी कहां और किस हालत में है, अग्निदत्त के हाथ से छुट्टी मिली या नहीं ?

कमला० । अग्निदत्त को अब उसकी खबर नहीं है ॥

इन्द्र० । इधर आओ हमारे पास बैठो और खुलासा कहो कि क्या हुआ, मैं तो इस लायक नहीं कि अपना मुंह उन्हें दिखाऊं क्योंकि मेरे किये कुछ भी न हो सका ॥

कमला० । (बैठकर) आप ऐसा खयाल न करें आप ने बहुत कुछ किया, अपनी जान देने को तैयार होगए और महीनों दुःख झेला, आपके ऐयार लोग अभी तक राजगृही में इस मुस्तैदी से काम कर रहे हैं कि अगर उन्हें यह मालूम हो जाता कि किशोरी यहां नहीं है तो उस राज्य का नाम निशान मिटा देते ॥

इन्द्र० । मैंने भी इसी सोच से उस तरफ जोर नहीं दिया कि कहीं अग्निदत्त के हाथ फँसी हुई बेचारी किशोरी पर कुछ आफत न आवे, हां तो अब किशोरी वहां नहीं है ?

कमला० । नहीं ॥

इन्द्र० । कहां है और किसके कब्जे में है ?

कम० । इस समय वह खुदमुख़्तार है, सिवाय लज्जा के उसे और किसी का डर नहीं है ॥

इन्द्रजीत० । जल्द बताओ वह कहां है ? मेरा जी

घबड़ा रहा है॥

कमला०। वह इसी शहर में हैं मगर अभी आप से मिलना नहीं चाहतीं॥

इन्द्र०। (आंखों में आंसू भर कर) बस तो मुझे मालूम हो गया उन्हें मेरी तरफ से रंज है, मेरे किये कुछ न हो सका इसका उन्हें दुःख है॥

कमला०। नहीं नहीं, ऐसा भूल के भी न सोचिये॥

इन्द्र०। तो फिर मैं उनसे क्यों नहीं मिल सकता!!

कमला०। (कुछ सोच कर) मिल क्यों नहीं सकते मगर इस समय..........

इन्द्र०। क्या तुमको मुझ पर दया नहीं आती! अफसोस! तुम बिल्कुल नहीं जानतीं कि तुम्हारी बातें सुन कर इस समय मेरी दशा कैसी हो रही है, जब खुद कह रही हो कि वह स्वतन्त्र हैं, किसी के दबाव में नहीं है और इसी शहर में है तो मुझसे न मिलने का कारण ही क्या है? बस यही कि मैं उस लायक नहीं समझा जाता!!

कमला०। फिर भी आप उसी खयाल को मजबूत करते हैं, खैर चलिये मैं आपको ले चलती हूं जो होगा देखा जायगा मगर अपने साथ किसी ऐयार को लेते चलिये, भैरोसिंह तो यहां हैं नहीं आपने उन्हें राजगृही भेज दिया है॥

इन्द्र०। क्या हर्ज है तारासिंह को साथ ले चलता हूं। भैरोसिंह के जाने की खबर तुम्हें क्योंकर मिली?

कमला० । मैं बखूबी जानती हूं बल्कि उनसे मिल कर मैंने कह दिया कि किशोरी राजगृही में नहीं है तुम बेखौफ अपना काम करना ॥

इन्द्र० । अगर तुमने ऐसा कह दिया है तो राजगृही में वह बड़ा ही बखेड़ा मचावेगा ॥

कमला० । मचाना ही चाहिये ॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उसी समय तारासिंह को बुलवाया और उन्हें साथ ले कपड़े पहिन कमला के साथ किशोरी से मिलने की खुशी में बड़े बड़े कदम बढ़ाते रवाना हुए ॥

शहर ही शहर बहुत सी गलियों में घुमाती हुई इन दोनों को साथ लिये कमला बहुत दूर चली गई और विष्णु पादुका मन्दिर के पास ही एक मकान के मोड़ पर पहुंच कर खड़ी हो गई ॥

इन्द्र० । क्यों क्या हुआ ?

कमला० । बस हमलोगों को इसी मकान में चलना है ॥

इन्द्र० । तो चलो ॥

कमला० । इस मकान के दर्वाजे के सामने ही एक भारी जिमींदार की बैठक है वहां दिन रात पहरा पड़ता है, इधर से आप लोगों का जाना और यह जाहिर करना कि आज इस मकान में दो आदमी नये घुसे हैं मुनासिब नहीं ॥

तारा० । फिर क्या करना चाहिये ?

कमला०। मैं दर्वाजे की तरफ से जाती हूं आप लोग इधर ही से कमन्द लगा कर मकान के अन्दर पहुंचिये ॥

इन्द्र०। क्या हर्ज है ऐसाही होगा तुम दर्वाजे की राह से जाओ ॥

कमला०। मगर एक बात और सुन लीजिये, जब मैं इस मकान में पहुंच कर छत पर से झांकूं तब आप कमन्द फेंकिये क्योंकि बिना मेरी मदद के कमन्द अड़ न सकेगी ॥

अठारहवां बयान।

मकान के अन्दर कमला, इन्द्रजीतसिंह और तारासिंह के पहुंचने के पहिले ही हम अपने पाठकों को उस मकान में ले चलकर वहां की कुछ कैफियत दिखलाते हैं ॥

इस मकान के अन्दर छोटी छोटी न मालूम कितनी कोठड़ियां हैं इससे कोई मतलब नहीं, हम उस दालान के पास जाकर खड़े होते हैं जिसके दोनों तरफ दो कोठड़ियां और आमने सामने एक लम्बा चौड़ा सहन है, इस दालान में किसी तरह की सजावट नहीं सिर्फ एक दरी बिछी हुई है, खूँटियों पर कुछ कपड़े लटक रहे हैं, आधी रात का समय होने पर भी इस मकान में चिराग

की रोशनी नहीं है। यह दालान ऊपर के दर्जे में है उसके ऊपर कोई इमारत नहीं, सामनेका सहन बिल्कुल खुला हुआ है चन्द्रमा की फैली हुई सुपेद चांदनी सहन से चमकती हुई धीरे धीरे दालान में जा रही है जिसकी रोशनी उस दालान की हर एक चीजों को दिखाने के लिए काफी है। एक तरफ की कोठड़ी तो बन्द है मगर दूसरी बगल वाली कोठड़ी का दर्वाजा खुला हुआ है, यह कोठड़ी बहुत बड़ी नहीं है तो भी सुपेद फर्श के ऊपर चारपाइयां तीन तरफ बिछी हुई हैं, बीच में फर्श पर दो औरतें बैठी हुई धीरे धीरे बातें कर रही हैं॥

हमारे पाठक इन दोनों औरतों को बखूबी पहिचानते हैं इनमें से एक तो किशोरी और दूसरी वही किन्नरी है जिसपर कुंअर आनन्दसिंह रीझे हुए हैं, जो कई दफे आनन्दसिंह के कमरे में कोठड़ी के अन्दर से निकल अपनी चितवनों से उन्हें घायल कर चुकी है और साथ ही आप भी आशिक हो चुकी है॥

किशोरी०। बहिन तुमने जो कुछ मेरे साथ नेकी की है उसे मैं किसी तरह भूल नहीं सकती मुझसे यह कभी न होगा कि तुम्हें ऐसी हालत में छोड़ इन्द्रजीतसिंह के पास चली जाऊँ॥

किन्नरी०। फिर क्या किया जाय! किस तरह उम्मीद हो कि मुझे कोई पूछेगा?

किशोरी०। कमला ने मुझसे कसम खाकर कहा है

कि आनन्दसिंह किन्नरी की चाह में डूबे हुए हैं, इसे भी जाने दो आखिर तुम्हारा अहसान कुछ उनके ऊपर है या नहीं ? इतने बदमाशों को जो यहां फसाद मचा रहे थे सिवाय तुम्हारे कौन मार सकता था ?

किन्नरी० । खैर जो होगा देखा जायगा अब तो यह सोचना चाहिये कि हमलोग कहां जायँ और क्या करें !!

किशोरी० । कमला आ जाय तो उससे राय मिला कर जो मुनासिब मालूम हो किया जाय । ओफ ! यहां बैठे बैठे जी घबड़ा गया है चलो बाहर चलें, चांदनी खूब निकली हुई है ॥

दोनों औरतें कोठड़ी के बाहर निकलीं और सहन में आकर टहलने लगीं, मौसिम के मुताबिक कुछ सर्दी पड़ रही थी इसलिये दोनों ज्यादे देर तक सहन में टहल न सकीं, दालान में आकर दरी पर बैठ गईं और बातचीत करने लगी ॥

इस मकान के बगल में एक छोटा सा नजर बाग था मगर उसकी हालत ऐसी खराब हो रही थी कि उसे नजरबाग की जगह खण्डहर या जङ्गल ही कहना मुनासिब है, नजरबाग में जाने के लिये इस मकान से एक रास्ता था बाकी चारों तरफ उसके ऊँची ऊँची दीवारें थीं । इस मकान में बिना मदद भीतर वाले के कोई कमन्द लगाकर चढ़ नहीं सकता था क्योंकि इसके ऊपर की दीवारें इस खूबी से बनी हुई थीं कि किसी तरह

कमन्द अड़ नहीं सकती थी, हां अगर कोई चाहे तो कमन्द के जरिये उस नजरबाग में जा सकता था मगर इस मकान में आने के लिये वहां से भी वही दिक्कत होती ॥

थोड़ी देर तक किन्नरी और किशोरी बातें करती रहीं, इसके बाद नीचे से किवाड़ खटखटाने की आवाज आई, किशोरी ने कहा, "लो बहिन ! कमला भी आ पहुंची ॥"

किन्नरी० । खटखटाने के अन्दाज से तो मालूम होता है कि कमला ही है मगर तो भी खिड़की से झांक के मामूली सवाल कर लेना मुनासिब है ॥

किशोरी० । ऐसा जरूर करना चाहिये क्योंकि हम लोगों को धोखा देने के लिये दुश्मन लोग पचासों रङ्ग लाया करते हैं ॥

"तुम ठहरो मैं खुद पूछती हूं ।" इतना कह कर किशोरी ने दरवाजे की तरफ खिड़की में से झांक कर पूछा, "गिनती पूरी हुई ?" इसके जवाब में किसी ने कहा, "हां पचासी तक ॥"

किशोरी० । अच्छा मैं नीचे आकर दरवाजा खोलती हूं ॥

दरवाजा खोलने के लिये खुशी खुशी किशोरी नीचे उतरी मगर चौखट के पास पहुंचने से पहिले ही नीचे के अन्धेरे दालान में एक मोटे और कद्दावर आदमी को खड़ा देख डर के मारे चिल्ला उठी और उस

समय एक चीख मार कर बिल्कुल ही बेहोश हो गई जब वह शैतान इस बेचारी की तरफ झपटा और हाथ या कमर पकड़ कर बेदर्दी के साथ अपनी तरफ खैंच ले चला ॥

किशोरी के चिल्लाने की आवाज सुनते ही हाथ में नङ्गी तलवार लिये किन्नरी धड़धड़ाती हुई नीचे पहुंची मगर चारों तरफ घूम घूम कर देखने पर भी किसीको न पाया बल्कि किशोरी का भी पता न लगा ॥

किन्नरी दरवाजा खोलना तो भूलगई और किशोरी को न पाने से घबड़ा कर इधर उधर ढूँढने लगी, उस अन्धेरे दालान और भयानक कोठड़ियों में घूमती हुई किन्नरी को इस बात का जरा भी खौफ न मालूम हुआ कि किशोरी की तरह कहीं मुझपर भी आफत न आ जाय ॥

बेचारी किशोरी चीख मार कर बेहोश हो गई मगर जब वह होश में आई अपने को मौत के पंजे में गिरफ़ार पाया, झाड़ियों के बीच में जबर्दस्ती जमीन पर गिराई हुई है, एक आदमी नकाब से अपनी सूरत छिपाये उसकी छाती पर सवार है और खंजर उसके कलेजे के पार किया ही चाहता है ॥

॥ दूसरा हिस्सा समाप्त ॥

रामेश्वर यात्रा।

इसमें चित्रकूट, ओंकार, महाकालेश्वर, गोदावरी, त्र्यम्बकनाथ, द्वारिकाधाम, द्वारिकापुरी, बालाजी, काञ्ची, श्रीरंग इत्यादि तीर्थों की यात्रा का हाल भली प्रकार लिखा गया है, केवल यात्रा ही नहीं वरन इन स्थानों का तथा राह में आते जाते और जो जो प्रसिद्ध स्थान पड़ते हैं उन सभों का हाल भी अच्छी तरह लिखा गया है। कौन शहर कैसा है? वहां किन किन बातों का सुबीता और कौन कौन चीजें देखने योग्य हैं इसे इस पुस्तक के पढ़ने वाले बखूबी जान सकते हैं। यात्रियों को क्योंकर आराम मिल सकता है, किस स्थान में कहां रहने का ठिकाना और किन किन बातों का सुख दुःख है सो बखूबी समझ सकते हैं बल्कि घर बैठे इन स्थानों के भ्रमण का आनन्द इसके पढ़ने से पा सकते हैं॥

मूल्य ।≈) आ०

मँगाने का पता :—

मैनेजर लहरी प्रेस,

बनारस सिटी॥

इस उपन्यास में एक बड़े ही साहसी अंगरेज डाकू के आश्चर्य जनक कामों का हाल लिखा गया है, बड़े ही विचित्र ढंग से और साथ में दबंगता लिये हुए जिस प्रकार वह जगह जगह डाके डाला करता था इसका हाल पढ़ पाठकों को प्रसन्नता होगी तथा पुलिस वालों और उसको पकड़ने की चेष्टा करने वालों का सामना हो जाने पर किस प्रकार वह उनकी आंखों में धूल झोंकता और मौका मिलने पर उनपर हाथ भी साफ करता था इसका हाल जान हँसी आवेगी ॥

मूल्य ॥।) आ०

मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

बनारस सिटी।